सम्पादक :
डा० हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक :
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय :
मासिक सच्चा राही!
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 787250
फैक्स : 787310
e-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि :

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशो में (वार्षिक)	25 US डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ - 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

जुलाई 2002 | वर्ष 1 | अंक 5

इस्लाम का विश्वव्यापी भाईचारा

"इस्लाम के नज़दीक वतन, मक़ाम और रँग व ज़बान का भेद-भाव कोई चीज़ नहीं। रँग व ज़बान के अन्तर को वह एक इलाही निशान ज़रूर मानता है लेकिन उसको वह किसी इन्सानी विभाजन की हद नहीं क़रार देता। इन्सान के तमाम दुन्यावी रिश्ते स्वयं इन्सान के बनाये हुए हैं। असली रिश्ता सिर्फ़ एक है और वह वही है जो इन्सान को उसके ख़ालिक़ (रचयिता) और पालनहार से जोड़ता है, वह एक है, अतः उसको मानने वालों को भी एक होना चाहिए।"

अली मियाँ

विषय सूची

❖	मानवता और राक्षसता	– *सम्पादकीय*	3
❖	शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी	– *इदारा*	4)
❖	कुर्आन की शिक्षा	– *मुहम्मद उवैस नदवी रह०*	5
❖	प्यारे नबी की प्यारी बातें	– *अब्दुल ह़यी ह़सनी रह०*	6
❖	मानवता का सन्देश अभियान	– *अली मियाँ रह०*	8
❖	हज़रत मुहम्मद स० का आचरण	– *मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी*	10
❖	ज़मीर की आवाज़	– *स० सुलैमान नदवी रह०*	14
❖	बेटी की व्यथा	– *श्रीमती अंजनी शर्मा*	15
❖	इस्लाम की राह के कष्टों पर सहाब–ए–किराम का सब्र	– *हबीबुल्लाह आज़मी*	16
❖	सुवाल व जवाब	– *(एक हदीस शरीफ़ का अनुवाद)*	18
❖	हलाल कमाई	– *फ़ज़्ले रहमान*	19
❖	अज़ान क्या है ?	– *अली मियाँ रह०*	20
❖	घरेलू जीवन ही अस्ल जीवन है	– *मुस्तफ़ा सबाअी*	21
❖	भूत क्या है ?	– *इदारा*	23
❖	विवाहित जीवन और दीनी हिदायत	– *स० मुश्ताक़ अली नदवी*	24
❖	सामूहिक जीवन और उसके तकाज़े	– *मुहम्मदुल हसनी*	27
❖	लद्दाख़ में इस्लाम एक दृष्टि में	– *अब्दुल ग़नी शैख़ लद्दाखी*	29
❖	ज़मज़म का पानी और उसके लाभ	– *मु० शमीम अख़्तर*	31
❖	नक्ल	– *डा० सूरज मृदुल*	31
❖	चाकलेट	– *डा० इन्द्र मोहन झा*	32
❖	दांतों का शत्रु	– *डा० इन्द्र मोहन झा*	33
❖	अमरीका में मानवता और संस्कृति विघटन	– *मुसअ़ब उ़समान कुरैशी*	34
❖	मदीने की गलियाँ	– *आसी फ़ैज़ाबादी*	35
❖	शिक्षा संस्थाओं की जिम्मेदारियाँ	– *अली मियाँ रह०*	36
❖	समूद की उँटनी	– *स० अहमद अ़ली नदवी*	37
❖	अंतर्राष्ट्रीय समाचार	– *मुईद अशरफ़ नदवी*	40

❐❐❐

मानवता और राक्षसता

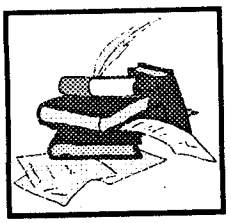

डा० हारुन रशीद सिद्दीक़ी

बिजली से चलने वाली आटा चक्की चल रही थी चक्की मालिक नौजवान रामरूप सिंह का अगौंछा पट्टे में फंस गया जो गले में लिपटा था, करीब था कि रामरूप सिंह का जीवन समाप्त हो जाए कि क़ियामुद्दीन की निगाह उस पर पड़ गयी झट से चक्के पर हाथ रख कर पूरी ताकत से उसे रोका एक शख़्स ने दौड़ क़र बिजली बंद कर दी इतनी देर में क़ियामुद्दीन की एक उंगली जो चक्के और किसी दूसरी चीज के बीच में आ गयी थी पूरी की पूरी कट कर अलग हो गयी, मगर रामरूप सिंह की जान बच गयी। इस घटना पर कई वर्ष बीत गये परन्तु रामरूप सिंह अब भी इस एहसान को याद रखे हुए हैं।

राम लाल यादव की लड़की कुएं से पानी निकाल रही थी, किसी प्रकार पैर फिसल गया और वह कुंए मे जा गिरी शोर–शराबा हुआ, लोग कुंए में झांकने लगे लड़की पानी के भीतर जाती ऊपर आती करीब था कि डूब जाए इफ़्तिख़ार हुसैन कुंए पर पहुंच चुके थे, रस्सी ढूंढ़ी कि काठ में बांध कर कुंए में उतर जाएं और उसकी जान बचाए पर रस्सी न मिली इफ़्तिख़ार हुसैन सीधे गहरे कुएं में कूद गये और लड़की की जान बचा ली, राम लाल यादव ने इस एहसान को हमेशा याद रखा।

विधवा फूलबासा पासिन के घर में आग लग गयी, मई का महीना और दोपहर का समय था, कच्चा घर छप्पर से ढका हुआ था, फूलबासा अपनी बेटी के साथ बाहर निकल आई लेकिन दो साल का बच्चा चारपाई पर सोता छुट गया, दरवाज़ा भी जल रहा था, अन्दर जाने का रास्ता बन्द हो चुका था, ऐसे में फूलबासा का बिलकना और चिल्लाना देखा न जाता था, फूलबासा की कथरी (मोटा बिछौना) एक तरफ पड़ी थी गांव के लोग बाल्टियों से आग पर पानी फेंक रहे थे, रौनक अली ने बदबूदार कथरी पानी में भिगोई सर पर रखा और जलते दरवाज़े में घुस गये बच्चे तक अभी आग न पहुंची थी। रौनक अली ने बच्चे को उठाया, कथरी में छुपाया और झट से बाहर आ गए, फूलबासा ने बच्चे को सीने से लगा लिया और घर जलने का ग़म भुला दिया, वह हर एक से कहती–फिरती कि मेरा बच्चा बच गया मुझे घर जलने का कोई ग़म नहीं है, वह ज़िन्दगी भर रौनक़ अली का एहसान मानती रही।

आख़िर वह कौन सी शक्ति थी जिस ने क़ियामुद्दीन को मजबूर किया कि वह अपने को ख़तरे में डालकर राम रूप की जान बचाएं ? इफ्तिख़ार हुसैन कुएँ में कूद कर एक लड़की को डूबने से बचा ले? रौनक़ अली आग में कूद कर बच्चे को आग के घेरे से उठा लाएँ ? इन सबका एक ही उत्तर है वह शक्ति थी मानवता की जो जात पात से ऊँची हो मानव को संकट में देख कर व्याकुल हो उठती है।

हम मुसलमान हैं, हमारे नज़दीक सत्य यही है कि इस जीवन के पश्चात मनुष्य की आत्मा कर्मानुसार अच्छे या बुरे स्थान पर एक लम्बे काल तक रखी जाएगी, यहां तक कि क़ियामत आएगी और सब कुछ मिट जाएगा केवल अल्लाह रहेगा, फिर एक समय के पश्चात उसके आदेश से सारे मनुष्य जीवित किये जाएंगे अल्लाह की अदालत लगेगी, एक–एक का लेखा–जोखा जांचा जाएगा जिसने अल्लाह के दूतों (पैग़म्बरों) द्वारा लाए आदेश का पालन किया होगा उसको अल्लाह की प्रसन्नता और जन्नत का पुरस्कार मिलेगा और जिसने अल्लाह के दूतों का कहना न माना होगा अर्थात राक्षसंता अपनाई होगी, उसको जहन्नम का दण्ड मिलेगा।

यह भी सत्य है कि अल्लाह ने मनुष्यों के पथ–प्रदर्शन के लिए बहुत से दूत (पैग़म्बर) भेजे हर देश में भेजे हर बस्ती में भेजे और सब के अंत में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा अब क़ियामत तक आपके आज्ञा पालन ही में मोक्ष (नजात) है।

अल्लाह के आदेश से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उपदेशों में मानव सेवा भी है, मानव सेवा मनुष्य की प्रकृति में भी है और हर धर्म का आदेश भी। उपरोक्त उदाहरण इस कथन के प्रमाण तथा मानवता की शक्ति के उदाहरण हैं।

निःसंदेह इस्लाम में जिहाद भी है मगर कब? जब उनको घर से निकाला जाए, जब उनके धार्मिक कार्यों पर रोक लगाई जाए, जब उनसे उनका धर्म छुड़ाया जाए, जब उन पर असहनीय अत्याचार किया जाए, फिर उनमें लड़ने की सकत भी हो, उनका एक उचित नेता भीं हो जिसमें नेतृत्व की योग्यता हो, फिर भी कठोर उपदेश हैं कि बच्चों बूढ़ों पर हाथ न उठाया जाए औरतों को न छेड़ा जाए, खेती न बर्बाद की जाए, आग न लगाई जाए वगैरह अर्थात मानवता की सीमा का उल्लंघन न हो।

किसी की ज़ाती लड़ाई जिहाद नहीं, इसी प्रकार किसी की निजी गलती उसकी अपनी गलती है, उसको इस्लाम से जोड़ना खुद एक बड़ी गलती है और किसी भी धर्म के अनुयायी की निजी गलती का बदला उस धर्म के मानने वाले दूसरे लोगों से लेना बहुत बड़ी गलती है।

रूदौली स्टेशन (फ़ैज़ाबाद) पर बिना कारण एक मुसलमान के पेट में भुजाली उतार दी गयी, हिन्दू–मुसलमान सबने इसको बुरा माना और बुरा कहा, फिर दूसरे दिन सुहावल स्टेशन से पहले चलती गाड़ी से एक मुस्लिम विद्यार्थी को फेंक दिया गया, हर हिन्दू ने उसकी बुराई की न रूदौली में कोई झगड़ा हुआ न सुहावल में हिन्दू–मुस्लिम तनाव हुआ, परन्तु अब तो धर्म की आड़ में नास्तिकता के आक्रमण हैं। बड़ा धर्मी धर्म पर टिक पाएगा। उन दिनों तो राम सेवकों के मस्तिष्क पर भी असुरों का अधिकार था, चाहिए था कि रेलवे पुलिस डिपार्ट चौकस हो जाता परन्तु उसको भी नशा पिला दिया गया। यहां तक कि वह गोधरा स्टेशन पर उसी तरह मस्त रहे, खाया पैसे न दिये मारपीट पर आमादा हुए उधर भी शैतान सामने आया केवल झगड़ने वालों से झगड़ने के बजाए पूरे डिब्बे को आग लगवा दी जिसमें बेगुनाह भी जल गए, गुजरात में यह खबर पहुंची तो वह भी होश खो बैठे और प्रतिक्रिया में वह नंगा नाच नाचा कि राक्षस भी शर्मा गए। इस हंगामे का सबसे दुःखद पहलू बेचारी स्त्रियों और किशोरियों की बेआब्रूई का था, यह सब क्या था ? यह राक्षसता थी जिसको मानव अपमान ही में सुख मिलता है। इस्लाम में खुदकुशी (आत्महत्या) महा पाप है परन्तु प्रश्न आने लगे कि क्या ऐसे अवसरों पर भी स्त्रियों और किशोरियों के लिये स्वयं हत्या की अनुमति नहीं है ?

आप जांच कर के देख सकते हैं। बलात कार्य दो ही प्रकार के लोग करते हैं। एक वह जिन्होंने अपनी बहन–बेटियों को किसी के साथ भी कुकर्म करने की अनुमति दे रखी है, ऐसों को हम दय्यूस (लज्जा हीन) कहते हैं, उनका कठोर दण्ड आख़िरत (परलोक) में है। दूसरे वह जो मुस्तक़बिल (भविष्य) में अपनी बहन–बेटियों के साथ मुंह काला करते देखना चाहता है। वे बलात कार करते समय घमन्ड में होते हैं, वे परिणाम से अचेत हो जाते हैं, परन्तु उन को अपनी आखों अपना अपमान देखना पड़ता है।

इन सारे असुरी अत्याचारों को देखकर यह समझ में आया कि ऐसे अत्याचारियों का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं, ऐसे लोग आस्तिक नहीं कहे जा सकते, मगर क्या किसी के नकार देने और नास्तिक बन जाने से ईश्वर (अल्लाह) का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा? उसकी शक्ति बल में अंतर आ जाएगा ऐसा सोचने वाले उससे डरें।

ईश्वर है, सर्व शक्तिमान है उसके भेदों को कोई पा नहीं सकता, अत्याचारों को तुरंत दण्ड न देने में भी कोई भेद है परन्तु अत्याचारी दंडित हो के रहेंगे, पुराना इतिहास न खोजें अपने बचपन से अब तक के हालात ही में प्रमाण ढूंढ सकते हैं।

□□□

हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रह०

आपका जन्म 470 हि० में गीलान में हुआ। आप हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद की दसवीं पीढ़ी पर है। आप 488 हि० में गीलान से उच्च शिक्षा हेतु बग़दाद आए थे। आप के अहम उस्तादों में अबुल वफ़ा, इब्नि अ़क़ील, मुहम्मद बिन अलहसन बाक़ल्लानी और अबू ज़करीया तबरेज़ी हैं। तरीक़त की शिक्षा शैख़ अबुल खैर हम्माद और क़ाज़ी अबू सईद से प्राप्त की। अल्लाह की राह में आप ने जितना मुजाहदा (श्रम) किया और अल्लाह ने जितनी करामतें आप द्वारा जाहिर कीं कम लोगों का यह हाल रहा। 561 हि० में 90 वर्ष की आयु में देहांत हुआ। आप की क़ब्रे मुबारक बग़दाद में है। आपके वअ़ज़ (भाषण) लोगों ने संकलित किये थे जो अरबी भाषा में छपे थे अब उन का अनुवाद उर्दू में भी आ चुका है। आप की प्रसिद्ध तथा स्वीकृति पाई हुई किताब गुनयतुत्तालिबीन है इसका भी उर्दू में अनुवाद हो चुका है। □□□

क़ुर्आन की शिक्षा

– मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी(रह०)

नमाज़:

व अक़ीमुस्सलात (रूम ३१) (और नमाज़ क़ाइम करो)

इस्लाम की इबादतों में नमाज़ का दर्जा सबसे बढ़ा हुआ है। जब तक मुसलमान के होश–व–हवास दुरूस्त हैं वह नमाज़ नहीं छोड़ सकता है, कुर्आन में उसके लिए बड़ी ताकीद आई है, नमाज़ में सुस्ती और काहिली को निफ़ाक़ और उसके छोड़ देने को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुफ़्र की निशानी बतलाया है, कुर्आन में है कि जो नमाज़ी अपनी नमाज़ में ग़फ़लत (असवाधानी) बरतते हैं उन पर फिटकार हो। (सूर–ए–माऊन), क़ाफ़िरों से पूछा जाएगा कि तुम जहन्नम में क्यों हो? वह कहेंगे कि हम बे नमाज़ी थे। (सूर–ए–मुदस्सिरः ४१, ४२, ४३)

नमाज़ आदमी को बेहयायी से रोकती है (अल–अनकबूतः ४५)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः– नमाज़ मेरी आँखों की ठंडक है (मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल ३:१२८) हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि नमाज़ दीन का खम्बा है, जिसने नमाज़ पढ़ी उसने दीन को काइम किया और जिसने नमाज़ छोड़ दी उसने दीन को ढा दिया, (कश्फ़ुश्शिफ़ा १६२१)

उमर रज़ियल्लु अन्हु को शहीद करने के लिए उन पर खंजर (भुजाली) से हमला किया गय, उस रात की सबुह को फ़ज्र की नमाज़ के लिए उनको जगाया गया तो बोले हां जो शख़्स नमाज़ छोड़ दे इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं है, आपने उसी हालत में नमाज़ पढ़ी। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने क़र्बला में थे, दोस्तों और अज़ीज़ों की लाशें सामने पड़ी हुई थीं, दुश्मन चारों तरफ से घेरे हुए थे, जुह का वक़्त आ गया, आपने दुश्मनों से कहा कि इतना समय दे दो कि मैं जुह की नमाज़ पढ़ सकूं।

एक सहाबी अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे, बाग़ फलों से लदा हुआ था, उनकी नज़र फलों की तरफ उठ गयी, दिल बंट गया, मगर जैसे ही नमाज़ का ख़याल आया तो दिल में शर्मिन्दा हुए कि दुन्या के माल ने उनका दिल अपनी तरफ फेर लिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए, उस वक़्त उन ही की ख़िलाफ़त थी, उनसे कहा कि यह बाग़ जिसने मुझे आज़माइश में डाल दिया है। खुदा की राह में देता हूं।

(मुवत्ता ७४,७५)

मुसलमानों को हुक़्म है कि खुद नमाज़ पढ़ें, अपने बीवी बच्चों को नमाज़ पढ़ने का हुक़्म दें। दिन और रात में पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है, उन वक़्तों के नाम यह है:– फ़ज्र जुह, अस्र, मग़रिब और इशा।

अकेले और घर में नमाज़ पढ़ने के बजाए मर्दों को फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जमाअ़त के साथ पढ़ना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जमाअ़त की नमाज़ की बहुत ताकीद करते थे, उन्होंने फ़रमाया कि "मेरा जी चाहता है कि जो लोग जमाअ़त में नहीं आते हैं, उनके घरों के चारों तरफ लकड़ियाँ जमा करके आग लगा दूं। (बुख़ारीः ६४४)

औरतों को घर ही में नमाज़ पढ़ना अच्छा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : कि बच्चा जब सात वर्ष का हो जाए तो उसको नमाज़ का हुक़्म दो और दस वर्ष का हेा जाए तो नमाज़ छोड़ने पर मारो अर्थात मार की सज़ा दो। (मुसनद इमाम अहमद)

हर अच्छी बुरी आदत उसी ज़माने से शुरू हो जाती है, इसलिए नेकी की यह सब से अच्छी आदत इसी ज़माने से डालना चाहिए ताकि बड़े होकर यह आदत पूरी तरह जम जाए।

इसका ख़याल रखो कि नमाज़ पूरे सुकून और इत्मीनान से पढ़ो, जल्दी न करो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा फ़रमाया कि: "सबसे बड़ा चोर वह है जो नमाज़ की चोरी करता है, सहाबा (रजि०) ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ की चोरी क्या है? उन्होंने फ़रमाया रूकूअ और सजदा अच्छी तरह न करना"

(मुसनद इमाम अहमद ५:३१०)

नमाज़ में इधर–उधर देखना भी नहीं चाहिए। हदीस में है कि "जब बन्दा नमाज़ में इधर–उधर देखता है तो खुदा फरमाता है कि तू किधर देखता है? क्या तेरे नज़दीक मुझसे भी अच्छी कोई चीज़ है? तू मेरी तरफ देख! दूसरी दफ़ा भी खुदा यही फरमाता है, तीसरी दफा जब फिर बन्दा इधर–उधर देखने लगता है तो खुदा उसकी तरफ से अपना मुंह फेर लेता है।" (मुसनद इमाम अहमद)

□□□

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अब्दुल हयी हसनी (रह०)

1. मेहनत व मज़दूरी और हाथ से कमाने की अहमियत :

हज़रत जुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर आए और लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाए और उसको बेचे तो अल्लाह उसकी वजह से ज़रूरत के बक़द्र दे दे, तो यह इसके लिए इससे बेहतर है कि वह लोगों से मांगता फिरे लोगों की खुशी पर निर्भर है दे या न दें।

(बुख़ारी)

2. बड़े–बड़े पैग़म्बर अपने हाथ की कमाई से खाते थे :

हज़रत मिक़दाम बिन मअ़दी करिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : किसी ने इससे बेहतर खाना कभी नहीं खाया कि आदमी अपने हाथ की मेहनत का खाए बेशक़ अल्लाह के नबी दाऊद अ़लैहिस्सलाम अपने हाथ से काम करके खाते थे।

(बुखारी)

3. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ज़करिया (अलै०) बढ़ई का काम करते थे

(मुस्लिम)

4. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उकाज़ मजन्ना और जुलमजाज़ (इन जगहों पर लोग मेला के तौर पर बाज़ार लगाया करत थे) ज़मान–ए–जाहिलियत के बाज़ार थे तो सहाब–ए–किराम (रजि०) ने हज के ज़माने में तिजारत को गुनाह समझा उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई (जिस का तर्जुमा इस तरह है)

" उसका तुमको कोई गुनाह नहीं कि तुम (हज के दिनों में तिजारत के ज़रिए) रिज़क तलाश करो, अपने परवरदिगार से"

हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि तुम लोग सदका करो एक शख़्स ने कहा अल्लाह के रसूल! मेरे पास ऐक ही दीनार है आपने फरमाया उसको अपने ही ऊपर सदका कर लो फिर उसने कहा मेरे पास दूसरा भी है आपने फरमाया उसको अपने लड़के पर सदका कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है आपने फरमाया उसको अपने ख़ादिम (नौकर) पर सदका कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया! तुम अच्छी तरह समझते हो कि इसको कहां खर्च करो।

– अबू दाऊद

5. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे और सअद बिन रबीअ़ के दरमियान भाई–चारा करवाया, तो सअ़द बिन रबीअ ने कहा कि मैं अन्सार में सबसे ज़ियादा मालदार हूं, मैं अपना आधा माल तुमको देता हूं, तुम देखो मेरी दोनों बीवियों में से जिसको चाहो उससे मैं तुम्हारे लिए अलग हो जाऊँ (अर्थात तलाक़ दे दूं) जब इद्दत गुज़र जाए तो तुम उससे निकाह कर लो। हज़रत अब्दुर्रहमान ने फरमाया, मुझको इसकी ज़रूरत नहीं (बस मुझको यह बता दो कि) यहां कोई बाज़ार है जहां ख़रीद व फ़रोख़्त होती है। सअद बिन रबीअ ने कहा! कैनकाअ का बाज़ार है दूसरे दिन हज़रत अब्दुर्रहमान बाज़ार गये और पनीर और घी लाए फिर इसी तरह बराबर सुबह जाते रहे थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि एक दिन आये और उनके कपड़ों पर सुहाग इत्र का असर था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या तुमने शादी कर ली उन्होंने कहा जी हाँ। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा किससे ? उन्होंने जवाब दिया अन्सार की एक लड़की से फिर आप (सल्ला०) ने पूछा! क्या दिया ? (महर), तो उन्होंने अर्ज़ किया खजूर की गुठली के बराबर सोना

दिया है। (अर्थात तीन दरहम) तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वलीमा करो चाहे एक बकरी ही से क्यों न हो।

6. हज़रत अबू बक्र (रजि०) का तिजारत में तकलीफ उठाना :

हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जब हज़रत अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु ने ख़िलाफत का बोझ संभाला तो फरमाया कि मेरी क़ौम को मालूम है कि मेरे पेशे की आमदनी मेरे बाल–बच्चों के रहन–सहन और खाने–पीने के लिए काफी थी अब मैं मुसलमानों के काम में मशगूल हूं, इसलिए अब अबूबक्र के सम्बन्धी इस (सरकारी) माल से खाएंगे (मुसलमानों के नफा के लिए) तिजारत में लगाएंगे। **(बुख़ारी)**

7. बेची जाने वाली चीज़ का ऐब छुपाने की सख़्त मुमानियत :

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) गल्ला के एक ढेर के पास से गुज़रे तो आप (सल्ल०) ने अपना हाथ इस ढेर के अंदर दाखिल कर दिया, तो आप सल्ल० ने इस गल्ला बेचने वाले दुकानदार से फरमाया कि यह तरी और गीलापन कैसा है ? उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह गल्ला पर बारिश की बूंदें पड़ गयी थीं, आप (सल्ल०) ने फरमाया इस भीगे हुए गल्ले को तुमने ढेर के ऊपर क्यों न रहने दिया ताकि खरीदने वाले लोग इसको देख सकतें, जो आदमी धोकाबाज़ी करे वह हम में से नहीं है। **(मुस्लिम)**

8. झूठ से तिजारत की बरक़त का उठना:

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया खरीद व फरोख़्त करने वालों को अख़्तियार है जब तक अलग न हों अगर वह सच बोले तो उनकी सौदागरी में बरकत दी जाएगी, और अगर झूठ बोलेंगे तो उनकी सौदागरी की बरकत हटा दी जाएगी।

9. धोखेबाज़ ताजिर का हश्र खराब होगा:

हज़रत रिफाआ बिन राफेअ रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया कि ताजिर लोग सिवाए उनके जिन्होंने क़ियामत में फाज़िर और बदकार उठाये जाएंगे। **(तिर्मिज़ी)**

10. घर वालों पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत:

हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया तुम अल्लाह के रास्ते में दीनार खर्च करते हो, किसी गरीब पर दीनार खर्च करते हो और अपने अहल–व–अयाल पर खर्च करते हो उनमें सबसे ज़्यादा अज्र तुमको उस पर मिलेगा जो तुम अपने अहल–व–अवाल पर खर्च करते हो। **(बुख़ारी)**

11. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि तुम लोग सदक़ा करो एक शख़्स ने कहा अल्लाह के रसूल! मेरे पास एक ही दीनार है आपने फरमाया उसको अपने ही ऊपर सदका कर लो फिर उसने कहा मेरे पास दूसरा भी है आपने फरमाया उसको अपने लड़के पर सदक़ा कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है आपने फरमाया उसको अपने ख़ादिम (नौकर) पर सदक़ा कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया! तुम अच्छी तरह समझते हो कि इसको कहां खर्च करो। **(अबू दाऊद)**

12. हज़रत हारसा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि बनू उज़रा के एक शख़्स ने अपने एक गुलाम को मुदब्बिर बनाया (अर्थात कहा कि मेरे मरने के बाद तुम आज़ाद हो) रसूलुल्लाहि सल्लाल्लाहुअलैहिवस्सलम को मालूम हुआ। तो आपने उस शख़्स से पूछा कि तुम्हारे पास इसके अलावा भी कोई माल है, उसने कहा नहीं तो, आप (सल्ल०) ने फरमाया: इस गुलाम को मुझ से कौन खरीदता है फिर नईम बिन अब्दुल्लाह अदवी ने उसको आठ सौ दिरहम में खरीद लिया, रसूलुल्लाहि सल्ल० वह आठ सौ दिरहम लेकर उस शख़्स के पास तशरीफ लाए और उसको दे दिया, फिर फरमाया अपने आपसे शुरू करो, पहले अपने ऊपर सदक़ा करो फिर अगर बचता है तो बाल–बच्चों पर सदक़ा करो, बाल–बच्चों से भी बचता है तो, अपने रिश्तेदारों पर खर्च करो, रिश्तेदारों से भी बचता है तो फिर दिल खोलकर जो भी सामने आ जाए उसको दो। **(मुस्लिम)**

13. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) बनू नज़ीर का ख़जूर का बाग़ फ़रोख़्त फ़रमाते और घर वालों पर साल भर का खर्च रोक लेते थे। **(बुख़ारी)**

❑❑❑

- ***हम आपके परामर्शों का, आपके शुक्रिये के साथ स्वागत करेंगे। सच्चा राही आपको कैसा लगा अवश्य लिखें।***
- ***सच्चा राही के ग्राहक बनाकर सहयोग दें।***

(सम्पादक)

मानवता का संदेश अभियान – एक परिचय

– अली मियाँ (रह०)

यह स्वाभाविक बात है कि आदमी अपने घर की बर्बादी नहीं देख सकता जिसमें उसको रहना है और जहाँ उसकी धरती और ज़िन्दगी की पूँजी है, और जिसके बनाने और सँवारने में उसकी और उसके पूर्वजों की क्षमतायें और श्रम व शक्ति ख़र्च हुई हैं। मानव–स्वाभाव का यही तक़ाज़ा मानवता को सन्देश अभियान का उत्प्रेरक बना। मैं राजनीतिक गतिविधियों और अभियानों से बिल्कुल असम्बद्ध रहा हूँ। मेरा तमामतर समय पढ़ने लिखने में और इसी सिलसिले के दूसरे कामों में ख़र्च होता रहा है। लेकिन कोई इन्सान अपने आसपास के हालात से आँखें बन्द नहीं रख सकता। आज़ादी के पहले और बाद के हालात बहुत से दूसरे लोगों की तरह मेरे लिए भी चिन्ता का विषय थे। उन्हीं दिनों मेरा एक लेख "हिन्दुस्तानी समाज की जल्द ख़बर लीजिये" के शीर्षक से निकला था जिसका हिन्दी, अंग्रेज़ी, अनुवाद मैंने उस समय देश के लगभग तमाम बड़े राजनीतिक नेताओं और मुख्य मंत्रियों को भेजा था। जनवरी, 1954 में इसी विषय पर लखनऊ के गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल में एक सम्मेलन हुआ जिसमें नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों और ग़ैर मुस्लिम शिक्षित व्यक्तियों की खासी तादाद शरीक थी, इसके बाद उत्तर प्रदेश के पूर्वी ज़िलों के विभिन्न स्थानों पर मैंने जन सभाओं में जो भाषण दिये उनके दो संकलन "पयामे इन्सानियत और मक़ाम इन्सानियत" के नाम से प्रकाशित हुए। फिर अन्य लिखने पढ़ने की व्यस्ततओं के कारण मैं इस काम पर जितनी ज़रूरत थी उतनी एकाग्रता नहीं दे सका, और सच यह है कि मुझे सारी उम्र इसका क़लक़ (पछतावा) रहेगा कि यह सिलसिला क्यों न जारी रखा गया। तथापि जमशेदपुर राउलकेला और राँची आदि के साम्प्रदायिक दंगों और GENOCIDE और भाई से भाई की दुश्मनी की जगह–जगह घटित होन वाली घटनाओं और हिन्दुस्तानी समाज में पाये जाने वाले चिन्ताजनक चिन्तन (रुझान) ने जिनके कारण दिन प्रतिदिन का जीवन असुरक्षित होता जा रहा था, मुझे और मेरे साथियों को जिनमें नदवा के कुछ एक ज़िम्मेदार भी शामिल थे मानवता की सेवा के दायित्व की ओर आकर्षित कर दिया और दिसम्बर 1974 में इलाहाबाद से एक नये अनुभव का शुभारम्भ हुआ जैसा कि मैंने उस समय कहा था इस शहर से हमने काम इसलिए शुरू किया क्योंकि इसका नाम "इलाहाबाद" अर्थात् "खुदा की नगरी" है यहीं से खुदापरस्ती का अभियान और इन्सानियत के एहतराम (सम्मान) का बुलावा शुरू होना चाहिए। खुदा के बन्दों की इज़्ज़त, इन्सानियत को नयी ज़िन्दगी देने और इन्सानों को इन्सानियत का भूला हुआ सबक़ याद दिलाने का काम इसी शहर से शुरू होना चाहिए था, जो खुदा के नाम से आबाद है।

इस काम का बुनियादी मक़सद ख़ालिस इन्सानी रिश्ते और हिन्दुस्तानी नाते से देश में आम भाई चारे का वातावरण क़ाइम करना और नैतिक पतन के माहौल को ख़त्म करना और मानव सेवा के माध्यम से रूठे हुए, बेज़ार और आपस में हाथा–पाई करने वाले इन्सानों को जीवन के असली स्वाद और आनन्द और सही मक़सद व उद्देश्य से परिचित कराना है। मानवता के इस सन्देश को फैलाने के लिए इस अभियान और उद्देश्य से जुड़े लोगों ने हिन्दुस्तान के लगभग तमाम महत्वपूर्ण और केन्द्रीय स्थानों में जल्से किये जिनमें सक्रिय और अभियान के पक्षधर मुसलमानों के अलावा बहुसंख्यक समुदाय के बुद्धिजीवी और मानवता के प्रति सहानुभूति रखने वाले लोग भी सम्मलित हुए और प्रभावी सम्बोधन किये, और न केवल उन स्थानों पर बल्कि दूर–दूर तक उनकी अच्छी प्रतिक्रिया और प्रभाव हुआ। अब भी यह अभियान इसी नाम से चल रहा है।

इस अभियान को ग़ैर मुस्लिम हल्कों का भी समर्थन मिला है और उन्होंने इस प्रयास की प्रशंसा की है, और इसकी शुरूआत मुसलमानों के हाथों होने पर किसी को आश्चर्य या चिन्ता नहीं होनी चाहिए। मुसलमान खालिस अपने मज़हब के तक़ाज़े से भी इसका ज़िम्मेदार है कि वह ज़िन्दगी की जिस नाव पर सवार है वह जब डूबेगी तो उसको लेकर डूबेगी, उसके पैग़म्बर ने इस वस्तुस्थिति के लिए जो मिसाल दी है उससे बेहतर मिसाल कम से कम मुझे मज़हबी और अख़लाक़ी (नैतिक) लिट्रेचर में नहीं मिली।

आपने फ़रमाया कि एक नवका पर कुछ लोग ऊपर की मंज़िल पर सवार हैं और कुछ नीचे की मंज़िल पर। मीठे पानी की व्यवस्था ऊपर है नीचे वाले मजबूर हैं कि ऊपर जाकर पानी लायें, और अपनी प्यास बुझायें। पानी का गिरना और छलकना ज़रूरी है। नवका की ऊपरी मंज़िल के लोगों को इससे कुछ तकलीफ़

हुई, उन्होंने रोक–टोक की। नीचे वालों ने कहा कि पानी के बिना गुज़ारा नहीं अगर ऊपर वाले पानी नहीं देते तो हम नीचे के हिस्से में सूराख़ कर लेंगे और वहीं बैठे–बैठे नदी से पानी हासिल कर लेंगे। आपने फ़रमाया अगर ऊपर वालों में ज़रा भी समझ है तो वह उनको ऐसा करने से रोक देंगे और पानी ले जाने की इजाज़त दे देंगे। अगर उन्होंने ऐसा न किया और नवका में सुराख हो गया तो न ऊपर वाले बचेंगे न नीचे वाले। बस हम सब जिस नवका के सवार हैं। यह हमारे देश की नवका है, अगर ख़ुदा न करे डूबी तो न ऊपर वाले बचेंगे न नीचे वाले। न हमारी संस्थायें बचेंगी, न पुरतकालय, न पवित्र आत्मायें, न विद्वान, न बड़े बुढ़े। जब किसी मुहल्ले या गाँव में आग लगती है तो कोई अपनी कमज़ोरी और साधन विहीनता को नहीं देखता, गूँगे भी चिल्ला उठते हैं और अपाहिज भी दौड़ पड़ते हैं। मैं इस विश्वास और बड़ी सच्चाई की अनदेखी कैसे कर दूँ कि किसी देश और काल में भी रचनात्मक व शैक्षिक कार्यों के लिए चाहे वह कितने ही पवित्र ज़रूरी और लाभदायक हों, शर्त यह है कि इस देश में नार्मल हालात हों, जहाँ ज्वालामुखी बार–बार फटता हो, चक्रवात जल्द–जल्द आते हों, बाढ़ अपने विनाशकारियों के साथ पूरे–पूरे शहरों और राज्यों को अपनी लपेट में ले लेती हो वहाँ शैक्षिक व रचनात्मक कार्य के लिये मानसिक शांति और कार्य की ललक कहाँ से पैदा हो सकती है। ख़ैर यह तो ऐसी बातें हैं जिनपर अपना कोई बस नहीं और इनपर किसी का कोई बस नहीं लेकिन जहाँ साम्प्रदायिक दंगें, मानव की हत्या और मानवता को मेटने के जुनून की लहरें उठती हों और अच्छे अच्छे पढ़े लिखे इंसानों पर हिस्टीरिया के दौरे जल्द–जल्द पड़ते हों जहाँ दौलत व ताक़त के सिवा कोई सच्चाई ज़िन्दा और परिपूर्ण न मानी जाती हो वहाँ किसी शैक्षिक व रचनात्मक कार्य अथवा संस्था के जीवित रहने की ज़मानत कब तक दी जा सकती है और इस अनिश्चित और भयावह वातावरण में कोई लेखन अथवा विचार मन्थन कैसे हो सकता है।

जहाँ सोसाइटी इतनी भ्रष्ट (CORRUPT) हो जाये कि किसी को बिना रिश्वत दिये न उसका हक़ मिले, न रेल पर वह आराम से सफ़र कर सके, न विद्यार्थी पढ़ने में रुचि ले न उस्ताद पढ़ाने में, प्रशासन के सब काम बे अमल और सुस्त हों, पूरे देश में समय का कोई मूल्य न हो। यात्रा असुरक्षित और ठहराव जोखिम भरा हो जाये वहाँ इस बिगड़े हुए समाज में व्यक्तियों के लिए अपने सिद्धान्तों पर क़ायम रहना कब तक सम्भव है। इसी आधार पर मैं यह सही समझता हूँ कि यह नैतिक सुधार का अभियान और मानवता का सन्देश अभियान देश की तमाम धार्मिक शैक्षिक और ज्ञानमयी प्रयासों व आन्दोलनों के लिए एक घेरे की हैसियत रखती है जिसके अन्दर रहकर हर प्रयास सफल हो सकता है और उसको अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शांतिमय और मध्यममार्गी माहौल उपलब्ध होगा। इसलिए इस अभियान को मैं हर अभियान का सेवक और सहायक समझता हूँ और मेरे नज़दीक हर आह्वान व अभियान को इसका स्वागत करना चाहिए। कम से कम इसकी हैसियत वह है जो किसी फर्राश या पानी पिलाने वाले अथवा ज़मीन बराबर करने वाले या शामियाना लगाने वाले की होती है जिस के बाद कोई भी जल्सा (आयोजन) या सम्मेलन हो सकता है चाहे वह विशुद्ध धार्मिक हो अथवा शैक्षिक विचार विमर्श का स्वरूप लिए हुए हो। मानवता का सन्देश अभियान का सम्बोधन बिना किसी धार्मिक भेद–भाव के तमाम देशवासियों से है। इसका विषय इन्सानियत और इख़लाक़ है। इसका मक़सद इस देश के रहने वालों में ज़िन्दगी का सलीक़ा (सुव्यवस्था) और नागरिकता का एहसास पैदा करना है।

अनुवाद : मो० हसन अंसारी

❖ ❖ ❖

(पेज 39 का शेष)

अंतर्राष्ट्रीय समाचार.....

संसार के कई देश जिनमें रूस भी सम्मिलित है, आतंकवाद के विरुद्ध जंग का बहाना करके अपने राजनीतिक विरोधियों को समाप्त कर रहे हैं और अमरीका में फ़ौजी अदालतों की स्थापना का उद्देश्य मानव अधिकार की अवहेलना को छुपाना है। इसके अतिरिक्त इमेंस्टी इन्टरनेशनल और दूसरे अंतर्राष्ट्रीय संगठन और देश भी इस बात की ओर बराबर संकेत कर रहे हैं कि अमरीका के नेतृत्व में आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध में मानव और नागरिक अधिकार का बुरी तरह हनन हो रहा है। आतंकवाद के ख़िलाफ जंग में अमरीका ने अब तक जो कार्यवाहियां की हैं उनमें अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और संस्थाओं की ओर से बराबर मानव अधिकार और अंतर्राष्ट्रीय क़ानूनों की अवहेलना को चिंहित किया जा रहा है।

यदि यह परिस्थिति जारी रही तो अमरीका के लिए संसार की तनहा सुपर पावर शक्ति की हैसियत से शांति के लाहक़ इन ख़तरों को रोकना सम्भव नहीं रहेगा। अतः संयुक्त राष्ट्र और पश्चिमी देशों की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अमरीका को इस पालिसी से रोकें। अमरीका को खुद भी सोंचना चाहिये कि अन्याय पर निर्भर कार्यवाही से आतंकवाद समाप्त होने के बजाए और बढ़ेगा।

❑❑❑

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आचरण और स्वभाव

मुहम्मद सरवर नदवी

अल्लाह की ओर से भेजे गये अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जो पूरी मानव जाति के लिए नमूना हैं उनके आचरण और स्वभाव से परिचित होना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है, इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आचरण व स्वभाव के तमाम प्रमाणित पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

हिन्द बिन अबी हाला कहते हैं कि –

"अल्लाह के रसूल, ह० मुहम्मद (सल्ल०) हर समय आख़िरत की सोच में रहते। आप (सल्ल०) को यह सोच और चिन्ता बराबर बनी रहती, प्रायः ख़ामोश रहते, देर–देर तक ख़ामोश रहते, अनावश्यक न बोलते–बोलते तो प्रत्येक शब्द का साफ उच्चारण करते (अर्थात घमण्डियों की तरह अधकटे शब्द का प्रयोग न करते), न अधिक बोलते न बहुत कम। आप के स्वभाव और बातचीत में नर्मी थी। आदत में कठोरपन और बेमुरव्वती न थी। न किसी का अपमान करते और न अपने लिए अपमान पसन्द करते। नेअ़मत (वरदान) की बड़ी कदर करते और उसको बहुत ज़ियादा जानते चाहे वह कितनी ही कम क्यों न हो और उसकी बुराई न करते। खाने–पीने की चीजों की न बुराई करते न प्रशंसा। दुन्या और दुन्या से संबंधित जो भी चीज़ होती उस पर कभी गुस्सा न करते, लेकिन जब खुदा के किसी हक़ को कुचला जाता तो उस समय आप (सल्ल०) के सामने कोई चीज़ ठहर न पाती, यहां तक कि आप (सल्ल०) उसका बदला ले लेते। आप (सल्ल०) को अपने लिए स्वयं क्रोध न आता, न अपने लिए बदला लेते। जब संकेत करते तो पूरे हाथ के साथ इशारा करते, जब किसी बात पर आश्चर्य करते तो हाथ को पलट देते। बात करते समय दाएं हाथ की हथेली को बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते, गुस्सा और नागवारी (अप्रिय) की बात होती तो मुख उधर से फेर लेते, प्रसन्न होते तो नज़रें झुका लेते, आप (सल्ल०) का हंसना अधिकतर मुस्कराना था जिससे केवल आप (सल्ल०) के दाँत जो बरसात के ओलों की तरह साफ़ शफ़्फ़ाफ़ ज़ाहिर होते।"

(शमाइले तिर्मिजी)

हज़रत अ़ली रज़ि० जो बड़े ज्ञानी और जानकार थे और जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के निकटतम लोगों में से थे और ज्ञान व साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते थे, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के गुणों का बयान इस प्रकार करते हैं –

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के गुणों का वर्णन :

आप (सल्ल०) अपशब्द, बेहयाई व बेशर्मी से दूर थे, बाज़ार में कभी आप ज़ोर से न बोलते, बुराई का बदला बुराई से न देते, बल्कि क्षमा कर देते, आप (सल्ल०) ने किसी पर कभी हाथ नहीं उठाया, हां अल्लाह की राह में जिहाद को छोड़कर। किसी सेवक अथवा औरत पर आप (सल्ल०) ने कभी हाथ न उठाया। आपको किसी जुल्म व ज़ियादती का बदला लेते हुए भी नहीं देखा गया जब तक कि अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन न हो, और उस पर आंच न आये। हां, यदि अल्लाह के किसी आदेश को कुचला जाता और उसकी गरिमा पर आंच आती तो आप (सल्ल०) उसके लिए सबसे अधिक क्रोधित होते। दो चीज़ें सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ का आप चयन करते। जब घर पर होते तो आप (सल्ल०) इन्सानों की तरह नज़र आते, अपने कपड़ों को साफ करते, बकरी का दूध दुहते और अपने सारे कार्य स्वयं करते।

आप (सल्ल०) अपनी ज़बान सुरक्षित रखते और केवल उसी चीज़ के लिए खोलते जिससे आप को सरोकार होता। लोगों को सांत्वना देते और घृणा न फैलने देते, किसी कौम या बिरादरी का प्रतिष्ठित व्यक्ति आता तो उसको सम्मान देते, लोगों के बारे में नपी–तुली बात कहते और अपनी प्रसन्नता व आचरण से उनको वंचित न रखते, अपने साथियों के हालात की ख़बर रखते। लोगों के मुआमले के बारे में पूछा करते।

अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे सशक्त बनाते। बुरी बात की बुराई करते और उसको कमज़ोर करते। आप (सल्ल०) का मुआमला मध्यम मार्गी और समता का था, इसमें उतार–चढ़ाव न होता था। आप (सल्ल०) किसी बात से गफ़लत न करते, इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफ़िल न होने लगें और उकता जाएं। हर हाल और हर मौक़े के लिए आप (सल्ल०) के पास उस परिस्थिति

के अनुरूप सामान था। न हक़ (सत्य) के मामले में कोताही करते न हद से आगे बढ़ते। आपके सान्निध्य में जो लोग रहते थे वह सर्वोत्कृष्ट होते थे।

आप (सल्ल०) की निगाह में सर्वोत्कृष्ट और अधिक प्रतिष्ठित वह था जो ग़मख़्वारी व सदहृयता और परोपकार में सबसे आगे हो। खुदा का नाम लेकर खड़े होते और खुदा का नाम लेकर बैठते। जब कहीं पर्दापण करते (तशरीफ़ ले जाते) जहां तक लोग बैठे होते उसी जगह आसन ग्रहण करते, और इसका हुक्म भी देते। उपस्थित जनों में प्रत्येक व्यक्ति पर ध्यान देते आप की संगत में बैठने वाला हर व्यक्ति यह समझता था कि उससे बढ़कर आप की निगाह में कोई और नहीं है। यदि कोई व्यक्ति आप (सल्ल०) को किसी गरज़ से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आप (सल्ल०) से बात करता तो बड़े धैर्य के साथ उसकी पूरी बातें सुनते, यहां तक कि वह स्वयं ही अपनी बात पूरी करके प्रस्थान करता। यदि कोई व्यक्ति आपसे कुछ सुवाल करता और कुछ मदद चाहता बिना उसकी ज़रूरत पूरी किये उसे वापस न करते या कम से कम नर्मी से जवाब देते।

आप (सल्ल०) का सदाचरण तमाम लोगों के लिए आम था और आप (सल्ल०) उनके हक में बाप के समान हो गये थे तमाम लोग हक के मामले में आप (सल्ल०) की नज़र में बराबर थे। आप (सल्ल०) का सत्संग ज्ञान, भक्ति, हया और शर्म और धैर्य व अमानतदारी का सत्संग था। आपकी मजलिस में न कोई ज़ोर से बोलता था, न किसी के अवगुण बयान किये जाते थे, न किसी की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाया जाता था, न कमज़ोरियों का प्रचार किया जाता था। सब एक–दूसरे के बराबर थे और केवल खुदा के डर के आधार पर उसको एक दूसरे पर प्राथमिकता प्राप्त होती थी। इसमें लोग बड़ों का आदर और छोटों के साथ दया प्रेम का मामला करते थे। ज़रूरतमंद को अपने ऊपर प्राथमिकता देते थे। यात्रियों और नवआगन्तुकों की सुरक्षा करते और उनकी सुख–सुविधा का ध्यान रखते।

आप (सल्ल०) का मिज़ाज–

आप (सल्ल०) सदैव प्रसन्नचित रहते। आप बड़े विनम्र थे। न कठोर प्रकृति के थे और न सख़्त बात कहने के आदी थे, न चिल्लाकर बोलने वाले, न घमंडियों की तरह बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंग दिल और कंजूस। जो बात आपको पसंद न होती तो उसके प्रति उदासीन रहते और स्पष्टतः उससे निराश भी न होते और उसका जवाब भी न देते (अर्थात उसकी अनदेखी कर देते)। तीन बातों से आप (सल्ल०) ने अपने को बिल्कुल बचा रखा था–एक झगड़ा, दूसरे घमंड और तीसरे अनावश्यक और बेमकसद काम।

लोगों को भी तीन बातों से आप (सल्ल०) ने बचा रखा था। न किसी की बुराई करते थे, न किसी को ऐब लगाते थे (दोषारोपण) और न किसी की कमज़ोरियों और गोपनीय बातों के पीछे पड़ते थे और केवल वह बात करते थे जिस पर सवाब (पुण्य) की उम्मीद होती थी। जब आप (सल्ल०) बात करते तो उपस्थित जन अदब से इस प्रकार सर झुका लेते थे कि मालूम होता था कि उनके सरों पर चिड़ियां बैठी हुई है। (अर्थात चुपचाप बिना हिले–डुले) जब आप (सल्ल०) ख़ामोश होते तब यह लोग बात करते थे। आप (सल्ल०) के सामने कभी विवाद न करते। यदि आपकी मजलिस में कोई व्यक्ति बात करता तो शेष सभी लोग शान्त होकर सुनते, यहां तक कि वह अपनी बात समाप्त कर लेता। आप के सामने हर व्यक्ति को पूरे इत्मिनान से अपनी बात कहने का अवसर मिलता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप (सल्ल०) भी हंसते, जिस पर सब आश्चर्य व्यक्त करते आप (सल्ल०) भी आश्चर्य व्यक्त करते। यात्री और परदेसी के हर प्रकार के सुवाल को धैर्य से सुनते। आप (सल्ल०) कहते, "तुम किसी ज़रूरतमंद को पाओ तो उसकी मदद करो।" आप (सल्ल०) कोई बात कह रहा होता हो, तो न बोलते, और उसकी बात न काटते, हां, यदि हद से बढ़ने लगता तो उसको मना करते, या मजलिस से उठकर उसकी बात को काट देते।

आप (सल्ल०) सर्वाधिक उदार, सहृदय, सत्यवादी, नर्म मिज़ाज और व्यवहार में अत्यंत कृपालु थे। जो पहली बार आप (सल्ल०) को देखता उस पर आप (सल्ल०) का प्रभाव बैठ जाता, आप (सल्ल०) के सत्संग में जो रहता और जान–पहचान प्राप्त होती तो आप (सल्ल०) पर फ़रेफतः (कुर्बान) हो जाता। आप (सल्ल०) की चर्चा करने वाला कहता, "न आप (सल्ल०) से पहले आप (सल्ल०) जैसा कोई व्यक्ति देखा न आप (सल्ल०) के बाद।"

आप (सल्ल०) के उच्च आचरण पर एक दृष्टि –

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तमाम लोगों में सबसे अधिक उदार नर्म तबीअत और ख़ानदानी लिहाज़ से सबसे अधिक आदरणीय थे। अपने सत्संगियों से अलग–थलग न रहते थे उनमें पूरा मेल–जोल रखते थे, उनसे बातें करते, उनके बच्चों के साथ खुशमिज़ाजी और विनोद प्रियता का आचरण करते, उनके बच्चों को अपनी गोद में बिठाते। गुलाम और आज़ाद, दीन दुखिया सब का निमंत्रण स्वीकार करते, बीमारों को देखने जाते चाहे वह बस्ती के छोर पर ही क्यों न हो, क्षमाप्रार्थी को क्षमा करते। आप (सल्ल०) को सहाबा की मजलिस में कभी पैर फैलाये हुए नहीं देखा गया ताकि किसी

को तंगी न हो। सहाबा एक–दूसरे से कविता सुनते–सुनाते और अज्ञानता की किसी बात का उल्लेख करते तो आप (सल्ल०) ख़ामोश रहते या मुस्कुरा देते। आप (सल्ल०) अत्यंत नर्म दिल मुहब्बत करने वाले और कृपालू थे। अपनी बेटी फातिमा से कहते, "मेरे दोनों बेटों (हसन–हुसैन) को बुलाओ।" वह दौड़ते हुए आते तो आप (सल्ल०) दोनों को प्यार करते और उनको अपने सीने से लगाते। आपके एक नाती को आप (सल्ल०) की गोद में इस हाल में दिया कि उस की सांस उखड़ चुकी थी तो आप की आँखों से आँसू जारी हो गये। हज़रत साद ने कहा, "या रसूलल्लाह यह क्या है? आप (सल्ल०) ने फरमाया "यह दया है, जिसे अल्लाह, अपने भक्तों में जिसके दिल में चाहता है डाल देता है और निःसंदेह अल्लाह अपने दयावान भक्तों ही पर दया करता है।"

जब जंगे–बद्र में बंधकों के साथ हज़रत अ़ब्बास को भी बंधक बनाया गया और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनकी कराह सुनी तो आप (सल्ल०) को नींद नहीं आयी। जब अंसार को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने हज़रत अ़ब्बास के बन्धन खोल दिये और इच्छा व्यक्त की कि उनको छोड़ दिया जाये लेकिन आप (सल्ल०) ने इस बात को स्वीकार नहीं किया।

आप (सल्ल०) की दयालुता–

आप (सल्ल०) बड़े ही शीलवान (मेहरबान) थे। लोगों के स्वभाव के उक्ताहट व मन के क्षणिक ठहराव का बराबर ध्यान रखते, इसीलिए प्रवचन व उपदेश समयान्तर के साथ करते कि कहीं उक्ताहट न पैदा होने लगे। अगर किसी बच्चे का रोना सुन लेते तो नमाज़ संक्षिप्त कर देते और कहते, "मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूं तो इस विचार से नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूं कि उसकी मां को तकलीफ न हो।"

आप (सल्ल०) कहते थे, तुम में कोई व्यक्ति मुझसे किसी दूसरे की शिकायत न करें इसलिए कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारे सामने इस हाल में आऊं कि मेरा दिल बिल्कुल साफ हो। आप (सल्ल०) कहते हैं, 'जिसने तर्के में माल छोड़ा वह उसके वारिसों का है यदि उसके ऊपर कुछ क़र्ज़ आदि बाकी है तो वह हमारे ज़िम्मे।'

आप (सल्ल०) घर में आम लोगों की तरह रहते, हज़रत आइशा (रजि०) कहती हैं कि आप (सल्ल०) अपने कपड़ों को भी साफ कर लेते, अपना काम स्वयं करते, यहां तक कि अपने कपड़ों में पेवन्द भी लगा लेते, जूता भी गांठ लेते। हज़रत आइशा से पूछा गया कि आप (सल्ल०) अपने घर में किस तरह रहते थे? उन्होंने जवाब दिया, आप (सल्ल०) घर के काम–काज में रहते थे जब नमाज़ का समय आता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते।

हज़रत अनस (रजि०) बयान करते हैं कि मैंने किसी व्यक्ति को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से अधिक अपने परिवार जनों के प्रति कृपालु व दयालु नहीं देखा।

जानवरों पर दया –

आप (सल्ल०) कमज़ोर व बेज़बान जानवरों और चौपायों के प्रति सहानुभूति रखते और उनके साथ नर्मी का हुक्म फरमाते। आप (सल्ल०) कहते, "अल्लाह ने हर चीज़ के साथ अच्छा मामला करने और नर्म बर्ताव करने का हुक़्म दिया है, इसलिए ज़ब्ह करो तो अच्छी तरह करो, तुम में से जो ज़बह करना चाहता हो उसे चाहिए कि वह अपनी छुरी पहले तेज़ कर लें और जिस जानवर को ज़बह करना हो उसे आराम दे। आगे कहा, "इन बेज़बान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो। इन पर सवारी करो तो अच्छी तरह, उनको खाओ तो इस हालत में कि वह अच्छी हालत में हों।

सेवकों के साथ दया –

आप (सल्ल०) सेवक, नौकर और मज़दूर व गुलाम के साथ अच्छे बर्ताव की शिक्षा देते और कहते, जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ और अल्लाह की मख़लूक को कष्ट न पहुंचाओ। जिनको अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है वह तुम्हारे भाई तुम्हारे सेवक और मददगार है। जिसका भाई उसके मातहत हो उसको चाहिए कि जो स्वयं खाता है, वही उसको खिलाये जो स्वयं पहनता है वही उसको पहनाये, उनके सुपुर्द ऐसा काम न करो, जो उनकी ताकत से बाहर हो यदि ऐसा करना ही पड़े तो फिर उनका हाथ बटाये।

एक दिन एक ग्रामीण अनपढ़ आप (सल्ल०) के पास आया और पूछा कि मैं अपने नौकर को एक दिन में कितनी बार क्षमा करूं? आप (सल्ल०) ने कहा, सत्तर बार और फरमाया, "मज़दूर को उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।"

आप (सल्ल०) का स्वभाव –

आप (सल्ल०) जब चलते तो ऐसा मालूम होता कि मानों नीचे उतर रहे हों। जब किसी की ओर ध्यान देते तो पूरे शरीर से फिरकर ध्यान देते। आप (सल्ल०) की निगाह नीचे रहती थी। चलने में आप (सल्ल०) सहाबा को अपने आगे कर देते थे। और आप (सल्ल०) पीछे रहते थे। जिससे मिलते सलाम करने में पहल करते। आप (सल्ल०) के बाल कांधों तक थे और उन पट्टों से, जो कान की लौ तक हुआ करते हैं, या ज़्यादा और मोढ़ो तक होते हैं, उनसे कम थे (अर्थात न अधिक लंबे न छोटे बल्कि औसत), आपने कभी–कभी मांग भी निकाली है और सर में प्रायः तेल रखते थे और दाढ़ी में कंघी करते थे। जब आप (सल्ल०) वुज़ू करते या कंघी करते या मोज़ा पहनते, तो दाहिने से शुरू करना पसंद करते। आप (सल्ल०) के पास

सुर्मेदानी थी जिससे हर रात को तीन बार एक आँख में और तीन बार दूसरी आँख में सुरमा लगाया करते।

आप (सल्ल०) की सादगी–

हज़रत अबू हुरैरः (रजि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने किसी खाने में कभी कोई ऐब नहीं निकाला। इच्छा हुई तो खा लिया, नापसंद हुआ तो छोड़ दिया। वह आगे कहते हैं कि मैंने आप (सल्ल०) की दस साल सेवा की, आप (सल्ल०) ने कभी "हूँ" भी नहीं किया और न यह कहा कि अमुक कार्य तुमने क्यों किया और अमुक कार्य तुमने क्यों नहीं किया। आप (सल्ल०) के साथी आप (सल्ल०) के आदर व सम्मान के लिए खड़े नहीं होते इसलिए कि आप (सल्ल०) इसको पसंद नहीं करते थे। आप (सल्ल०) कहते हैं कि, मेरी इस प्रकार आगे बढ़–चढ़कर प्रशंसा न करो, जिस प्रकार ईसाइयों ने हज़रत ईसा (अलै०) के साथ किया था, मैं तो एक भक्त हूं। तुम मुझे अल्लाह का भक्त और उसका रसूल कहो।

अदी बिन हातिम कहते हैं कि मैं जब आप (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप (सल्ल०) ने मुझको अपने घर बुलाया। मैं गया तो आप (सल्ल०) की बांदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आप (सल्ल०) ने तकिए को मेरे और अपने दरमियान रख दिया और स्वयं ज़मीन पर बैठ गये। अदी कहते हैं कि इससे मैं समझ गया कि वह बादशाह नहीं है। एक व्यक्ति ने आपको देखा तो कांप गया। आप (सल्ल०) ने उससे कहा कि "घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूं। मैं कुरैश की एक महिला का बेटा हूं।"

आप (सल्ल०) घर में झाड़ू खुद ही दे लेते। आप (सल्ल०) के सामने हर व्यक्ति पूरे इत्मिनान से अपनी बात समाप्त कर लेता। ऊँट बांधते, उनको चारा देते और बाज़ार से सौदा सुलूफ ले आया करते थे।"

आप (सल्ल०) को किसी व्यक्ति के बारे में ऐसी बात मालूम होती जो आप (सल्ल०) को नापसंद होती तो यह न कहते कि अमुक व्यक्ति ऐसा क्यों करता है। बल्कि यूं कहते कि लोगों को क्या हो गया है कि ऐसे कर्म करते हैं या ऐसी बाते जबान से निकालते हैं। इस प्रकार नाम लिए बिना उस कर्म से रोकते।

आप (सल्ल०) का पहनावा–

कपड़ों में कुर्ता सबसे अधिक पसंद था। जब कोई नया कपड़ा पहनते तो खुशी से उसका नाम लेते और दुआ पढ़ते और फरमाते कि सफेद कपड़े पहना करो और सफेद ही कपड़ों में मुर्दों को दफ़न करना चाहिए, यह बेहतरीन कपड़ों में से है। एक बार नज्जाशी ने आप (सल्ल०) की सेवा में दो काले सादे मोज़े भेजे आप (सल्ल०) ने उनको पहना और वुज़ू के बाद उन पर मसह भी किया और ऐसे जूतों में नमाज़ पढ़ी जिनमें दूसरा चमड़ा सिला हुआ था और यह कहते कि एक जूता पहन कर कोई न चले या दोनों पहन कर चले या दोनों निकाल कर। बाएं हाथ से खाने या केवल एक जूता पहन कर चलने से आप (सल्ल०) मना करते और कहते, जूता पहनो तो पहले दाहिना पैर डालो और उतारो तो पहले बायां पैर निकालो। आप (सल्ल०) दाहिने हाथ में अंगूठी पहनते और एक अंगूठी बनवाई जिसमें पहली पंक्ति में "मुहम्मद" दूसरी में "रसूल" और तीसरे में "अल्लाह" लिखा था। जब शौच को जाते तो अंगूठी उतार देते। मक्के की विजय के अवसर पर आप (सल्ल०) ने जब मक्के में प्रवेश किया तो सर पर काली पगड़ी थी। आप (सल्ल०) पगड़ी जब पहनते तो उसका सिरा दोनों मोढ़ों के बीच डाल देते। आप (सल्ल०) की लुंगी की ऊँचाई आधी पिंडलियों तक होती।

आप (सल्ल०) का भोजन–

आप (सल्ल०) टेक लगाकर नहीं खाते थे। आप (सल्ल०) को कद्दू व लौकी पसंद थी और हलवा तथा शहद भी गोश्त आप (सल्ल०) को कभी–कभी मुयस्सर आता। आप (सल्ल०) कहते, जो व्यक्ति बिना खुदा का नाम लिए खाना खाता है उसके साथ शैतान शामिल होता है और कहते, अल्लाह इससे खुश होता है कि बन्दा कुछ खाये और कुछ पिये तो उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे। ठंडा और मीठा पानी आप (सल्ल०) को सबसे अधिक पसंद था। आप (सल्ल०) फ़रमाते, खाने और पानी का बदल (विकल्प) दूध की तरह कोई दूसरी चीज़ नहीं। आप (सल्ल०) ज़मज़म खड़े होकर और पानी तीन सांस में बैठकर पीते।

खुशबू –

आप (सल्ल०) के पास एक इत्रदान था जिससे इत्र लगाया करते थे। कोई इत्र भेंट करता तो उसे स्वीकार करते। आप (सल्ल०) कहते "तीन चीज़े रद्द नहीं करना चाहिए, तकिया, खुशबू और दूध।" आप (सल्ल०) ने फरमाया, मर्दाना खुशबू वह है जिसकी खुशबू तेज़ हो और रंग हल्का और ज़नाना खुशबू वह है जिसका रंग गहरा और खुशबू हल्की।

कभी–कभी आप (सल्ल०) बड़े सटीक शेर भी पढ़ते। आपने कविता पाठ की इजाज़त भी दी है और उस पर इनाम भी दिया है और उसको पसंद भी किया। आप (सल्ल०) ने कअब बिन मालिक का क़सीदा (स्तुति) सुना और उनको चादर इनाम में दी।

आप (सल्ल०) के आराम करने का तरीक़ा –

आप (सल्ल०) जब आराम करते तो दाहिना हाथ अपने दाएं गाल के नीचे रख लेते। आप (सल्ल०) का बिस्तर चमड़े का था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी।

(शिमाइले–तिर्मिज़ी)

समाज सुधार

ज़मीर (अंतरात्मा) की आवाज़

– सैय्यद सुलेमान नदवी

मनुष्य की मनः स्थिति की वह जीवित अनुभूति जिसके द्वारा वह भलाई और बुराई में अंतर कर लेता है और जिसके कारण उसके दिल में अंदर से स्वतः नेकी के आह्वान की आवाज़ उठती है, गरीब व लाचार आदमी को देखकर हर व्यक्ति में स्वभावतः दया की भावना जागृत होती है, हत्यारे और ज़ालिम से हर व्यक्ति को नफरत होना स्वाभाविक है। हृदय की यह स्वाभाविक क्षमता हर इन्सान की अंतरात्मा में है। हर अच्छा या बुरा काम करते समय उसके हृदय पटल से प्रशंसा या धिक्कार की आवाज़ आती है। लेकिन बुरी सोहबत, बुरी तर्बियत (दीक्षा) या किसी खास तीव्र भावना के असर से यह आवाज़ और इसका असर दब भी जाता है। यही कारण है कि हर पाप के पहले पहल करने में इंसान खौफ खाता है, उसके हाथ–पैर कांपते हैं वह अपनी गुनाहगारी की कल्पना से तीव्र मानसिक कलैश महसूस करता है, वह कभी–कभी प्रायश्चित के भव सागर में डूब जाता है। इसके ज़िक्र से वह पानी–पानी हो जाता है, लेकिन जब वह बार–बार अपनी अंतरात्मा की इस आवाज़ को दबाता रहता है तो वह दब कर रह जाती है और उसकी नदामत के एहसास का शीशा इस ठोकर से चूर–चूर हो जाता है।

यह प्रतिफल किस चीज का नतीजा है? इस्लाम के नैतिक सिद्धांतों की बिना पर इसका जवाब यही है कि अल्लाह ने हर इन्सान में नेकी व बदी के जो स्वाभाविक विचार डाल रखें हैं यह उसका फल है। कुर्आन कहता है :

"हर आत्मा में उसकी बदी व नेकी ईश्वर की ओर से डाल दी गयी है।"

(सूर–ए–शम्स)

वह भावना जिसका नाम अंतरात्मा है और जो हमको हमारे हर बुरे काम के समय होशियार करती है, इस्लाम में उसका नाम नफ़्से लव्वामः (मलामत करने वाला नफ़्स) है, यह स्वयं हमारे दिल के अंदर है। सूर–ए–क़ियामह में है :

"और क़सम खाता हूं उस नफ़्स की जो इन्सान को उसकी बुराईयों पर मलामत करता है।" आगे चलकर फरमाया :

"बल्कि इन्सान अपने नफ़्स पर आप समझ–बूझ है, यद्यपि वह अपने ऊपर तरह–तरह के बहानों (के पर्दे) डाल लेता है।"

नवास बिन समआन अन्सारी रजि० एक साल तक इस इन्तिज़ार में मदीना में ठहरे रहे कि हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) से नेकी और गुनाह की हकीकत समझें। आख़िर एक दिन उनको मौक़ा मिल गया और उन्होंने पूछ लिया। फरमाया– "नेकी सद्व्यवहार का नाम है और गुनाह वह है जो तेरे दिल में खटक जाये और तुझको पसंद न हो कि तेरे इस काम को लोग जानें।" इसी प्रकार वाबिसा बिन मोअबद के नाम के एक साहबी नबी (सल्ल०) की सेवा में नेकी और गुनाह की हकीकत जानने के लिए उपस्थित हुए। चारों और जान निछावर करने वालों का हुजूम था। वह साहब सबको हटाते हुए आगे बढ़ते चले गये, लोग उनको रोक रहे थे मगर वह आगे बढ़ते ही गये हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने देखा तो फरमायाः "वाबिसा करीब आ जाओ" जब वह करीब जाकर बैठे तो उन्होंने फरमायाः "ऐ वाबिसा! मै बताऊँ कि तुम क्यों आये हो, या तुम बताओगे", अर्ज़ किया हुजूर ही इरशाद फरमाये। हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया : "वाबिसा ! तुम मुझसे नेकी और गुनाह की हकीकत पूछने आये हो" अर्ज़ किया "सच है या रसूलल्लाह," फरमाया, "ऐ वाबिसा अपने दिल से पूछा करो, अपने नफ़्स से फतवा लिया करो, नेकी वह है जिससे दिल और नफ़्स (मनोवृति) में सुकून व तसल्ली पैदा हो और गुनाह वह है जो दिल में खटके और नफ़्स को उधेड़बुन में डाले, अगरचे लोग तुझे उसका करना जाइज़ ही क्यों न बतायें।

यही वह नैतिक अनुभूति है जिसका नाम लोगों ने ज़मीर (अंतरात्मा) की आवाज़ रखा है। पहले पहल जब इंसान अपने ज़मीर की आवाज़ के खिलाफ कोई काम करता है तो उसके दिल की साफ व सादा पट्टी (पटल) पर दाग़ का एक काला बिन्दु पड़ जाता है, मगर होश में आकर वह तौबा करता है और नादिम होता है तो वह दाग़ मिट जाता है लेकिन अगर फिर वही गुनाह बार–बार उसी तरह करता रहे तो वह दाग़ बढ़ता जाता है यहां तक कि वह पूरे दिल को स्याह (काला) करके अंतरात्मा के हर प्रकार के भाव से उसको वंचित कर देता है। इसी भावार्थ को हज़रत मोहम्मद सल्ल० ने इन शब्दों में व्यक्त किया :–

"बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में दाग़ का एक स्याह (काला) नुक्तः (बिन्दु) पड़ जाता है। तो अगर

उसने फिर अपने को अलग कर लिया और खुदा से माफी मांगी और तौबा की तो उसका दिल साफ हो जाता है और अगर उसने फिर वही गुनाह किया तो वह दाग़ बढ़ाया जाता है। यहां तक कि वह पूरे दिल पर छा जाता है।"

इसके बाद उन्होंने फरमाया : यही वह दिल का ज़ंग (मोर्चा) है जिसका उल्लेख कुर्आन को सूर–ए–तत्फ़ीफ़ में इस प्रकार आया है :

"कभी नहीं, बल्कि उनके (बुरे) कामों की वजह से उनके दिलों पर ज़ंग छा गया है।"

हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने एक उपमा में फरमाया कि लक्ष्य की ओर एक सीधा रास्ता जाता है। रास्ते के इधर–उधर दो दीवारें कच्ची हैं और उन दोनों में कुछ दरवाज़े खुले हैं, लेकिन इन पर पर्दे पड़े हैं। रास्ते के सिरे पर एक आवाज़ देने वाला आवाज़ दे रहा है कि रास्ते पर सीधे चलो और इधर–उधर मुड़ो नहीं। जब कोई राहगीर खुदा का बन्दा चाहता है कि इन दायें–बायें के दरवाज़ों में से किसी एक दरवाज़े का पर्दा उठाये तो ऊपर से एक मुनादी पुकार कर कहता है ख़बरदार! पर्दा न उठाना, उठाओगे तो अन्दर चले जाओगे। फिर फरमाया यह रास्ता इस्लाम है और यह दरवाज़े अल्लाह की मना की हुई चीज़ें (ममनूआत) हैं और यह पर्दे उसके हुदूद (सीमाएं) हैं और रास्ते के सिरे पर पुकारने वाला कुरआन है और ऊपर का मुनादी जो पुकारता है वह खुदा का वह वाइज़ (धर्मोपदेशक) है जो हर मोमिन के क़ल्ब में है।"

अनुवादः मोहम्मद हसन अंसारी

★★★

मैं बा वफ़ा था इस लिये नज़रों से गिर गया।
शायद तुम्हें तलाश किसी बे वफ़ा की है।।

★★★

बेटी की व्यथा

बेटी क्या है? थान–पौध सम,
इस घर से उस घर जाती।
जड़ें छोड़ देती इस घर में,
उस घर जाकर फूल खिलाती।।

रहती प्रियतम के घर में है,
पर पितृग्रह कभी भूल न पाती।
रहे प्रफुल्लित सदैव वह घर,
यही कामना सदा मनाती।।

उस घर की गरिमा मर्यादा,
सदैव अपने साथ है लाती।
चले राह पर कभी पतन की,
तो 'उसकी बेटी' कहलाती।

यद्यपि सम्पूरित निज ग्रह में,
पत्नी मां–दादी बन जाती।
कभी भूल पाती क्या वह घर?
जहां बाल क्रीड़ा कर जाती।

क्या बेटी का यह भविष्य!
कभी गर्भ में मारी जाती।
और कभी प्रियतम के हाथों
ही मृत्यु–शय्या पर सो जाती।

इक्कीसवीं सदी का मेरा भारत
बेटी को क्या दे पाया है?
विज्ञान कृपा से उसने स्वयं को
आज गर्भ में नष्ट कराया है।

– डा. श्रीमती अंजनी शर्मा
कर्नाटक

कुछ उर्दू शब्दों का शुद्ध उच्चारण

ख़याल, ज़ियादा, दुन्या, इख़्तियार, इख़लास, अख़लाक़, फाइदा, जाइज़ा, क़ियामत

कुछ फ़ार्सी तरकीबें

दीवाने ग़ालिब, क़ौमे आद, क़ौमे हूद, सूर–ए–नूर, बन्द–ए–ख़ुदा, खान–ए–ख़ुदा, *(हाए मुख़्तफी की इज़ाफ़त ज़ाहिर करने के लिये हिन्दी में दो डेशों के बीच ए लिखें (–ए–) परन्तु मजहूल ज़ेर(लघु कालीन ध्वनु हेतु ए की मात्रा)के लिये भी ए की मात्रा लगाएँ जैसे कौमे आद, क़ौमे हूद आदि या फिर लघु कालीन ए की मात्रा के लिए मात्रा को तनिक टेढ़ाकर दें जैसे कौमे आद।*

इस्लाम की राह के कष्टों पर

सहाब-ए-किराम (रज़ि०) का सब्र

– हबीबुल्लाह आज़मी

मक्का में जो लोग प्रारम्भ में इस्लाम पर ईमान लाए उन पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े गये। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को गर्म रेत पर लिटाया गया, उनके सीने पर गर्म पत्थर रखा गया, उनकी गर्दन में रस्सी बांधकर मक्का की पहाड़ियों में घसीटा गया। इन तमाम मुसीबतों में उनकी ज़बान से केवल "अहद–अहद" (एक, अद्वितीय) का नारा बुलंद होता रहा।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि०) जब मुसलमान हुए तो उनके चचा ने उनको खजूर की रस्सी से बांधकर पीटा (सीरतुन्नबी भाग–१ पृष्ठ २३२) हज़रत जुबैर बिन अव्वाम जब सोलह वर्ष के थे तो ईमान लाए इन्कारियों ने उनको चटाई में लपेट कर बांध दिया और इतना घुवां दिया कि उनका दम घुटने लगा। उनकी ज़बान से केवल यह शब्द निकले कि कुछ करो मैं काफ़िर (इन्कारी) नहीं हो सकता (तज़किरा जुबैर रज़ि० मुहाजिरीन भाग–१ पृष्ठ ७६)

हज़रत तलहा रज़ि० जब मुसलमान हुए तो उनके भाई ने उनको और हज़रत अबू बक्र रज़ि० को एक ही रस्सी में बांधकर मारा (मुहाजिरीन भाग–१ पृष्ठ ६५)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० इस्लाम लाए और इन्कारियों के सामने कलम–ए–पाक पढ़ना शुरू किया तो उन्होंने उनको इतना पीटा कि उनका मुंह सूज गया फिर भी उनकी ज़बान बन्द नहीं हुई और केवल यह कहा कि खुदा के दुश्मन आज से अधिक मेरी निगाह में तुच्छ न थे।

हज़रत अम्मार रज़ि० बिन यासिर रज़ि० जब इस्लाम लाए तो ग़ैर मुस्लिमों ने उनको आग़ के अंगारे पर लिटा दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस तरफ़ से गुज़रे तो उनके सिर पर दया से हाथ फेर कर केवल इतना कहा "ए आग ! तू इब्राहीम की तरह अम्मार पर ठंडी होजा" हज़रत अम्मार रज़ि० की माता को निर्दयता से भाला मार कर अबूजिह्ल ने शहीद किया। हज़रत अम्मार रज़ि० के पिता उनके भाई भी इस्लाम की राह में शहीद हुए।

एक बार हज़रत यासिर रज़ि ने हुजूर (सल्ल०) से इस अत्याचार के बारे में शिकायत की तो आप (सल्ल०) ने फरमायाः "सब्र करो सब्र करो" फिर दुआ की कि "ऐ खुदा यासिर की औलाद को बख़्श दे।" आप (सल्ल०) जब हज़रत अम्मार के घर से गुज़रे तो आपने इस कुटुम्ब की मुसीबत को देखकर फरमाया : "ऐ अम्मार की औलाद ! तुम्हें खुशख़बरी हो जन्नत तुम्हारी प्रतीक्षा में है।"

(मुहाजिरीन भाग–१ पृष्ठ–३२४)

हज़रत सुहैब बिन सन्नान रज़ि० पर जब इस्लाम न मानने वालों ने अत्याचार की इंतिहा कर दी तो उन्होंने मदीना प्रस्थान करने का इरादा किया। परन्तु ग़ैर मुस्लिमों ने रुकावट डाली तो आपने कहा कि जब तक मेरे पास तीर है मेरे निशाने से बच नहीं सकते। उसकी समाप्ति के बाद तुम लोगों का मुक़ाबला तलवार से करूंगा। यदि धन–दौलत चाहिए तो उसको लेकर मेरा रास्ता छोड़ दो। वह लोग इस पर मान गये और सुहैब रज़ि० अपना सब माल–व–दौलत देकर ईमान के साथ मदीना पहुंच गये।

(मुहाजिरीन भाग–१ पृष्ठ–३५६)

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० से नाराज़ होकर एक ग़ैर मुस्लिम ने उन को इस ज़ोर का तमाचा मारा कि उनकी आँख पीली पड़ गयी। जब उनसे इसके बारे में बताया गया तो उन्होंने कहाः अल्लाह की राह में यह आँख सबसे अधिक सम्मान योग्य है और जो आँख सही सालिम है वह भी इस आँख के दुःख में शामिल होने की इच्छुक है।

सहाब–ए–किराम (मुहम्मद सल्ल० के माननीय साथियों) के इस्लाम स्वीकार करने पर जो अत्याचार उनके साथ किये गये उसकी मिसालें अनगिनत हैं। घर से निकलना कठिन था। हर समय जान–व–माल का भय था खुलेआम इबादत भी नहीं कर सकते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दशा देखी तो उनको हबशा (अफरीक़ा का एक देश) प्रस्थान करने को कहा। पहला क़ाफ़िला, ग्यारह मर्द और चार औरतों का, हबशा रवाना हुआ उसमें हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० भी थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी हज़रत रुक़य्या रज़ि० भी थीं जो हज़रत उस्मान से ब्याही थीं। हबशा के बादशाह पर मक्का के ग़ैर मुस्लिमों ने दबाव डाला कि मुसलमानों को अपने देश से निकाल दो। नज्जाशी ने उन लोगों को बुला भेजा और पूछा कि तुम्हारा मज़हब क्या कुछ निराला है जो तुमने अपने बाप–दादा का मज़हब त्याग दिया।

हज़रत जाफर रज़ि० ने उसके सामने निडर होकर एक प्रभावशाली तक़रीर की और कहा कि हम एक जाहिल (अज्ञानी) क़ौम थे, बुतों की पूजा करते थे, मरे हुए पशु–पक्षी खाया करते थे और पाप करने के आदी हो गये थे, पड़ोसियों के साथ बुरा व्यवहार करते थे, दिल में दया का नाम न था। इतने में एक ऐसा पैग़म्बर (ईश्वर का संदेश वाहक) भेजा गया जिसकी सच्चाई, अमानत, शराफ़त व सख़ावत को हम जानते हैं उसने एक खुदा की तरफ़ बुलाया और सिखाया कि हम पत्थरों को पूजना छोड़ दें, हमेशा सच बोलें, लोगों की धरोहर को सुरक्षित रखें, दूसरों पर दया करें, पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार से पेश आएं, हराम बातों और खून–खराबे से बचें, बेशर्मी और वासनाओं से दूर रहें, झूठ न बोलें, यतीम का माल न खाएं, औरतों पर झूठा इल्ज़ाम न लगाएं। अल्लाह की इबादत (उपासना) में किसी को शरीक न करें, नमाज़ पढ़ें, रोज़े रखें। हमने इसको माना उस पर इमान लाए। अब जब शिर्क (खुदा की सत्ता में किसी दूसरे को शरीक करना) छोड़ कर खुदापरस्ती अपनायी, हलाल को हलाल, हराम को हराम जाना तो हमारी क़ौम हमारी दुश्मन हो गयी। हमको तरह–तरह से सताने लगी। हमको एक खुदा की पूजा छोड़ कर बुतों की पूजा के लिए मजबूर करने लगी।

सीरते इब्ने हिशाम के लेखक का बयान है कि इस तक़रीर को सुन कर नजाशी और उसके दरबारियों का दिल भर आया और वह रुहांसे हो गये। नजाशी ने कहा यह और ईसा का लाया हुआ धर्म एक ही दिये की दो लव हैं।

इस प्रकार मुसलमानों पर जो अत्याचार किया जा रहा था उस पर एक सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि दुश्मनों के हक़ में बद दुआ फ़रमायें। यह सुनकर आपका मुबारक चेहरा सुर्ख़ हो गया। एक–दूसरे अवसर पर सहाबियों ने बददुआ के लिए कहा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "मैं संसार के लिए लानत (अभिशाप) नहीं बल्कि रहमत (दया) बनाकर भेजा गया हूं। मक्का में जिन दिनों यह अत्याचार का पहाड़ तोड़ा जा रहा था बड़ा भयंकर सूखा पड़ा। लोग हड्डी और मुर्दा जानवर खाने लगे। अबू सुफ़ियान आपकी सेवा में हाज़िर हुआ और बिन्ती की ऐ मुहम्मद ! तुम्हारी क़ौम भूखों मर रही है खुदा से दुआ करो कि यह मुसीबत ख़त्म हो जाए। आप सल्ल० ने तुरंत दुआ के लिए हाथ उठाया और अल्लाह ने इस मुसीबत को दूर कर दिया। **(सही बुखारी, सीरतुन्नबी भाग–२ पृष्ठ ३७६)**

ताइफ़ में जब इस्लाम का प्रचार किया जाने लगा तो वहां के लोगों ने इस्लाम का प्रचार करने वालों पर घोर अत्याचार किये। सहाबा रज़ि० ने आपसे निवेदन किया कि ताइफ़ वालों के लिए बददुआ कीजिये। आप सल्ल० हाथ उठाते हैं लोग समझते हैं कि आप सल्ल० बददुआ कर रहे हैं लेकिन आप सल्ल० फ़रमाते हैं "खुदा वन्दा ! ताइफ़ वालों को इस्लाम नसीब कर और मित्रों के समान उन को मदीना ला और यह दुआ क़ुबूल होकर रही। **(इस्लाम में मज़हबी रवादारी पृष्ठ–१६)**

फ़तहे मक्का पर आम माफ़ी का एलान :

रसूले अकरम और सहाबा पर मक्का के इन्कारियों के ज़ुल्म–व–सितम की दास्तान बहुत लंबी है लेकिन इन अत्याचारों और मदीना पर मक्का के इस्लाम दुश्मनों के बार–बार हमलों के बावजूद इस्लाम जिस तेज़ी से फैलता जा रहा था वह अपने आप में एक मिसाल है और अंततः फ़तेह मक्का (मक्का विजय) के बाद की घटना भी एक अद्भुत और अकेली मिसाल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में इस शान के साथ दाख़िल हुए कि सरे मुबारक बन्दगी और नम्रता से बिल्कुल झुक गया था क़रीब था कि आप की (सल्ल०) थुड्डी ऊँटनी के कजावे से लग जाए। मक्का के ऐसे फ़ातेहाना दाखिले में इंसाफ़ बराबरी, नम्रता और बन्दगी का बे इंतिह इज़हार था। इस प्रकार जब आप विजयी की हैसियत से दाख़िल होते हैं, मक्का वालों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। आप (सल्ल०) उनको सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं, "तुम्हें मालूम है मैं आज तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूं।"

उस समय मक्का वालों की आँखों के सामने वह दृश्य घूम गये जब वह आप (सल्ल०) पर और आपके साथियों पर अत्याचार ज़ुल्म व ज़ियादती करते थे और तरह–तरह की यातनाएं दिया करते और उनके जानी दुश्मन थे। वह डरे आज मुहम्मद (सल्ल०) उन सबका बदला गिन–गिन कर लेंगे लेकिन उनके अंदाज़े के ख़िलाफ़ आपने आम माफ़ी का एलान कर दिया। "अमन व सुरक्षा का दायरा उस रोज़ बढ़ा दिया कि मक्का में वही शख़्स (व्यक्ति) हलाक हो सकता था जो खुद माफ़ी और सलामती का इच्छुक नहीं है और अपनी ज़िन्दगी से बेज़ार है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा उसको पनाह मिलेगी जो अपने घर के दरवाज़े बन्द कर लेगा वह सुरक्षित है। जो मस्जिदे हरम (क़ाबा शरीफ़) में दाख़िल होगा उसको अमान है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लश्कर वालों को हुक्म (निर्देश) दिया कि मक्का में दाखिल होते समय केवल उस शख़्स पर हाथ उठाएं

जो उनकी राह में रुकावट हो। आपने इसका भी हुक्म फ़रमाया कि मक्का वालों की जायदाद के बारे में पूरी सावधानी बरती जाए उसमें हस्तक्षेप न किया जाए।

माफ़ी और रहम का दिन है खून–खराबे का नहीं –

साद बिन इबादा रज़ि० जो अंसार के दस्ते के सरदार थे जब अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने कहा – आज घमासान का दिन है और खून–खराबे का दिन है। आज काबे में सब जाइज़ है।

जब रसूलुल्ला सल्ल० अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने शिकायत की। आपने इसे नापसंद फ़रमाया और कहा नहीं आज तो रहम और माफ़ी का दिन है। आज अल्लाहतआला कुरैश को इज़्ज़त प्रदान करेगा और काबा का सम्मान बढ़ाएगा।

आप (सल्ल०) ने साद रज़ि० को बुलाया और इस्लामी झण्डा उनसे लेकर उनके पुत्र के हवाले कर दिया। (सीरते रसूले अकरम : मौलाना अली मिया रह०)

इतिहास गवाह है कि आज तक कोई विजयी सेना विजय के बाद ऐसे अम्न व शांति के पैग़ाम के साथ किसी क्षेत्र या शहर में दाख़िल नहीं हुई। इन तथ्यों की रौशनी में क्या कोई इंसाफ़ पसंद व्यक्ति यह कह सकता है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर पर फैला ?

इस्लाम का सम्बन्ध दिल से है। तलवार से बन्दूक से, ताक़त से शरीर को तो वश में किया जा सकता है परन्तु दिल बदलने के लिये तो सदाचरण तथा सदव्यवहार ही चाहिये। तलवार से दिल नहीं बदल सकता। फौज और ताक़त ने मुल्क ज़रूर जीते हैं परन्तु दिल जीतने का काम अच्छे अख़लाक़ वालों ही ने किया है।

❐❐❐

सुवाल व जवाब (हदीस का अर्थ)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कुछ पूछने से रोक दिये गये थे। पस हमको इस बात से खुशी होती थी कि कोई बुद्धिमान देहात से आये और रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कुछ पूछे और हम लोग सुनें। पस एक आदमी देहात से आया और उसने कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मेरे पास आपका आदमी आया और उसने कहा कि आप का कहना है कि अल्लाह ने आपको रसूल बनाकर भेजा है? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : उसने सच कहा। फिर उसने पूछा कि आसमान किसने बनाया ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया : अल्लाह ने। उसने पूछा ज़मीन किसने बनायी ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमायाः अल्लाह ने। उसने पूछा कि पहाड़ और जो कुछ उनमें हैं उन सब को किसने बनाया ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : अल्लाह ने। उसने कहा कि जिसने जमीन,आसमान और पहाड़ बनाये उसकी क़सम, क्या उसी ने आपको रसूल बनाया ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : हाँ। उसने कहा कि आपके आदमी ने बताया कि दिन–रात में हम पर पांच वक़्त की नमाज़ है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : उसने सच कहा। उसने कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी क़सम क्या उसी ने आपको यह हुक्म दिया है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : हाँ। उसने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हम पर हमारे मालों की ज़कात की अदाएगी है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया : सच कहा। उसने कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी क़सम क्या उसने आपको इसका हुक्म दिया है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : हां। उसने कहा कि आपके आदमी ने कहा है कि हम पर साल में रमज़ान के रोज़े हैं ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : सच कहा। उसने कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया है उसकी क़सम, क्या उसने आपको इसका हुक्म दिया है? आपने फ़रमाया : हाँ ! उसी ने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हज के रास्ते पर सामर्थ्य हो तो हम पर हज है ? आप ने फ़रमाया : सच कहा। रावी कहते हैं कि फिर वह यह कहते हुए लौटा कि जिसने आपको रसूल बनाया उसकी क़सम इन बातों पर ना तो कुछ बढ़ाऊंगा न घटाऊंगा। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर इसने अपनी प्रतिज्ञा सच कर दिखाई तो यह जन्नत में जाएगा।

(बुख़ारी व मुस्लिम–हदीस का अर्थ)

अगर हम से कोई इस प्रकार कसम देकर दीन की बात पूछे तो हम को प्रसन्नता पूर्वक सत्य उत्तर देना चाहिये। किसी बात के विषय में जब तक हम को पूरा विश्वास न हो जाए कि वह कुर्आन की बात है हम हरगिज़ यह न कहें कि यह बात कुर्आन की है। इसी प्रकार जब हम को पूरा विश्वास हो जाए तभी हम कहें कि यह बात हदीस की है।

(इदारा)

समाज सुधार

हलाल कमाई

फ़ज़ले रहमान

इमाम बुख़ारी ने 'सही बुख़ारी' में हज़रत अबू हुरैराः के हवाले से नकल किया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फरमाया कि लोगों पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि कोई व्यक्ति इस बात का ख़याल नहीं करेगा कि उसने जो लिया है वह हलाल (विहित) है या हराम (अविहित)।

आजकल हम भौतिकवाद और दुन्यादारी में ऐसे डूब चुके हैं और दुन्या हमें इतनी प्रिय हो चुकी है कि इसके कमाने, बनाने और संवारने में हमें हलाल व हराम का कोई भेद नहीं रहा। हम भूल जाते हैं कि यह दुन्या मिटने वाली है और इसकी हर चीज एक न एक दिन फ़ना होने वाली है।

सूर–ए–रहमान में इरशाद होता है : तर्जुमा : **जो कुछ ज़मीन पर है वह फ़ना होने वाला है और तुम्हारे रब की ज़ात बाक़ी रहेगी।"**

इस दुन्यावी जिन्दगी (सांसारिक जीवन) को बेहतर से बेहतरीन बनाने के लिए हम मज़बूत अर्थ–व्यवस्था के नाम पर बड़े–बड़े प्रोग्राम बना लेते हैं, योजना बनाते हैं किन्तु योजना बनाते समय यह ध्यान नहीं देते हैं कि इसके द्वारा हमारे पेटों में हलाल रोज़ी जायेगी अथवा हराम।

जिन्हें परलोक की चिन्ता नहीं है वह दुन्या को लूटने, समेटने, ज़खीराः अन्दोज़ी करने, रिश्वत लेने और देने और तबाही का कारण बनाने वाले अन्य कार्यों में व्यस्त हैं।

अल्लाह का कानून भी ऐसा है कि वह ऐसे लोगों की रस्सी को ढील देता है, दुन्या उनकी झोली में डाल देता है लेकिन अन्ततः उन्हें जहन्नम का ईंधन बना देता है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया :

'बेशक अल्लाह दुन्या उसको देता है जिसे वह पसंद करता है और पसंद नहीं भी करता है किन्तु दीन सिर्फ उसी को देता है जिसे वह पसंद करता है। जिसे अल्लाह ने दीन दिया बेशक उसने उस को पसंद किया।"

अच्छी और मज़बूत अर्थव्यवस्था वही है जो नेशन के आचरण को उठाने, कथनी व करनी में समानता पैदा करने तथा नैतिक मूल्यों को संवारने और उजागर करने का कारण और साधन बने।

रोज़ी अथवा अर्थव्यवस्था का अर्थ है जीवित रहना, परन्तु जब रोज़ी के साधनों में हराम की मिलावट होगी, जो मानवता के प्रति सहानुभूति से खाली होंगे, जिन पर अत्याचार व अनाचार और लूट–खसोट का रंग चढ़ा होगा, जो तुष्टि और संतोष से वंचित रखने वाले होंगे, वह एक मज़बूत व टिकाऊ अर्थ–व्यवस्था की ज़मानत कैसे दे सकते हैं, उनके द्वारा नैतिक मूल्य कैसे संवर सकते हैं और उजागर हो सकते हैं।

इस्लाम ने इसी बिन्दु पर बल दिया है कि कमाई हलाल की होनी चाहिए, भले ही थोड़ी हो। इस थोड़ी कमाई में बरकत व बढ़ोतरी होगी। इससे पलने वाली औलाद नेक और खुदा से डरने वाली होगी, वह जहन्नम से बचाकर जन्नत का मालिक बनाने वाली होगी। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पहले अपना नमूना प्रस्तुत किया फिर अपने साथियों के मन–मस्तिष्क में यह बात बैठा दी।

यही अंतर है इस्लामी और गैर–इस्लामी अर्थव्यवस्था में। इस्लामी अर्थव्यवस्था की बुन्याद हलाल कमाई पर है जबकि गैर–इस्लामी अर्थव्यवस्था में हलाल व हराम का कोई अंतर नहीं है। जो अर्थ व्यवस्था सूदी लेन–देन, अंग्रेजों की ज़ालिमाना कर–व्यवस्था और अनुचित कस्टम डयूटी के अधीन होगी वह अल्लाह और उसके अन्तिम रसूल सल्ल० पर ईमान व यक़ीन रखने वालों के लिए कभी भी लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकती।

हमारे यहां बहुत से ऐसे लोग हैं जो गैर कौमों के भौतिक विकास को देख कर बड़े प्रभावित हो जाते हैं किन्तु उनके नैतिक पतन की ओर उनकी निगाह नहीं जाती। ऐसे लोगों के लिए निवेदन है कि अल्लाह को इस बात की परवाह नहीं कि हम हलाल कमायें अथवा हराम उसको तो हमें बदला देना है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमायाः

"न ही मुख़्तारे कुल (सर्वेसर्वा) बल्कि उसने तकदीरे मुब्रम (अटल) को अपने हाथ में रखा और तकदीरे मुअल्लक़ (अधर) को हमारे सुपुर्द कर दिया।"

दूसरे शब्दों में मौत और जिन्दगी, दुर्घटना और बीमारी तथा रोज़ी और सन्तान के मामले को अपने कब्ज़े में रखा, बाकी सांसारिक जीवन को संवारने अथवा बिगड़ने का इख़्तियार हमें दे दिया।

इस्लामी अर्थ व्यवस्था की जब भी

बात हो तो यह ख़याल रहना चाहिए कि हम हलाल कमाई की बात कर रहे हैं। हराम कमाई की इस्लामी अर्थव्यवस्था में कोई गुंजाइश नहीं।

हलाल कमाई की तलब अल्लाह के निर्धारित कर्तव्यों के बाद एक कर्तव्य है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया:

"बेशक अल्लाह पाक है वह सिर्फ पाक ही को कबूल फरमाता है।"

"जिस व्यक्ति ने दस दिरहम का कपड़ा खरीदा उनमें एक दिरहम हराम था, अल्लाह उसकी नमाज़ को उस समय तक कबूल नहीं करेगा जब तक वह कपड़ा उसके शरीर पर होगा।"

"क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े: में मुहम्मद सल्ल० की जान है बेशक बन्दा जब अपने पेट में हराम का लुक़्म: डालता है तो चालीस दिन तक उसके अ़मल (कर्म) क़बूल नहीं किये जाते।"

"ऐसा नहीं होता कि कोई बन्दा हराम माल कमा कर उसमें से सदक़: करे और अल्लाह उसे कबूल कर ले या खर्च करे और उसमें बरकत हो और जो कुछ भी वह पीछे छोड़ता है वह जहन्नम की तरफ ले जाने के लिए कर्म की गठरी होगी।"

"वह (एक व्यक्ति) लंबी यात्रा करता है, उसके बालों में गर्द और गन्दगी अट जाती है, अपने हाथों को लंबा करके या रब ! या रब !! कह कर दुआ माँगता है, हालांकि उसका खाना हराम, उसका पीना हराम, उसका कपड़ा हराम से बना हुआ, उसका पालन–पोषण हराम के साथ हुआ, फिर उसकी दुआ कैसे कबूल होगी?"

अल्लाह तआला का इरशाद है :

"ऐ इमान वालो! इस्लाम में पूरे–पूरे दाख़िल हो जाओ, और तुम शैतान की पैरवी मत करो। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" *(सूर–ए–बक़र : २०८)*

अनुवाद : मो हसन अंसारी

❑❑❑

अज़ान क्या है?

– अली मियां (रह०)

नमाज़ के एलान का नाम है अज़ान। नमाज़ के एलान के लिए और नमाज़ के बुलावे के तौर पर जो वाक्य कहे जाते हैं उसमें इस्लाम के उद्देश्य, अद्वैतवाद (तौहीद) की पहचान और दीन का सार और निचोड़ आ गया है। अज़ान में इस्लाम का सारांश और खुलासा है। अज़ान अल्लाह की बड़ाई का एलान भी है कि वह हर बड़े से बड़ा है, फिर इसमें तौहीद व रिसालत भी मौजूद है। अज़ान में नमाज़ की हाज़िरी की दावत और पुकार है। इस्लाम में नमाज़ इबादत का विशिष्ट रूप है। नमाज़ लोक–परलोक दोनों की भलाई का रास्ता है। अज़ान के शब्द मन–मस्तिष्क दोनों को एक साथ संबोधित करते हैं, मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों को आकर्षित करते हैं। सुस्त आदमी में चुस्ती पैदा करते हैं और गाफिल को होशियार करते हैं। अज़ान पांच वक़्त मस्जिदों में बुलंद आवाज़ से कही जाती है और जिसकी गूंज से कोई गांव कोई शहर और मिली–जुली आबादी वाली कोई बस्ती मुश्किल से खाली होगी। अज़ान कहने वाले को मुअज़्ज़िन कहते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल (रज़ि०) थे।

अज़ान के शब्द उनके कहने की विधि और उनका अनुवाद इस प्रकार है :

अज़ान	मायने (अर्थ) क्रमानुसार
१. अल्लाहु अक्बरुल्लाहु अक्बर (एक साथ) अल्लाहु अक्बरुल्लाहु अक्बर (एक साथ)	१. अल्लाह सबसे बड़ा है। (चार बार)
२. अशहदुअल्ला इलाहइल्लल्लाह अशहदुअल्ला इलाहइल्लल्लाह	२. मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है।
३. अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह	३. मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।
४. हय्य अलस्सलाह, हय्य अलस्सलाह (अलग–अलग)	४. आओ नमाज़ की तरफ।
५. हय्य अ़लल्फ़लाह, हय्य अल्ल फलाह (अलग–अलग)	५. आओ सफलता की तरफ।
६. अल्लाहु अ़क्बरुल्लाह अक्बर (पहले की भांति)	६. अल्लाह सबसे बड़ा है।
७. ला इलाह इल्लल्लाह (इल्लल्लाह)	७. नहीं है कोई माबूद सिवा अल्लाह के।

"सुबह की अज़ान में **हय्य अ़ल्लफलाह** के पश्चात **अस्सलातु ख़ैरूम्मिनन्नौम** दो बार और कहते हैं जिसका अर्थ है "नमाज़ सोने से बेहतर है।"

❑❑❑

घरेलू जीवन ही असल जीवन है

– मुस्तफ़ा अस्सबाई (दमिश्क)

घर की शांति और ख़ुशी मेरे विचार में इस संसार का सबसे बड़ा सुख है और घर का असंतोश और असहमति सबसे बड़ा दुख। जो व्यक्ति घर में प्रसन्न रहता है वह बाहर भी प्रसन्न रहेगा और जो अपने घर में दुखी और असन्तुष्ट रहता है वह बाहर भी रंजीदा और परेशान नज़र आएगा। यूरोप के लोगों का विचार है कि यदि किसी अपराध की जाँच करनी हो तो सब से पहले यह देखना चाहिये कि इस के पीछे किसी औरत का तो हाथ नहीं है। परंतु हम यह कह सकते हैं कि अगर हमें किसी सामूहिक समस्या और किसी अख़लाक़ी (व्यवहार) गिरावट की जाँच करनी हो तो हमें देखना चाहिये कि इस में घरेलू घटना और कारणों का कितना दख़ल है।

आज संसार में कितनी ऐसी घटनाएं और अपराध होते हैं जो देखने में इससे संबंधित मालूम नहीं होते हैं लेकिन जाँच से मालूम होता है कि इसका असल स्रोत यही घरेलू फ़साद था। इसमें किसी वर्ग या धर्म की विशेषता नहीं हर समाज में इस प्रकार की घटनाएं होती हैं विशेषतः उस वर्ग में जिस पर धर्म का प्रभाव अधिक नहीं है। यह चीज़ अधिक नुमायां (प्रकट) है। धर्म से मेरा तात्पर्य धर्म का वह दिखावटी और नाक़िस विचार नहीं जिस का दायरा केवल ज़ाहिरी चीज़ों तक सीमित है। इसलिए कि बहुत से दीनदारों के यहां भी हमें यह चीज़ अधिक मात्रा में नज़र आती है जिसकी वजह यह है कि इनका दीन चन्द धुंधली और बेजान रस्मों का संग्रह बन गया है जो उनके जीवन में कोई पवित्रता और रूह में विकास पैदा नहीं कर सकता।

एक चीज़ जो हमारे घरेलू झगड़ों और विवाहित जीवन की कठिनाईयों का बड़ा कारण है वह यह कि हमारे नौजवान कभी–कभी जज़्बात से त्रस्त होकर या किसी माली फ़ाइदे के लिए पत्नी के चुनाव में ज़रा जल्दबाज़ी से काम लेते हैं। बाद में यह पता चलता है कि पति पत्नी के स्वभाव, अभिरूचि, विचारों और ज़ेहनी सतह में बड़ा अन्तर है। कभी केवल सुन्दरता की बुन्याद पर लोग अपने जीवन साथी का चुनाव कर लेते हैं। परंतु यह वक़्ती जादू ख़त्म होते ही अन्दरूनी बदसूरती और अंतःकरण की बुराई जल्द ही ज़ाहिर हो जाती है।

बाज़ लोग चुनाव के समय एक दूसरे के मिज़ाज का सही अन्दाज़ा नहीं करते। यदि पति तेज़मिज़ाज, अधिक महसूस करने वाला और ज़रा–ज़रा सी बात उसको नागवार गुज़रती है तो पत्नी उसका ख़याल करने में लापरवाही करती है, जब वह बात करना चाहता है तो वह ध्यान नहीं देती है। एक के जवाब में दस सुनाती है। नतीजा क्या होता है ? झगड़ा असहमति और जंग। जैसे पत्नी लाल रंग पसन्द करती है लेकिन पति उसको सफ़ेद कपड़े पहन्ने का आदेश देता है या खाने की कोई चीज़ उसको पसन्द है लेकिन पति को वह पसन्द नहीं। वह चाहता है कि उसकी इच्छाओं और विचारों की वह दासी बनकर रहे। फलस्वरूप मनमोटाव पैदा होता है और धीरे–धीरे हर बात एक स्थाई विरोध का रूप ले लेती है।

एक और बात जो इन घरेलू झगड़ों में बड़ा दख़्ल रखती है वह यह है कि पत्नी अपने पति की ज़िम्मेदारियों, मसरूफ़ियतों, उसकी सामाजिक आवश्यकताओं और सामूहिक कर्तव्यों का सही अन्दाज़ा नहीं कर पाती। हो सकता है कि उसका पति एक राजनीतिक आदमी हो जिसको जनता के साथ सम्पर्क रखना पड़ता हो। हो सकता है वह कोई विद्वान हो जिस को लिखने पढ़ने और तक़रीर करने की ज़िम्मेदारी निबाहनी पड़ती हो, परंतु पत्नी उसकी मशग़ूलियत (व्यस्तता) से तंग रहती हो। उसके अध्ययन से उकता चुकी हो और उसके हाथ में हर समय किताब देख कर चिढ़ सी जाती हो। इमाम ज़हरी मशहूर आलिम गुज़रे हैं। उनकी बीवी जब उनको किताबों में तल्लीन पाती थीं तो कहती थीं कि यह किताबें मेरे लिए सवत से अधिक बढ़कर हैं। अतः अगर पत्नी का यह कर्तव्य है कि पति के साथ लगाव, प्रेम और बेतकल्लुफ़ी का बरताव रखे तो उसके साथ उसकी यह भी जिम्मेदारी है कि वह उस पठन–पाठन और सामूहिक मसरूफ़ियतों में रोड़ा न बने और उसके किसी काम और किसी कार्यक्रम में रुकावट न बने।

घरेलू कामों में पति की ज़रूरत से अधिक हस्तक्षेप भी हमारी घरेलू समस्याओं का एक बड़ा कारण है। बहुत से लोग छोटे बड़े काम में बिना ज़रूरत अपनी टांग अड़ाना चाहते हैं। यहां तक कि रसोई घर में पहुंच कर वह अपनी पत्नी को निर्देश देना शुरू कर देते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि पत्नी पति की

इन अनावश्यक और व्यर्थ हस्तक्षेप से उकता जाती है और दिनों दिन उसकी उकताहट और चिड़चिड़ेपन में वृद्धि होती जाती है। यदि पति को इसका अधिकार है कि पत्नी से अपनी इच्छानुसार खाना पकवाएं तो इस का यह अर्थ नहीं कि वह उसके सिर पर सवार होकर उसको खाना पकाने का ढंग भी सिखाया करे।

दूसरी ओर पत्नी कभी–कभी पति की माली दशा और उसकी पोज़ीशन का सही अन्दाज़ा नहीं कर पाती। वह चाहती है कि जिस तरह के कपड़े उसकी सहेली पहने थी, वह भी उसी तरह के कपड़े पहने। जो सामान या फ़र्नीचर उसके यहां था वह उस के यहां भी हो। वह इस पर ध्यान नहीं देती कि इसके पति की माली हालत और उसके पति की माली हालत में कितना अन्तर है। ख़ास तौर पर कपड़ों की ख़रीदारी के समय यह चीज़ अधिक प्रकट होती है। शादी में शरीक होने के लिए एक बेहतरीन नया सूट चाहिये। यदि फ़ैशन बदल गया है तो उसको नये फ़ैशन के अनुसार होना चाहिये जिसका नतीजा यह होता है कि पति को अतिअधिक परेशानी उठानी पड़ती है। उसके बजट का संतुलन बिगड़ जाता है। इस अवसर पर या तो वह उधार लेकर अपनी पत्नी की इच्छा पूरी करता है या फिर लड़ाई मोल लेता है और मन मोटाव पैदा हो जाता है।

दुर्भावना भी हमारी घरेलू शांति का बहुत बड़ा दुश्मन है। कुछ लोग अपनी पत्नी की अमानतदारी पर संदेह करने लगते हैं। यदि कभी उनके रुपय़े कम हो गये तो वह खोज करने के बजाय अपनी पत्नी पर संदेह करने लगते हैं और उसे बुरा भला कहने लगते हैं। फिर जब उनको याद आता है कि यह रुपये तो तुमने अमुक अवसर पर ख़र्च किये थे या किसी साथी को दिये थे तो उनको शर्मिंदगी होती है परंतु उस समय जब कटुता का बीज पड़ चुका होता है। यद्यपि कुछ एक स्त्रियां भी ऐसी हैं जिनको अपने पति का माल उड़ाने में विशेष मज़ा आता है और बिना किसी शरई (शास्त्रीय) कारण के ऐसा व्यवहार करती हैं। मैंने एक महिला को एक समारोह में कहते सुना कि जब कोई स्त्री अपने पति या अपने बेटे की जेब से कुछ रक़म उड़ा लेती है तो फ़रिश्ते प्रसन्नता से मुसकराने लगते हैं" यह सरासर ग़लत और ख़ुदा पर मिथ्यारोपण है।

कभी छोटी–छोटी चीज़े बड़ा रूप ले लेती हैं और बात का बतंगड़ बन जाता है। मैं एक ऐसे आदमी से परिचित हूं जिसकी अभी शादी हुई थी। वह एक बार बाज़ार से कुछ कपड़े ख़रीद कर लाया और अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने सूट के लिए यह कपड़ा लाया है। दूसरे दिन जब उसने पत्नी से इसके बारे में पूछा तो उसने मज़ाक में कहा कि हमने उसके कपड़े बना लिये। इस पर उसको इतना क्रोध आया कि उस ने पत्नी का बक्स खोला और उसमें से तमाम कपड़े निकाल कर तालाब में डाल दिये। फिर कैंची लेकर अपना मोज़ा ढूढने लगा कि उसको काट कर फेंक दे। पत्नी ने जब यह दशा देखी तो जल्दी से लाकर वह कपड़ा उसके सामने डाल दिया और बताया कि मैं तो केवल मज़ाक कर रही थी। आप सच समझ गए। मेरे विचार में इस सिलसिले में स्त्रीयों से अधिक पकड़ के योग्य मर्द हैं। इसलिए कि स्त्री तो मर्द की बात किसी न किसी तरह बर्दाश्त कर लेती है परंतु मर्द औरत का एक वाक्य भी सुनना गवारा नहीं करता। तेज़तर्रार और बढ़चढ़ कर बोलने वाली स्त्रियों की बात और है।

यह हमारे घरेलू कठिनाईयों और घरेलू उलझनों के कुछ कारण हैं। यदि हम दो तीन वास्तविकताओं को अपनी निगाहों के सामने रखें तो न केवल उलझनें दूर हो सकती हैं बल्कि और भी सारी समस्याएं हल हो सकती हैं।

1. हम विवाहित जीवन को एक सांसारिक संबंध समझते हैं। हमारा मापदण्ड सुन्दरता, धन और शुहरत हैं। हमें चाहिये कि इस रिश्ते को एक पवित्र धरोहर और परमेश्वर का वरदान समझें और पसन्द के समय दीन और चरित्र का मापदण्ड हमारे सामने रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि तुम औरतों से केवल सुन्दरता और ख़ूबसूरती की वजह से शादी न करो, हो सकता है कि उन की सुन्दरता और ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाये, तुम उनके माल व दौलत की वजह से उनसे शादी न करो, हो सकता है उनकी दौलत उनको घमण्डी और सरकश (उद्दण्ड) बना दे, तुम दीन की बुन्याद पर उनसे संबंध क़ाइम करो।
2. एक दीनदार और धार्मिक सिद्धांतों के मानने वाली क़ौम की हैसियत से जिस का धर्म अच्छे आचरण की शिक्षा देता है, हमारा फ़र्ज़ है कि हम अपने पतियों और पत्नियों के साथ अच्छे व्यवहार रखें। मैं उस व्यक्ति से घृणा करता हूँ कि घर से बाहर तो अच्छे व्यवहार और प्रसन्नचित होने का प्रदर्शन करता हो और घर में आते ही उसके माथे पर तेवरियां चढ़ जाती हों।
3. ख़ुदा ने हमें शादी के ज़रिये ऐसे रिश्ते में बांध दिया है जो ज़िन्दगी भर क़ाइम रहेगा। ऐसी सूरत में अगर पति अपनी पत्नी को भूल जाता है, पत्नी अपने पति की ओर से बेपरवाह हो जाती है तो इसका अर्थ यह है कि वह इस आजीवन बन्धन और पवित्र और सुकुमार रिश्ते का ख़याल नहीं कर रहे हैं। वह स्वार्थी हो गए हैं और

सहानुभूति और प्रेम के जज़्बात की जगह स्वार्थ और घृणा के जज़्बात ने ले ली है। प्राचीन युग की स्त्रियों का नियम बन गया था कि जब कोई मर्द घर से रोज़ी कमाने के लिए बाहर निकलता तो उसकी पत्नी या बेटी उससे कहती कि देखो हराम की कमाई से बचना। हम ग़रीबी और भूख सह सकते हैं परन्तु जहन्नम (नरक) की आग बर्दाश्त नहीं कर सकते। वह अपने पतियों को जिहाद और ख़ुदा की राह में निकलने को उत्साहित करती थीं। चुनानचः मर्दों को उनसे बड़ा बल मिलता था और उनका साहस पढ़ता था।

हज़रत अबुदहदाह अंसारी का क़िस्सा है कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या अल्लाह तआ़ला हमसे क़र्ज़ हसना चाहते हैं। आपने फरमाया हां। उन्होंने कहा आप अपना मुबारक हाथ कृपा करके दीजिये। आपने मुबारक हाथ बढ़ा दिया। उन्होंने कहा मैं आप को गवाह बना कर कहता हूं कि मैंने अपना बाग़ ख़ुदा की राह में दे दिया। उनके बाग़ में कोई छः सौ खजूर के पेड़ थे वहीं उनके बीवी बच्चों के रहने का स्थान था। फिर बाग़ में आए और अपनी बीवी को आवाज़ दी। बीवी ने कहा फरमाइये। उन्होंने कहा तुम सब इस बाग़ से हट जाओ। मैंने इसे अल्लाह की राह में दे दिया है। बीवी ने न उनको सख़्त सुस्त कहा न अचम्भे का प्रदर्शन किया। न अधिक पूछताछ की बल्कि वह बहुत अधिक प्रसन्न हुईं और कहने लगीं कि आपका व्यापार बड़ा सफ़ल रहा। फिर अपना सामान आदि वहां से उठा लिया।

इन घटनाओं के पेशेनज़र हमें हमेशा ज़ेहन में रखना चाहिये कि हमारी ज़िन्दगी, स्वास्थ और सआ़दतमन्दी (सुयोग्यता) इतनी सस्ती नहीं है कि उसको इन घरेलू झगड़ों पर भेंट चढ़ा दें। इन घरेलू झगड़ों में जितना समय, जितनी शांति और अपनी जितनी आसाबी कूवत (स्नायविक शक्ति) ख़र्च कर देते हैं, वह इन तुच्छ चीजों के मुक़ाबले में जिनके कारण हम यह झगड़े मोल लेते हैं बहुत अधिक क़ीमती हैं।

शांति और प्रसन्नता का ख़ज़ाना आपके घर में मौजूद है। यह बाज़ार से खरीदने की चीज़ नहीं। आप अपनी घरेलू ज़िन्दगी में शांति और प्रसन्नता पैदा कर लेंगे तो आप की सारी ज़िन्दगी शांति और सुख में व्यतीत होगी।

अनुवाद—हबीबुल्लाह आज़मी

❑❑❑

भूत क्या है?

— इदारा

एक औ़रत सर खोले बाल आगे लटकाए अजीब अन्दाज़ में झूम रही थी और कह रही थी : मैं मंगल कोरी हूँ, कुछ औ़रतें और मर्द उसे घेरे हुए थे, लोगों ने पूछा कि मंगल की जो गाए मर गई थी वह कहाँ से और कितने में लाय थे, उसने फौरन बताया, उसे मैं अहिरन पुरवा से पचास रुपयों में लाया था। एक शोर मच गया इसलिए कि यह बात सत्य थी। एक बार बाज़ार में मैंने खीरे लिए तो मंगल ने कहा भैया एक खीरा हम को भी खिलाओ, मैं ने फौरन एक खीरा दे दिया था मैं ने उस औ़रत से पूछा कि अगर मंगल हो तो बताओ फुलाँ बाज़ार में तुमने मुझ से क्या लिया था ? फ़ौरन जवाब दिया कि दो रुपये। मैं ने कहा झूठ तुम मंगल नहीं हो, मंगल ने तो मुझ से एक खीरा लिया था। खैर यह बात तो झूठ निकली लेकिन ऐसी अनेक बातें मालूम हुईं हैं जिन को मरने वाले के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था सिवाए उस सम्बन्धित व्यक्ति के जिस से उस का मुआ़मला हुआ था।

एक शख़्स इसी प्रकार झूम रहा था और एक मरने वाले मोहन का नाम ले रहा था कि मैं मोहन हूँ, इतने में मोहन का लड़का आ गया उस ने झूमने वाले शख़्स से कहा कि हमारे बप्पा कहते थे कि हमारे पास चान्दी के 500 रुपये हैं मैं आख़िर समय पर बताऊँगा कि कहाँ हैं। अगर तुम हमारे बप्पा हो तो बताओ उसने बताया कि रसोई घर में चूल्हे से एक हाथ ऊपर दीवार में मोहन के लड़के का कहना था कि मुझ को वह रुपये वहीं मिल गये जहाँ उसने बताया था यह बात कहाँ तक सत्य है। इसको तो मालिक ही जाने परन्तु मैं ने तो जब भी इस प्रकार की बातों को जाँचा तो झूठ ही पाया।

इस्लामी विश्वासों के अनुसार मरने वाले की आत्मा या तो जन्नत में चर चुग रही है जैसे शहीदों की आत्माएं या फिर इल्लीयीन में आराम कर रही हैं जैसे नेक लोगों की आत्माएं या फिर सिज्जीन में फंसी हुई है जैसे बुरे लोगो की आत्माएं।

फिर यह भूत क्या है ? यदि भूत की कोई वास्तविकता है तो यह क़रीन या हमज़ाद है। क़रीन या हमज़ाद की मालूमात के लिए अगला अंक पढ़िए।

❑❑❑

विवाहित जीवन और दीनी हिदायात (धार्मिक निर्देश)

– सैय्यद मुशताक़ अली नदवी

मानव इतिहास के प्रारम्भ से विवाह की व्यवस्था पुरुष और स्त्री के बीच पायी जाती है। यद्यपि इसकी सूरत और तरीकों में भिन्नता रही है। दीनी इतिहास से भी यह बात विस्तार से मालूम होती है कि अल्लाह तआला ने विवाह को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से ही शुरू कर दिया था।

यहूद

यहूद के अनुसार हर इस्राइली को शादी करना अनिवार्य है।

ईसाईयत

ईसाईयत की दीनी किताबों के अध्ययन से यह पता चलता है कि इसके नज़दीक शादी न करना। तथा ब्रह्मचर्य व सन्यास का जीवन व्यतीत करना उत्तम और उत्कृष्ट है। लेकिन दूसरे की स्त्री से संबंध (पर स्त्री गमन) के डर और वासनाओं को बस में न करने की स्थिति में विवाह की अनुमति दी गयी है।

इस्लाम

इस्लाम में शादी करना सुन्नत है और इसकी प्रेरणा दी गयी है और शादी को हलाल पवित्र ढंग से अपनी इच्छा पूरी करने और श्रेष्ठ व शरीफ ख़ानदान से सदाचारी औलाद प्राप्त करने और सुख शांति हासिल करने का साधन बताया गया है क्योंकि इस्लाम स्वाभाविक दीन है इसलिए वह शादी को स्वाभाविक आवश्यकता बताता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया" शादी करो ताकि तुम्हारी संख्या अधिक हो। मैं क़ियामत (महाप्रलय) में तुम्हारे ज़रिये दूसरे उम्मतियों पर गर्व करूंगा" और अल्लाह तआला ने निकाह को अपनी हिकमत नेअमत, रहमत (नीति, कृपा, अुनकम्पा) के बारे में कहा है कि – **अनुवाद**–इंसानी नस्ल जारी रहने का शादी एक मात्र रास्ता है और खानदानों और समाज के निर्माण में इस को बुन्यादी हैसियत हासिल है। और यदि खानदान की इमारत मज़बूत तैयार होगी तो बेहतरीन और मज़बूत समाज बनेगा। तो मालूम हुआ कि इस्लाम खानदान की फिक्र करता है इसलिए शादी की इतनी अहमियत है।

पति का चुनाव

इस्लाम ने सभी स्त्रियों को पति चुनने का अधिकार दिया है और इसमें किसी प्रकार की ज़ोर–ज़बर्दस्ती नहीं है, यहां तक कि वली (अभिभावक) को भी इसका अधिकार नहीं कि बालिग़ स्त्री अपनी पसंद के निकाह को निरस्त करें।

कुर्आन मजीद औरत को इस बात की अनुमति देता है कि वह अपनी शादी खुद करे और मर्दों पर पाबंदी लगाता है कि वह इसमें रुकावट न बनें। बहुत सी हदीसों से भी मालूम होता है कि निकाह के समय औरत से अनुमति लेना ज़रूरी है और मुसय्यिबः (बेवा या तलाक़ शुदा) पर तो आवश्यक है कि वह जबान से साफ–साफ कहे। हां कुंवारी के सिलसिले में यह है कि उसकी चुप्पी भी उसकी अनुमत समझी जाएगी क्योंकि लज्जा रूकावट बनती है।

पैग़ाम (ब्याह का संदेश)

चूंकि निकाह बहुत अहम अक़्द (प्रतिज्ञा) है इसलिए हर एक को अपने जीवन साथी चुनने में बहुत ही सावधानी बरतने को कहा गया है ताकि सही और अच्छा चुनाव हो सके। इसके लिए इस्लाम ने पैग़ाम को शुरू किया और इसके लिए भी यह इजाज़त दी कि हर एक दूसरे को देख लें और अपने किसी महरम (क़रीबी रिश्तेदार जिससे निकाह जाइज़ न हो) की मौजूदगी में उसके साथ बैठकर बातचीत भी कर ले। लेकिन इसकी इजाज़त नहीं कि सिर्फ तनहा वह कहीं जाए या मिलें क्योंकि इससे शक व संदेह को हवा मिलेगी और फिर उसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुग़ीरास रज़ी० बिन शुअबा को लौटा दिया था कि पहले जिसके लिए पैग़ाम दिया है उसको देख लें। आपने फ़रमाया उसको देख लो क्योंकि यह तुम्हारे दोनों के बीच सम्बन्ध को मज़बूत बना देगा।

एक से अधिक बीवियां

सबसे पहले तो यह बात साफ करना उचित होगा कि कई शादियों की अनुमति केवल इस्लाम में ही नहीं है बल्कि यह सभी पुरानी सभ्यताओं में भी रही है। सबसे पहले तौरैत में यह मौजूद है। फिर इंजील ने भी इसको जारी रखा सिवाए इसके कि कोई सन्यास इख़्तियार करे तो फिर एक से अधिक विवाह की इजाज़त नहीं है क्योंकि इसके साथ सन्यास का उद्देश्य हासिल न होगा।

शादी की संख्या अनगिनत होती थी परन्तु इस्लाम ने यह पाबंदी लगा दी कि चार से अधिक न होना चाहिए और यदि किसी के पास चार से अधिक हों तो चार को छोड़कर शेष को तलाक़ दे दे। लेकिन

इस्लाम के नजदीक बेहतर और पसंदीदा केवल एक ही शादी है। इस्लाम ने एक से अधिक शादी की इजाज़त केवल लज़्ज़त और काम इच्छा (ख़ाहिशे नफ़्स) की पूर्ति के लिए नहीं दी है क्योंकि ऐसे लोग अल्लाह की नज़र में पसंदीदा नहीं हैं।

एक से अधिक शादी के कुछ उचित इंसानी कारण :

१. यह बात मानी गयी है कि बच्चे–बच्चियों के मुक़ाबले में अधिक मौत के शिकार होते हैं और फिर इस तरह आगे भी होता है क्योंकि मर्दों के कन्धे पर ऐसी ज़िम्मेदारियां डाल दी गयी हैं जिसकी वजह से बहुत खतरों और मौत का सामना करना पड़ता है और फिर इसके साथ यह बात भी है कि मर्द बहुत से कारणों से बीस साल के बाद शादी करने के योग्य होता है जबकि लड़कियां बालिग़ होने के साथ ही शादी के योग्य हो जाती हैं यदि एक ही की कैद लगा दी जाए तो स्त्रियों की एक बड़ी संख्या बिना विवाह के रह जाएगी।

२. जंग की समाप्ति पर अक्सर ऐसा होता है कि मर्दों की संख्या कम रह जाती है और यदि एक ही शादी पर निर्भर रहे तो फिर दूसरी औरतों का क्या होगा।

३. बाज़ हालतों और ख़ास माहौल में जब कुछ ऐसी आर्थिक आवश्यकताएं होती हैं कि मर्द इसमें कई काम करने वालों का मोहताज होता है तो एक से अधिक विवाह से यह मसला हल हो जाता है।

कुछ विशेष कारण

१. कभी ऐसा भी होता है कि आदमी किसी ऐसी औरत से शादी करता है जो उसे पसंद है लेकिन वह बांझ है और अब उसकी यह इच्छा है कि उसकी औलाद हो जिससे उसका नाम और वंश चले तो यह बेहतर है कि पहली बीवी को रखते हुए दूसरी शादी करे या यह कि वह पहली को नामुराद और मायूस छोड़ दे।

२. और मैं उन औरतों से पूछता हूं कि क्या औरतें इस बात पर सहमत हो सकती हैं कि वह शादी शुदा मर्द से निकाह न करेंगी और यदि कोई ऐसा करती है तो फिर ऐब किस में हुआ? और क्या शादी शुदा औरत यदि अपने पति से कोई और अच्छा मर्द पाए तो क्या उससे वह शादी करेगी ?

कुफ़ू

कुटम्ब को मज़बूत और पुख़्ता बनाने वाला एक महत्वपूर्ण नियम "किफ़ाअत" है अर्थात पति सामूहिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, माली और खानदानी हैसियत से बीवी के बराबर और योग्य हो और उससे उद्देश्य औरत का सम्मान और हैसियत को उत्तम बनाना हो और जहां इस्लाम शौहर के लिए यह शर्त लगाता है कि अपने जीवन साथी से किसी हैसियत से कम न हो, वहां वह औरत को मर्द का कुफ़ू मानता है क्योंकि यदि बीवी की कम हैसियत है तो उससे मर्द की अवमानना न होगी लेकिन यदि मर्द कम रूतबे का है तो फिर औरत के लिए यह अवमानना की बात होगी।

महर

सूर–ए–निसा में हुक्म दिया गया है कि बीवी को महर दिया जाए और यह बात साफ़ कर दी गयी है कि यह क़ीमत या उजरत (परिश्रमिक) नहीं बल्कि यह प्रेम और सम्बन्धों को मज़बूती पैदा करने क लिए खुलूस (शुद्ध हृदयता) की सौगात है। महर कुर्आन व सुन्नत से साबित है और जिस पर उलमा सहमत (मुतफ़िक़) है। यह कम से कम दस दिरहम होना चाहिए और अधिक से अधिक की कोई सीमा नहीं। यद्यपि बेहतर और उचित है कि महर बहुत ज़ियादा न रखा जाए क्योंकि बहुत से नौजवान माली हालत से कमज़ोर होते हैं और कर्ज़ और ख़राब दशा के डर से शादी न कर सकेंगे। अतः फ़रमाया गया "महर की कमी बरकत का कारण है। महर केवल बीवी का हक है और उसको खर्च करने का उसे पूरा अधिकार है। शौहर इससे भारमुक्त नहीं हो सकता जब तक कि वह अदा न कर दे या बीवी माफ़ कर दे।

नान नफ़का (खाना कपड़ा)

इस्लाम ने शौहर पर अपनी बीवी के लिए रोटी–कपड़ा, रहने के लिए घर, नौकर आदि का प्रबन्ध करना अनिवार्य किया है चाहे वह बीवी मालदार ही क्यों न हो। अक़्द (शादी) के बाद ही से इस पर यह चीज़ें अनिवार्य हैं और यदि शौहर इसका प्रबन्ध नहीं करता है तो बीवी का अधिकार है वह शौहर के खिलाफ मुकदमा दायर करके तलाक मांगे और उसको तलाक दी जाए तो इस्लाम उसके लिए इद्दत के समय तक खाना–कपड़ा और खर्च देना ज़रूरी करार देता है अर्थात खाना–कपड़ा के अतिरिक्त पति–पत्नी को कुछ और खर्च दे ताकि वह अपना प्रबन्ध कर सके।

अच्छा व्यवहार

इस्लाम अच्छे व्यवहार का मर्द व औरत दोनों को बलपूर्वक आदेश देता है क्योंकि नर्म व मीठी बातचीत, उचित हंसी–मज़ाक, खुशी और तोहफ़ा, सौगात देने से वैवाहिक सम्बन्ध बहुत अच्छे और मज़बूत होते हैं। यद्यपि कुछ लोग उसको महत्व नहीं देते। देखा जाता है कि बाज़ शौहर अपनी बड़ाई जताने के लिए कठोर आदेश, मारपीट और तकलीफ़ देने को आवश्यक समझते हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी बीवी बच्चों को बिल्कुल बेसहारा छोड़ देते हैं लेकिन इस्लाम के नज़दीक दोनों बातें ना पसंदीदा (अवांछनीय) है बल्कि वह चाहता है कि आदमी की शक्ति प्रेम और सहानुभूति का सुन्दर मिलाप हो। कुर्आने मजीद और नबी (स०) की हदीसों में ऐसे बहुत से निर्देश हैं जिससे सद्व्यवहार की महत्ता

और आवश्यकता का अंदाज़ा होता है और जिनसे ख़ानदान और बाग़–ओ–बहार बन सक़ता है।

पत्नी के अधिकार

तमाम जाहिली क़ौमों और सभ्यताओं में औरतों को कमतर क़रार दे दिया गया था लेकिन इस्लाम ने औरतों को निम्नवत अधिकारों से सम्मानित किया :–

१. निकाह के समय उसकी रज़ामंदी (अनुमति) ज़रूरी होना।

२. उपरोक्त विस्तार के अनुसार उससे अच्छा व्यवहार करना।

३. उसको अपना जीवन साथी और वैवाहिक जीवन में बराबर का भागीदार समझना।

४. उसको आवश्यकतानुसार खाना, कपड़ा और ख़र्च दिया जाए।

५. उसकी इच्छाएं और जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करना शौहर के लिए ज़रूरी है।

मर्द के अधिकार

यह नियम है कि अधिकार के साथ ज़िम्मेदारियां भी होती हैं तो बीवी पर भी निम्नलिखित ज़िम्मेदारियां लागू होती हैं–

१. बिना उसकी अनुमति के घर से न निकले।

२. अपने शौहर की पूरी आज्ञा पालन करे जब तक कि पाप का हुक्म न दे, क्योंकि पाप के बारे में पैदा करने वाले अर्थात अल्लाह का हुक्म चलेगा किसी बन्दे का नहीं और यह कि घर में उसकी बड़ाई को स्वीकार करे।

३. अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के आदेशों के अनुसार औलाद का पालन–पौषण करे क्योंकि मां की गोद ही बच्चे की पहली तर्बियतगाह (प्रशिक्षणस्थल) होती है जिसमें उसका पालन–पोषण होता है और जब यह कहा जाता है कि महान व्यक्तियों के पीछे कोई औरत होती है तो वह मां ही होती है।

४. अपने हाल पर संतोष करे और शौहर के माल की सुरक्षा करें और उसमें से अपनी आवश्यकतानुसार खर्च करे और उसकी अनुमति के बिना किसी को उसका धन न दे।

५. घरेलू काम में उसका हाथ बटाए और उसकी ज़रूतों पर ध्यान दें।

६. अपने शौहर के लिए बनी–संवरी रहे।

७. मधुर बोली और अच्छे आचरण से अपने को सुसज्जित करे क्योंकि शारीरिक सुन्दरता तो उम्र बीतने के साथ समाप्त हो जाती है लेकिन अच्छे आचरण और व्यवहार की सुन्दरता कभी कम नहीं होती।

८. सफ़ाई–सुथराई, पवित्रता, शुद्धता का ख़याल रखें।

९. यदि पति किसी कारण नाराज़ हों तो उसे मनाए।

१०. पति के साथ मामला और व्यवहार अच्छे से अच्छा करे।

११. पति के स्वभाव, विचार और जज़्बात का पूरा–पूरा ख़याल रखे और सदा उसकी वफादार रहे।

१२. आबरू, पवित्रता, अमानत का दामन न छोड़ें। अपनी निगाह और लिबास तक में सावधानी बरते।

१३. यदि पति का इंतिक़ाल (देहांत) हो जाए तो चार माह दस दिन इद्दत गुज़ारे अर्थात चार माह दस दिन तक पुनः विवाह न करें।

तलाक़

वैवाहिक जीवन में भी कभी–कभी आँधियां आती हैं जिनसे जीवन में बेचैनी पैदा हो जाती है जिसके फलस्वरूप मियां–बीवी के बीच मतभेद पैदा हो जाता है। यदि पति नीति और सब्र धैर्य और नियंत्रण से काम लें तो बहुदा तूफान सकुशल गुज़र जाता है और पहले जैसी शांति संतोष और रूचिकर माहौल लौट आता है। लेकिन यदि नीति और नियंत्रण से काम न लिया गया तो फिर उसका नतीजा लड़ाई और फिर तलाक़ होता है जिस पर अल्लाह तआला ने अपनी नापसंदी प्रकट की है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि अल्लाह के नज़दीक तलाक़ हलाल चीज़ों में सबसे बुरा हलाल है।"

– (अबू दाऊद)

इस्लाम ने ऐसी दशा में खानदान के लिए नीति और बर्दाश्त के तरीक़े बतायें है जिन पर यदि पति पत्नी अमल करे तो फिर तलाक की घटनाएं बहुत कम हों और विवाहिक जीवन को फिर पहले जैसा रखा जा सकता है।

यदि गलती औरत की तरफ से है तो इस्लाम उसका उपाय यह बताता है :–

सबसे पहली चीज़ नसीहत, नर्मी मीठे बोल क्योंकि बहुत संभव है कि इससे उसके शैतानी शुबहे दूर हो जाएं। दूसरा तरीक़ा यह है कि बिस्तरों पर रहकर निकट न हो क्योंकि इस दशा में उसकी आत्मा उसको धिक्कारेगी और यदि ज़रा भी ज्ञान है तो उसको बुद्धि आ जाएगी परन्तु यदि दोनों तरीक़े सफ़ल न हों तो सुनहरा रास्ता डांट–डपट है लेकिन इस में ज़ियादती और कठोरता न हो हज़रत मु० सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : न चेहरे पर मारो और न अधिक मारो।" **(अबू दाऊद)**

यदि ग़लती मर्द की तरफ़ से है तो इस्लाम औरत को आदेश देता है कि वह अपनी तेज़ बुद्धि और हिक़मत (नीति) से काम लेकर शौहर को मनाने की कोशिश करे लेकिन यदि लड़ाई बढ़ती ही रहे तो फिर खानदान के समझदार लोग इकट्ठा हों ताकि दोनों के बीच सुलह–सफ़ाई करा दें।

*अनुवाद–**हबीबुल्लाह आज़मी***

"परसंतापी सदा दुखी"
अतः उदारता अपनाएं।

सामूहिक जीवन और उसके तक़ाज़े

– मुहम्मदुल हसनी रह०

दृष्टिकोण में भिन्नता के बावजूद (जो एक स्वाभाविक चीज़ है) सामूहिक जीवन में कुछ आदाब (शिष्टाचार) और तक़ाज़े हैं, जिनको हमें पूरा करना चाहिए। न केवल इस्लाम की तालीम और शरीअत का निर्देश है बल्कि सुशील स्वभाव और मानवता के उन अच्छे आचरण मूल्यों की भी मांग है जिन को कुर्आने मजीद में "अलमअ़रूफ" से बार–बार बताया गया है। अर्थात अच्छाई के साथ सभ्यता और सहानुभूति के साथ, विधान के अनुसार। हमारा दुर्भाग्य है कि हम मुसलमान इन खूबियों से दूर होते जा रहे हैं।

इस्लाम की सामूहिक जिन्दगी केवल ज़ाहिरी रख–रखाव या किसी तकनीक का नाम नहीं है। इसमें अपने विश्वास और सिद्धांतों पर मजबूती से जमने की दावत है और दूसरी तरफ सामूहिक तकाज़ों को मानने और सहनशीलता से भी काम लेने की हिदायत है।

सूरतुलअस्रि में इस तथ्य को साफ–साफ स्पष्ट रूप में बयान किया गया है।

अनुवाद : **"कसम है ज़माने की बेशक इंसान घाटे में है सिवाए उनके जो ईमान लाएं और सदाचारी कर्म किये और एक–दूसरे को वसीयत की हक़ की और एक–दूसरे को वसीयत की सब्र की।"**

सब्र एक व्यापक शब्द है जिसका सम्बन्ध अल्लाह के हक से भी है और मनुष्यों के हक से भी। इसमें विभिन्न चीज़े आती है, पाप से दूर रहना, वासनाओं को काबू में रखना भी सब्र है। कड़वी बात सुन लेना या अपनी बात नीचे कर लेना भी सब्र है। आलोचना और द्वेष से बचना भी सब्र है। अपने स्वभाव और आदत के खिलाफ करना भी सब्र है। कहने का तात्पर्य यह है कि सब्र के हज़ार रूप हैं और हर व्यक्ति ज़रा से ध्यान देने पर यह महसूस कर सकता है कि उसको किस अवसर पर किस प्रकार का सब्र करना है।

देखने की बात यह है कि सामूहिक जीवन की उन पेचीदा समस्याओं में हमारा व्यवहार एक–दूसरे के साथ क्या होना चाहिए।

हम में से हर व्यक्ति एक प्रमुख जज़्बा और विचार रखता है। न केवल उसकी विचार धारा और स्वभाव बल्कि बात करने का ढंग और उठने–बैठने का अंदाज़ भी एक–दूसरे से अलग होता है। अतः हमें पहले दिन से यह सोच लेना चाहिए कि इस घाटी में क़दम रखने के बाद यह विभिन्नता पग–पग पर प्रकट होगी और इससे वास्ता बारबार पड़ेगा।

इस सब्र और सहनशीलता की सीमा भी इस्लाम ने निश्चित कर दी। मसलहत, सहयोग और बर्दाश्त और धैर्य किन जगहों पर उचित है और किन जगहों पर अनुचित। वह सीमा क्या है जिसके बाहर बाल बराबर भी हमको कदम नहीं रखना चाहिए। हमें किस जगह जमना चाहिए किस जगह जमना नहीं चाहिए। इन सब चीज़ों के लिए "तवासौ बिल हक़" की रौशनी कुर्आने मजीद ने हमारे हाथ में दे दी। जहां हक सच्चाई, सिद्धांत और बुन्यादी सच्चाईयों के हनन का खत्रा हो वहां अपने दृष्टकोण पर उसी तरह जमे रहना चाहिए कि कोई दबाव या प्रलोभन या धोखा हमको विचलित न कर दे। परन्तु यदि हम महसूस करते हैं कि विचारों की इस विभिन्नता के फलस्वरूप बुन्यादी सिद्धांतों और सत्यता को कोई खतरा नहीं लेकिन समुदाय के हितों के लिए खतरा है तो हमें अपने दृष्टिकोण और कार्य के ढंग को बदलने में तनिक भी हिचकिचाहट न होना चाहिए इससे चाहे हमारे हितों को ही हानि पहुंचती हो।

हज़रत अ़ली (रज़ि०) की मशहूर घटना इस बारे में हमारे लिए प्रकाश का मीनार है। हज़रत अली (रज़ि०) उस समय तक यहूदी को ज़ेर किये रहे जब तक उन्हें इस बात का यक़ीन था कि वह हक़ (सत्य) के लिए लड़ रहे हैं लेकिन जब उसने उनके मुंह पर थोक दिया तो स्वाभाविक तौर पर उनको बहुत गुस्सा आया परन्तु इसी गुस्से से उनको आभास हुआ कि अब वह उसकी हत्या करेंगे तो अपनी ज़ात के लिए करेंगे। चुनांचे उन्होंने यह कहक उसको छोड़ दिया कि पहले मैं हक़ (सत्य) के लिए लड़ रहा था परन्तु यदि अब लड़ूँगा तो वह अपने नफ़्स (अपनी ज़ात) के लिए होगा। लिहाज़ा (अतः) मैं तुमको छोड़ता हूं। सच्चाई और अपने नफ्स (अस्तित्व) की यह सीमाएं या लकीरें हमें अपने सामूहिक कामों में बार– बार मिलती और गडमड होती नज़र आएंगी लेकिन असलियत यह है कि विभाजन सीमाएं या लकीरें गडमड नहीं होतीं बल्कि अक्ल की कमी की वजह से हम इस विभाजन रेखा को अच्छी तरह समझ नहीं पाते।

यदि हम इस आयत को सामने रखें और उसको अपने जीवन और कोशिशों का तौर–तरीका बना लें।

अनुवादः **"हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरा समझो और वह तुम्हारे हक में अच्छी हो, इसी प्रकार यह संभव है कि तुम किसी चीज़ को अच्छा समझो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो।"**

तो हमारी घरेलू समस्याएं और रोज़मर्रह

के मामलों से लेकर बड़ी–बड़ी विवादित और राजनीतिक (सियासी) समस्याएं अच्छी तरह हल हो सकती हैं।

राय का इख़्तिलाफ़ उसी समय बड़ा रूप ले सकता है जब स्वार्थ से स्वार्थ टकराता है। यदि स्वार्थ का यह अंश निकाल लिया जाए तो यह सब मुख़ालफ़त अपने आप समाप्त हो जाएगी जो मिल्लते इस्लामिया (इस्लामी समुदाय) को घुन की तरह खाए जा रही है और इसके सुधार और उन्नति में सबसे बड़ी रुकावट बन गयी है।

दूसरों की खूबियों को पहचानना एक हुनर है और उनको खुले दिल से स्वीकार करना उससे बड़ा हुनर है। अमली (व्यवहारिक) मैदान में कदम रखने के बाद हमें अपने इस हुनर (कला) पर मेहनत करने की आवश्यकता है ताकि सहयोग का मार्ग अधिक से अधिक सरल हो सके। इसमें शक नहीं कि इस समय पूरा इस्लाम जगत इन विरोधी विचारों का शिकार है। लेकिन भारत का वह उत्पीड़ित समुदाय जो अपने संयुक्त हितों में इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि विचारों में विरोध की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जहां सब दल और संस्थाएं और समाचार पत्र व मासिक पत्रिकाएं एक कश्ती (नाव) के सवार हैं और सबको एक लाठी से हांका जा रहा है, जहां दीनी एवं राजनीति नेतृत्व को संयुक्त समस्याओं का सामना है और जहां नयीं और ताज़ादम नेतृत्व और मिल्लत को नयी राहों और नयी मंज़िलों से परिचित कराने की दावत बड़ी सहनशीलता की शक्ति और उदारता चाहती है, वहां व्यक्तिगत विरोध और स्वभाव व रुचि का अंतर और विभिन्न स्वभावों और तर्बियतों को साथ लेकर काम करने का अभाव और जज़्बाती मामलों में चरमपंथी, अपनी राय अपने फैसले बल्कि अपनी इच्छा, अपनी पसंद और अपने मिज़ाज पर ज़रूरत से अधिक भरोसा दूसरों की राय की उपेक्षा करना या महत्व न देने का रवैया और अपने दृष्टिकोण को पत्थर की लकीर समझना हमारे सामूहिक जीवन की वह कमज़ोरियां हैं जो अब साफ नज़र आती हैं और इनसे मिल्लत के महत्वपूर्ण कामों को बहुत हानि पहुंच रही है।

यह वह रोग है जिससे हम सब पीड़ित हैं। हम सब अचेतन में यह समझते हैं कि कि सत्य का आखिरी चित्र और समस्या का अस्लगिरह हमारे हाथ में है और दूसरा इस समय को हमसे बेहतर समझने या इसमें हमसे अच्छी राय रखने से असमर्थ है और यही वह बुन्यादी गलती है जिस ने मुसलमानों के संयुक्त कार्यों को हमेशा नुकसान पहुंचाया है।

दूसरों की जांच पड़ताल से पहले अपनी जांच आवश्यक है। सामूहिक जीवन के इन तकाज़ों को पूरा करने का पहला कदम है। यह केवल सामूहिक काम करने वालों के लिए नहीं बल्कि हर मोमिन के लिए ज़रूरी है और इस्लाम का स्रोत और ईमान का तक़ज़ा है।

अनुवाद–हबीबुल्लाह आज़मी

❑❑❑

सबै सहायक सबल के,
कि कोऊ न निर्बल सहाए।
पवन जगावत आग को,
कि दीयहिं देतु बुझाए।।
सब निर्बल मिल बल करें,
करें जो चाहें सोए।
तिनकन की रसरी बरी,
करी निबंधन होए।
करी = हाथी, निबंधन = बन्धन में
रहिमन नीचन संग बस
लगत कलंक न काहि
दूध कलारिन हाथ लख
मद समझें सब ताहि
कलारिन = कलवारिन
अर्थात मद (मदिरा) बेचने वाली

इस्लाम

"इस्लाम हिकमत व नसीहत, न्याय और इंसाफ क्षमा व दरगुज़र, अदब व एहतराम, बुजुर्ग व प्रतिष्ठा और शक्ति व सामर्थ्य के स्रोत का धर्म है जिसकी ऊँचाई को दुन्या का स्वरचित कोई कानून और व्यवस्था नहीं पहुंच सकती। क्योंकि इस्लाम धर्म में मनुष्य के स्वाभाविक तक़ाज़ों को दृष्टिगत रखते हुए मानवता (बशरीयत) की तमाम ज़रूरतों का पूरा ध्यान रखा गया है।

– शाह फ़ैसल शहीद

❑❑❑

कॉमेंट्री के रोगी

डा. सूरज मृदुल

एक बार जब हम 'एम.बी.ए.' में थे, उस समय एक दिन मैं एक प्रोफेसर का लेक्चर उनके क्लास में सुन रहा था। बड़ी तन्मयता से वह पढ़ा रहे थे और हम भी सहपाठियों के साथ पढ़ रहे थे। इसी बीच उन्होंने चुपके से 'पॉकेट–ट्रांजिस्टर' निकाला और 'क्रिकेट का स्कोर' सुनने लगे। तभी वह एकाएक 'आउट–आउट' कहकर चिल्ला पड़े, जिससे सारे क्लास के विद्यार्थी भौचक्का होकर उन्हें देखने लगे। हम लोग जब पूर्व स्थिति में लौटे तो वह बड़ी प्रसन्नता से कह रहे थे– 'आस्ट्रेलिया आउट हो गया।' सचमुच हमारे देश में क्रिकेट 'कैंसर रोग' की तरह फैल रहा है क्योंकि इन दिनों आफिस के सारे कर्मचारी अपने सारे काम को पेंडिंग कर, अपने कान में ट्रॉजिस्टर लगाए बैठे मिलते हैं।

❑❑❑

"अल हक़्कु मुर्रुन"
सत्य कड़वा होता है।

लद्दाख़ में इस्लाम एक दृष्टि में

– अब्दुल ग़नी शेख़ लद्दाख़ी

लद्दाख़ की धरती सदियों से इस्लाम और बौद्धमत का पालना रही है। यहां के पहाड़ों और हरी–भरी घाटियों में अज़ान की आवाज़े गूंजती रही हैं।

भौगोलिक स्थिति

लद्दाख़ का क्षेत्रफल अक्साईचिन समेत लगभग ९५ हज़ार वर्ग किलोमीटर है, लेकिन केवल ६२० वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में खेती–बाड़ी और आर्थिक गतिविधियां होती हैं। बाक़ी इलाक़े में पहाड़ों के सिलसिले, दर्रे और मैदान हैं। अत्याधिक ऊँचाई और कड़ाके की सर्दी के कारण खेती–बाड़ी और आबादकारी संभव नहीं है। अपने विशिष्ट भौगोलिक परिवेश के कारण लद्दाख को 'मून लैण्ड' (चाँद की धरती), 'मैजिक लैण्ड' (जादुई देश) और "दुन्या की छत" कहा जाता है। अपने लम्बे इतिहास में लद्दाख को विभिन्न नामों से पुकारा गया है। कई इतिहासकारों ने "छोटा तिब्बत" और "पश्चिमी तिब्बत" के नाम से लद्दाख का उल्लेख किया है।

आबादी

लद्दाख़ की दो लाख की जनसंख्या में मुसलमानों की जनसंख्या ५२ प्रतिशत है। शेष बौद्ध मत के अनुयायी हैं। कुछ सैकड़ों में ईसाई भी यहां वास करते हैं।

लद्दाख़ में दो ज़िले हैं, ज़िला लेह और ज़िला कारगिल। ज़िला लेह में बौद्ध और कारगिल में मुसलमान बहुसंख्यक हैं। लेह की अपेक्षा कारगिल में आबादी कुछ अधिक है। लेह में लगभग बीस प्रतिशत आबादी मुसलमानों की है। मुसलमान लेह क़स्बा समेत ज़िला के ११२ देहातों में से लगभग पच्चीस गांवों में बस्ते हैं। इनमें सात गांवों में मुसलमानों की अक्सीरियत है। देश विभाजन के समय कुछ गांवों से मुसलमान पाकिस्तान चले गये, इससे मुसलमानों की आबादी में कुछ कमी ज़रूर आयी।

लद्दाख़ की मुस्लिम आबादी सुन्नी, शिया और नूर बख़्शी है। सुन्नी मुसलमान हनफ़ी मसलक के हैं। लद्दाख़ में अहले सुन्नत वल जमाअत की लगभग १११ मस्जिदें हैं। लेह की ऐतिहासिक जामा मस्जिद लद्दाख की सबसे बड़ी मस्जिद है। कारगिल जिले में भी सैकड़ों मस्जिदें हैं। सुदूर स्थित ज़न्सकार की राजधानी पदुम के सौ घरानों के लिए एक जामा मस्जिद के अलावा दो और मस्जिदें हैं। पानीखर नामी गांव में तीन मस्जिदें हैं।

लेह की जामा मस्जिद आज से ३३३ साल पहले सन १६६६–६७ ई. में मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर और लद्दाख़ी राजा देलदान नम गियाल के मध्य एक समझौते के तहत बनी। लद्दाख़ उन दिनों मुग़ल साम्राज्य की छत्र–छाया में था और उसे अपनी खुदमुख़्तारी तथा सलामती (स्वयत्तता और रक्षा) का संरक्षण मुग़ल हुकूमत से प्राप्त था। शुरू में मस्जिद की वास्तुकला लद्दाखी और तिब्बती तर्ज़ की थी। आजकल इस्लामी तर्ज़ के अनुसार गुम्बद–व–मीनार बनाये गये हैं। कस्बा में इससे पुरानी एक और छोटी मस्जिद है। मुस्लिम आबादी में बढ़ोत्तरी और मध्य एशिया तथा कश्मीर से व्यापारियों के आगमन के कारण एक बड़ी मस्जिद की ज़रूरत महसूस की गयी इसलिए मौजूदा जामा मस्जिद का विस्तार किया गया। मस्जिद में हज़रत मीर सैय्यद अली हमदानी रह० की एक यादग़ार है। स्थानीय लोगों का कहना है कि उन्होंने मस्जिद के निर्माण से पौने तीन सौ साल पहले इस जगह इबादत की थी। लेह से पन्द्रह किलोमीटर दूर मस्जिद भी इनसे मंसूब (सम्बन्धित) की जाती है। इस लिहाज़ से यह लद्दाख की सबसे पुरानी मस्जिद है वह १३८० ई. में लद्दाख के रास्ते से चीनी तुर्किस्तान आये थे।

लद्दाख़ में इस्लाम का इतिहास

कश्मीर के इतिहासकारों और पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंची हुई रिवायतों (बयान) के अनुसार पहले इस्लाम का संदेश लद्दाख में हज़रत मीर सैय्यद अली हमदानी जिन्हें शाह हमदान भी कहा जाता है, लाये। उन्होंने इस इलाक़े में दीन के प्रचार का काम भी किया और कई मस्जिदें भी बनवाई। प्रोफ़ेसर मुजीब के अनुसार उनमें एक मस्जिद ज़न्सकार की राजधानी पदुम में उन्होंने बनवाई। कहा जाता है कि शाह हमदान बल्तिस्तान भी गये थे और वहां भी मस्जिदें बनवाई।

सातवीं और आठवीं सदी में जब लद्दाख, बल्तिस्तान और गिलगिट का पूरा क्षेत्र चीन, तिब्बत, मध्य एशिया अरब और कश्मीर की लड़ाईयों का केन्द्र बना था तो लद्दाख में अरबी फौजियों का आना–जाना और व्यापारियों का आवागमन था। लद्दाख के टाँग्चे इलाके में चट्टानों पर एक कुर्आनी आयत और अरबों के नाम तराशे हुए पाये गये। इनमें नासिर बिन स्वालेह, अबू मंसूर, अबुल आयत और ज़करिया इब्ने कासिम कुछ प्रमुख नाम

हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार सेन्ट्रल एशिया की लड़ाईयों में उस काल की राजनीति में उनके नाम मिलते हैं।

लद्दाख़ के पड़ोसी देशों और इलाकों में इस्लाम के फैलने से लद्दाख में इस्लाम को फैलने में शक्ति मिली। खलीफा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में विख्यात अरब जनरल कुतीबा बिन मुस्लिम ने सन ७०५ में Lower Turkistan (लोवर तुर्कीस्तान) पर विजय प्राप्त की। सन ७५१ ई. में अरबों ने तालास नदी पर चीनी सेना को निर्णायक पराजय दी और सेन्ट्रल एशिया चीन की पकड़ समाप्त हो गयी। नवीं सदी में सारा सेन्ट्रल एशिया इस्लाम ले आया और मुसलमान हो गया।

लद्दाख़ में इस्लाम का पहला उल्लेख अब्बासी ख़लीफ़ा अल–मामून (सन ८१३–३३) के शासन काल में मिलता है। एक शिलालेख में जो अफ़गानिस्तान में मिला तिब्बत और बल्तिस्तान पर विजय के लिए अल्लाह का शुक्र अदा किया गया है। ख़लीफ़ा अल–मेंहदी ने तिब्बत से कर मांगा था। अरब इतिहासकार याकूबी, तिबरी, इब्ने ख़ल्लदून, अल्बेरूनी, मसऊदी आदि ने तिब्बत का उल्लेख किया है।

तेरहवीं सदी में कश्मीर में इस्लाम का प्रचार हुआ। शुरू में इसका सेहरा सेन्ट्रल एशिया के एक बुजुर्ग सैयद शरफुद्दीन के सर पर रहा। वह चीनी तुर्किस्तान के रहने वाले थे। उनके हाथों पर इस्लाम लाने वाला पहला लद्दाखी राजकुमार रिंचन शाह था। सुल्तान सदरुद्दीन के नाम से वह कश्मीर का पहला मुसलमान शासक बना।

सोलहवीं सदी के शुरुआत में बल्तिस्तान के आम राजाओं ने इस्लाम कबूल किया। हज़रत शाह हमदान ने जो पौध लगाई थी, सैय्यदनूर बख़्श रह० ने उसे सींचा। वह सन १५०० में बल्तिस्तान और कारगिल आये और तबलीग़ का काम किया। उनके पांच साल बाद मीर शमसुद्दीन ईराक़ी आये। वह शिया थे। उनके हाथों बल्तिस्तान और कारगिल में बहुत सारे लोगों ने शिया मसलक इख़्तियार किया। वह लद्दाख़ के पुरीग (कारगिल) इलाक़ा में भी आये और लोगों ने उनके हाथों इस्लाम कुबूल किया।

करगिल के बल्ती सरदार कश्मीर और सेन्ट्रल एशिया से समय–समय पर आलिमों और प्रचारकों को अपने बच्चों को इस्लामी तालीम देने के लिए बुलाते रहे। अपनी बेटियां उन्हें ब्याह दीं और उन्हें बसने के लिए ज़मीन–जायदाद, मकान और दूसरे सहूलतें दी।

मुग़ल बादशाह शाहजहां के शासनकाल में लद्दाख़ मुग़ल साम्राज्य के प्रभाव में रहा। लद्दाख़ के राजाओं ने कश्मीर आदि से मुसलमानों को अनेक कार्यों के लिए बुलाया। इनमें फ़ारसी जानने वाले अनुवादक शामिल थे। लद्दाखी राजा जमयांग नमगेल ने सात मुसलमान व्यापारियों को लेह में बसाया उन्हें विशेष सुविधाएं प्राप्त थीं और शाही व्यापारी कहे जाते थे। सेन्ट्रल एशिया, कश्मीर, किश्तवाड़ और हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों से तिजारत के सिलसिले में लद्दाख आने वाले कई व्यापारी लद्दाख में बस गये। अधिकांश ने लद्दाखी औरतों से शादी की। लेह और आसपास के देहात के सुन्नी मुसलमान उन्हीं की औलाद हैं और इनकी आबादी हज़ारों में है। बल्तिस्तान से सैकड़ों बल्ती लद्दाख आकर लेह के पास आबाद हुए। मुसलमानों ने पूरी तरह लद्दाखी रहन–सहन और खान–पान इख़्तियार किया और लद्दाखी भाषा सीखी और इस्लाम का दामन मज़बूती से थामे रखा।

सन १८६६ में मुसलमानों ने लेह में एक मकतब खोला। बाद में एक प्राइमरी स्कूल खुला। इस समय जिला लेह में मुसलमानों के कई प्राइवेट स्कूल हैं। इनमें इस्लामिया पब्लिक इंग्लिश मीडियम हाई स्कूल और इमामिया इंग्लिश मीडियम हाई स्कूल शामिल हैं। सन १६३० की दहाई में सुन्नी मुसलमानों की कल्याणकारी संस्था 'अंजुमन मुईनुल इस्लाम स्थापित हुई। शियों ने 'अंजुमन इमामिया' क़ाइम की। नयी नस्ल के मुस्लिम लड़कों और लड़कियों की साक्षरता दर लगभग सौ प्रतिशत है। बीसियों मुस्लिम छात्र–छात्राएं लद्दाख से बाहर तकनीकी शिक्षा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इतिहास में पहली बार लेह के पास थिकसे में तीन चार साल पहले एक दीनी मदरसा "मदरसा उलूमुल कुर्आन "काइम किया गया है जिसमें इस समय हिफ़्ज़े कुर्आन के साथ–साथ दीनियात की तालीम दी जाती है। भविष्य में इंशाअल्लाह उलूमे कुर्आन और हदीस की तलीम भी दी जायेगी।

मुसलमानों ने गत तीन चार सदियों में उलमा, योद्धा, वास्तुकला के मर्मज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी, कवि और डाक्टर पैदा किये हैं। लद्दाखी मुसलमानों का लद्दाखी साहित्य, भाषा, पकवान विशेषकर समाजी बेदारी (जागरण) में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में इस्लामी जगत की प्रसिद्ध इस्लामी संस्था दारूल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ के स्कालर्स और अन्य संस्थाओं से पढ़कर निकले हुए युवा, स्थानीय उलमा और मदरसा लिलबनात मालेगांव (नासिक) की पढ़ी हुई युवतियां लद्दाखी मुसलमानों को इस्लामी शिक्षा से परिचित कराने और दीनी बेदारी लाने के लिए एक प्रभावी आंदोलन चला रही हैं।

नोट : अधिक जानकारी के लिए "अध्यक्ष अन्जुमन मुईनुल इस्लाम, लेह लद्दाख़ (जम्मू–कश्मीर) टेलीफोन नं० (01982) 52507 पिन–194101, भारत" से सम्पर्क करें।

अनुवाद– मो. हसन अंसारी

ज़म ज़म का पानी और उसके लाभ

—मु० शमीम अख़्तर

विश्व के बड़े—बड़े डाक्टर इससे सहमत हैं कि ज़म ज़म का पानी पीने से आंतों, फेफड़ों और मस्तिष्क पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त दमा, पेचिश, डेबेटिस और दिल की घड़कन में इसका प्रयोग अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

ज़म ज़म का सोता एक ऐसी पवित्र तथा शुद्ध भूमि से फूटा है जिसके इतिहास से न केवल संसार के मुसलमान अपितु दुन्या की दूसरी कौमें भी भली—भांति परिचित हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि ज़म—ज़म का सोता कुदरत (ईश्वर) के उच्चतर पुरस्कारों में से है।

इस्लामी दृष्टिकोंण से ज़म ज़म का बड़ा महत्व है : हज़रत हाजिरा और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सल्लम की एक अमिट तथा विशाल यादगार है, जिससे अल्लाह तआला (ईश्वर) कियामत तक संसार वालों को लाभ पहु चाना चाहता है। ज़म ज़म पीते समय एक मुसलमान का ईमान दृढ़ हो जाता है। पूरे संसार के मुसलमान इसे पवित्र तथा शुभ जान कर पीते हैं और इस की आध्यात्मिक विशेषताओं से लाभ प्राप्त करते हैं। अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम द्वारा जिस ज़म ज़म से अवगत कराया उसका कोई उदाहरण नहीं इस में बहुमूल्य भेद छुपे हैं, यूरोप के वैज्ञानिक इस के लाभों को एक समय से मानते आ रहे हैं।

ज़म ज़म में "कैलशियम कारबोनेट" है जो खाने को पचाता है, पथरी को तोड़ता है, जोड़ों के दर्द को दूर करता और हड्डियों को मज़बूत करता है। बदन टूटने को दूर करता है। इस में हाइड्रोजन सल्फाइड है जिस से चर्म रोग दूर होते हैं, हैज़े के कीटाणूं मर जाते हैं। इसमें मैगनीशियम सल्फेट है जिस से पेट की चरबी समाप्त हो जाती है और मोटापा ख़त्म हो जाता है। इसमें सूडियम सल्फेट है जो सूगर में लाभंदायक है। सूडियम क्लोराइड हैज जो आंतों के विभिन्न रोगों को दूर करता है, पेट के दर्द में बड़ा काम करता है। अतः सिद्ध हुआ कि ज़म ज़म बड़ी लाभदायक औषधि भी है।

□□□

नक़ल

— डा. सूरज मृदुल

एक बार हमारे परिचित शैलेन्द्र जी ने कहा था— "एक बार हम अपने परिवार के साथ किसी हिल स्टेशन पर घूमने गये। वहां घूमते—घूमते किसी होटल में बयरा को खाना लाने का आर्डर दिया। तकरीबन दस—पन्द्रह मिनट बाद ही मैंने देखा कि सामने की टेबुल पर खाना सज गया। उस समय में बच्चे तो खाने में जुट गए। क्योंकि वे काफी भूखे थे। साथ ही साथ उस समय मुझे काफी ज़ोर से भूख लगी थी। सब लोग तो जल्दी—जल्दी खाना खाने में मशगूल हो गए थे लेकिन मेरी पत्नी ने खाने को छुआ तक नहीं। तब मैंने उसे प्यार से कहा— "खाना खा लो ना ?" मेरे कहने के बावजूद मेरी पत्नी ने कहा— "मुझे भूख नहीं है, आप लोग खाना खाइए।" मुझे मालूम था कि ऐसे समय औरतें इसी तरह नखरा करती हैं। उसे तो रूठने का कोई न कोई बहाना चाहिए। मैंने उसे डांटकर कहा— "चलो खाओ, इतनी देर हो गयी है और तुम खाना नहीं खा रही हो।'
'मुझे इच्छा नहीं है' तब मैंने प्यार से कहा— ऐसा थप्पड़ मारेंगे कि तुरंत तुम्हे भूख लग जाएगी, चलो खाओ" और वह खाने लगी। उस घटना को घटे लगभग एक—दो महीना हो गया था। इसी बीच मेरी तबीअत खराब हो गयी। उस समय मुझे दूध आदि पीने की एकदम इच्छा नहीं थी। इसलिए मैंने उस दिन सारी चीज़ों को लौटा देना चाहा, तभी मेरे पुत्र ने एका—एक कहा—" ऐसा थप्पड़ मारेंगे कि तुरंत पीने को मन हो जाएगा, चलिए दूध पीजिए।" मैं ऐसी ज़लील हरकत देखकर आश्चर्य में पड़ गया और तभी मैंने उससे पूछा— "तुम ऐसे क्यों बोले?" तो उसने अपनी तोतली ज़बान में कहा— "बाबू जी उस दिन मम्मी नहीं खा रही थीं तो आपने उसे डांटा था तो वह खाने लगी थी। उसी तरह आप आज दूध नहीं पी रहे हैं तो मैंने भी आपको डांटा है ताकि आप दूध पी लें।" मैं उसकी बात सुनकर आश्चर्य में डूब गया और तुरंत मेरे दिमाग़ में एक बात आई कि बच्चे के सामने जैसा बड़े करते हैं वैसी ही नक़ल बच्चे भी करते हैं।

□□□

चॉकलेट व रंग-बिरंगी मिठाईयाँ

स्वास्थ्य के लिए ख़तरनाक

- डा० इन्द्रमोहन झा

चॉकलेट जिन वस्तुओं से बनती है उनमें कई ऐसी चीज़ें हैं जो शरीर को धीरे-धीरे रोग का घर बना देती है। यह एक मीठा ज़हर है जो कैन्सर जैसी बीमारी को हमें स्वाद के साथ उपहार में देता है। शौक और स्वाद के रूप में खाई जाने वाली चॉकलेट स्वास्थ्य और सौन्दर्य दोनों के लिए ख़तरनाक है।

नियमित रूप से चॉकलेट का सेवन करने से कैन्सर रोग, हृदय रोग तो होते ही हैं साथ ही हमारी फिटनेस भी खराब होती है तथा स्त्रियों के स्तन लटक जाते हैं, बच्चों के दांत खराब हो जाते हैं।

चॉकलेट का निर्माण कोको नामक फल के चूर्ण से किया जाता है। इसके फल की गिरी को निकाल कर सुखा लिया जाता है उसके बाद महीन आटे की तरह पीस लिया जाता है। इस बारीक चूर्ण को चीनी, कोको का दूध, हाइड्रोजेनेड वेजिटेबल आयल, एचबीओ एवं गाय या भैंस के दूध के साथ जमा लिया जाता है और विभिन्न आकार देकर पैकेटों में बंद करके बेचा जाता है। किन्तु यह सच है कि कोको के दूध और गिरी में फिनाइल इथाइल, एमीन जानथीन और थायब्रोमीन नामक तीन कार्बनिक यौगिक होते हैं जिनका असर बहुत उत्तेजक होता है। अतः यह प्रमाणित हो चुका है कि एलएमीन जब शरीर में पहुंचता है तो यह सबसे पहले रक्त वाहिनियों की भीतरी सतह पर विद्यमान न्यूरांस एवं दूसरी तांत्रिकाओं को भी उद्वत करता है जिसके फलस्वरूप गर्भपात, लिंगभेद, अंडकोष वृद्धि, स्तन शिथिलता, हृदय अवरोधिता आदि बीमारियां होने लगती हैं।

चॉकलेट में डी.एन.ए. डीआक्सी रिबोन्यूक्लिक एसिड और जीन जैसे रसायन होते हैं जो शरीर को हानि पहुंचाते हैं, मिथाइल जानथीम और थियोब्रोमीन ये तीनों रसायन भी शरीर में एक प्रविष्ठ होकर नुक़सान पहुंचाते हैं, शरीर में यह रसायन तब तक अपने हानिकारक प्रभावों को छोड़ते हैं जब तक इसकी चयापचन क्रिया पूरी नहीं हो जाती।

चॉकलेट के अधिक प्रयोग करने से दांतों में कीड़ा लगना, पायरिया, दांतों का टेढ़ा होना, मुख में छाले होना,स्वरभंग होना, गलाशोथ गले में जलन, लीवर की वृद्धि, पेट में कीड़ों की वृद्धि, मूत्र में जलन, अण्डकोषों में वृद्धि, योनिगत भगनासा में शोध, भगमध्य में जलन, मोटापा व मधुमेह आदि रोग हो जाते हैं। चाकलेट के सेवन से होने वाली ख़तरनाक बीमारियों के विवरण से हमारा मतलब आपको डराने से नहीं है। वरन् आपको आपके स्वास्थ्य के सौन्दर्य के प्रति सतर्कता बरतने से है, हम यह नहीं कहते कि आप चॉकलेट खाना बंद कर दें। जब खाने की वस्तु है तो खाइये जब आपको अपना स्वाद बदलना हो तो खाइये लेकिन एक दायरे में, इसके सेवन को आप अपनी दिनचर्या में ना लायें नियमित रूप से इसका सेवन करना बुरा है। अतः इसका सेवन करें किन्तु बुराईयों को ध्यान में रखते हुए कभी-कभी।

रंग-बिरंगी मिठाईयों से होने वाली हानियाँ :

आज रंगों का महत्व कम नहीं है बिना रंग के तो ये दुनिया ही बदरंग लगती है किन्तु ध्यान दिया जाये तो रंगों से रंगी वस्तुएं हमारे सौन्दर्य को और त्वचा को भी बदरंग कर देती है।

बिना रंग इस्तेमाल किये कोई भी सौन्दर्य प्रसाधन नहीं है अतः सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग होने वाले रंगों को भी 'डर्मल' टाक्सीसिटी टैस्ट" (त्वचा पर दुष्प्रभाव) होना जरूरी है। क्योंकि इन रंगों में कई हानिकारक तत्व विद्यमान होते हैं जो त्वचा को नुक़सान पहुंचाते हैं ऐसे में "स्किन सैंसटाइजेशन" परीक्षण के ज़रिये पाये जाने वाले हानिकारक तत्वों का पता लगाया जा सकता है।

ऐसे कुछ रंग इस प्रकार होते हैं जिनका प्रयोग खाद्य पदार्थों में किया जाता है, आज स्विटडिश बनाने में तरह-तरह के रंगों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे वे पदार्थ देखने में अच्छे लगते हैं हालांकि देखा जाये तो इन रंगों का स्वाद कुछ नहीं होता बस आकर्षक बनाने हेतु प्रयुक्त होते हैं। तरह-तरह की मिठाईयों, टाफियां व केक आदि में बहुत अधिक मात्रा में इनका प्रयोग हो रहा है, जो हमारे स्वास्थ्य को अस्वस्थ्य की ओर ढकेल रहे हैं, जिसके कारण, गले खराब हो रहे हैं, कई लोग हार्ट पेशेंट्स हो गये, पेट की बीमारियां हो रही है, ऐसे ही जाने कितने रोग होते जा रहे हैं।

अतः अभी भी वक़्त है इन रंग-बिरंगे पदार्थ को त्याग दें व भौतिकी का त्याग कर प्राकृतिक वस्तु का अनुसरण करें तब हम अपने स्वास्थ्य को उचित दिशा दे सकते हैं, इन रंग-बिरंगे आकर्षण जाल में न फंसना ही सही है। ❑❑❑

स्वास्थ्य रक्षा

दाँतों का शत्रु
पायरिया रोग

स्रवन्ति पूर्य रुधिर चला दन्ता भवन्ति च।
दन्तवेष्टः स विज्ञयो दृष्टशोणित संभव।।
(सु०सं० नि० ६१)

शोणित दन्तवेष्टेभ्यो यस्याकस्मात प्रवर्तते।
दुर्गन्धीनि सकृष्णनि प्रक्लेदीनि मृदूनि चा।।
दन्तमांसानि शीर्यन्ते पचन्ति च परस्परम।
शीतादासे नाम स व्याधिः कफशोणित संभवः।।
(सु०सं० नि० १६)

अर्थात मसूड़ों से अकारण ही रक्तस्राव होता है, दुर्गन्धित काले, गीले (क्लेदयुक्त) और मृदू होकर मसूढ़े गलकर गिरने लगते हैं और एक–दूसरे को चेप लगाकर पका देते हैं।

इस रोग के मुख्य उत्पादक कारण

सोने से उठने के तुरंत पश्चात मुखशुद्धि किये बिना ही चाय या काफी आदि पेय पदार्थों का ग्रहण करना, दांतों की सफ़ाई भली–भांति नहीं करना, सदा कब्ज़ियत (Constipation) रहना, आइस्क्रीम, सिगरेट, चाय व काफी मद्य आदि का निरंतर अत्याधिक सेवन करना। पाश्चात्य सिद्धांतो ने स्ट्रेप्टोकोफाई जैसे बैक्टिरिया तथा अन्या पूयजनक रोगाणुओं द्वारा मसूढ़ों तथा दंत के कोटरों में रोगाणु संक्रमण के कारण यह रोग उत्पन्न होना मानते हैं। भोजनोत्तर मुख भली–भांति स्वच्छ न करने से खाद्य के सूक्ष्म कण दन्तमूल में एकत्रित होकर सड़ने लगते हैं और पुनः मालागोलाणु (Streptococcus viridans) के उपसर्ग से वहां शोध उत्पन्न हो जाता है। जीवाणुजन्य विष–धातुओं का नाश करके गड्ढे बना देता है जिससे दांत और मसूढ़े के बीच में पीप का पर्याप्त संचय हो जाता है और अंत में दंतस्राव (Teeth Sockets) पूर्णयतया नष्ट हो जाती है जिससे दांत हिलने लगते हैं।

> *इसे आयुर्वेद में दंतवेष्ट तथा अंग्रेज़ी में (Pyorrhoea) कहते हैं। पायरिया का अर्थ होता है पीप का प्रसाव अर्थात पीप 'पल्स' का निकलना। आयुर्वेद प्रणेताओं का कहना है कि जब दांतों से पीप और रुधिर (रक्त) बहता है तो दन्त हिलने लगते हैं और इसे ही दन्तवेष्ट (Pyorrhoea) कहते हैं।*

पीप भोजन के आंत में चला जाता है विष का भी शोषण हो जाता है। वे रक्त प्रवाह के द्वारा शरीर में फैलकर स्थानीय (Local) और सार्वदेहिक भेद से इसके दो प्रकार के लक्षण उत्पन्न करते हैं।

1. **स्थानीय लक्षण** : मसूड़ों के किनारों में सूजन, लाली, दुर्गन्ध श्वांस तथा मुख में दूषित स्वाद ये लक्षण होते हैं।
2. **सार्वदेहिक लक्षण** : रक्तक्षय या पाण्डुता त्वचा के रोग यथा एक्ज़िमा (Eczema)

दंतरक्षा के नुस्खे :

1. काफूर, सोंठ, काली मिर्च, रूमीमत्संगी, माजूफल, फिटकरी फूला, लौंग ५–५ तोला चूर्ण, तंबाकू के डंठकों का चूर्ण ३५ तोले मिला ३ माशे पिपरमिंट १/४ तोला दालचीनी तेल, नीलगीरी तेल, कार्बोलिक एसिड थोड़ी मात्रा में लेकर तीन माशे लौंग का तेल मिलाकर तीन तोले गेरू मिलायें एवं मंजन तैयार करके रखें।
   इस मंजन के प्रयोग से सब प्रकार के दंत रोग, पायरिया एवं मुख दुर्गन्ध का नाश होकर दांत मज़बूत हो जाते हैं।
2. सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आंवला कूठ, दालचीनी, बड़ी इलायची, तेज़पत्र सभी समान भाग लेकर कूट–पीसकर महीन चूर्ण कर कपड़छन करके रख लें। थोड़े चूर्ण में शहद मिलाकर मंजन करने से दांत की दुर्गन्ध, दर्द, पीप रक्त आदि सभी रोग ठीक हो जाते हैं।
3. पतंग, सैंधानमक, हड़, बहेड़ा, आंवला, वज्रदन्ती, सोंठ, मिर्च पीपल, माजूफल सभी बराबर–बराबर मात्रा में लेकर पीसकर महीन चूर्ण बना कपड़छन कर लें तथा इसमें एक माशा नीलाथोथा फूला भी मिला लें। इस मंजन से दांतों को अच्छी प्रकार धीरे–धीरे रगड़ने से सभी प्रकार के दंतरोग पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं।
4. सैंधानमक अच्छी तरह पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर पेस्ट सरीखा बनाकर शीशी में भरकर रख लें। प्रतिदिन सुबह रात्रि में इस पेस्ट का दंत मंजन करने पर दांतों में दर्द आदि विकार शांत हो जाता है।
5. पायरिया मंजन (धन्वतरि) बहुत ही उत्तम गुणप्रद मंजन है। प्रातः और रात्रि से पूर्व इस मंजन का प्रयोग भी कर सकते हैं। *(आगे)*

❑❑❑

अमरीका में मानवता और संस्कृति विघटन

मुसअब उस्मान कुरैशी

अमरीका जो इस समय खुद को मानवता का सबसे बड़ा संरक्षक और सभ्यता व संस्कृति की पताका फहराने वाला समझता है। वास्तव में वह अन्दर से अति अधिक खोखला है और वह मानवता और संस्कृति के विघटन काल से गुज़र रहा है। कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर यूसुफ ई कालीफानन अपने देश का हाल बयान करते हुए कहते हैं कि आज अमरीकी अनेक सामूहिक बीमारियों से ग्रस्त है जैसे अपराध भुखमरी, अविवाहित लड़कियों का गर्भवती होना, घरेलू विवाद, बच्चों में आवारगी और लापरवाही का आम रुजहान (रुचि), एड्स और दूसरी छूत की बीमारियों का आम होना।

उनका विचार है कि हुकूमत पूरी गंभीरता से इन समस्यायाओं की ओर अपना ध्यान नहीं देती है तो उन पर काबू पाना कठिन कार्य होगा।

नशीली वस्तुएं– प्रोफेसर युसूफ ई का बयान है कि अमरीकी निवासियों की एक बड़ी संख्या ऐसी है जो नशे की केवल आदी ही नहीं है बल्कि वह उसकी घुट्टी में प्रवेश कर गयी है। कभी–कभी तो एक ही बैठक में पांच–पांच, छः–छः बार बल्कि इससे भी अधिक बार शराब, अलकोहल और दूसरे नशीले पेय का प्रयोग होता है। इसी प्रकार सिगरेट पीने की लत भी सीमा पार करती जा रही है। कुछ ऐसे भी हैं जो नशा लाने वाली दवाओं और गोलियों से अपनी नशे की लत पूरी करते हैं। नींद लाने वाली गोलियां उनकी ज़िन्दगी की ज़रूरत बन गयी हैं। नशा लाने वाली वस्तुओं के अत्याधिक प्रयोग के बुरे प्रभाव जानने के लिए इतना ही जान लेना काफी है कि हर साल अमरीका में एक लाख लोग शराब पीने के कारण मौत के मुंह में चले जाते हैं।

आत्महत्या–अमरीका में आत्महत्या भी एक आम बीमारी के रूप में पायी जाती है। वहां हर सत्तरह मिनट पर एक अमरीकी आत्महत्या करता है जिसके नतीजे में लगभग हर साल तीस हज़ार आत्म हत्याओं की घटनाएं होती हैं।

अपराध– अमरीका जो अपने को सबसे बड़ा मानवता का झण्डा उठाने वाला कहता है और समझता है वहां इंसानी जान की कीमत क्या है इसका अंदाज़ा एक सर्वे रिपोर्ट से लगाया जा सकता है जिस के अनुसार चौबीस घंटों में पैंसठ घटनाएं होती हैं और हत्या के प्रयास करने के कारण सालाना घायलों की संख्या लगभग इक्कीस लाख नब्बे हज़ार तक पहुंचती है।

यौन संबंधी अनार्की– बर्थ कंट्रोल के सभी समाचार माध्यम द्वारा प्रचार व प्रसार और प्रलोभन के बावजूद अमरीका जैसे रौशन ख़याल (आधुनिक) देश में दस लाख नौजवान नाबालिग़ लड़कियां गर्भवती होती हैं जिनमें लगभग तीस लाख लड़कियों की उम्र पन्द्रह वर्ष से भी कम होती है और चार लाख ऐसी होती हैं जो गर्भनिरोधक (बर्थ कंट्रोल) वस्तुओं का प्रयोग करती हैं।

समलिंगी अभिशाप– (हम जिन्सी की लअनत) कंज़ी, जॉसन और मास्टर (अमरीकी मशहूर स्कालर) के अनुसार पचास प्रतिशत मर्द समलिंगी कार्य में व्यस्त हैं। महिलाओं का समलिंगी संबंध भी चिंताजनक है जिसकी संख्या पन्द्रह लाख महिलाओं और किशोरियों की है जिसमें से इक्कीस से तेइस प्रतिशत की संख्या शहरी आबादी की है। इस प्रकार यौन रोग के संबंध में इतना ही जान लेना काफी है कि पांच करोड़ साठ लाख लोग (५६ मिलियन) विभिन्न यौन रोगों के शिकार हैं।

विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार तीन करोड़ दस लाख (३१ मिलियन) लोग जो विभिन्न यौन रोगों से ग्रस्त थे केवल १९९३ में प्रकाश में आए। दूसरे छूत के रोगियों की संख्या एक करोड़ तिरपन लाख (१५.३ मिलियन) तक पहुंच गयी और यह संख्या वर्ष १९९६ के अनुसार है।

इन आंकड़ों और अनुमानों का प्रमाण इस बात से मिलता है कि खानदानी योजना कमीशन और अमरीकी स्वास्थ्य सोसाइटी दोनों ही संस्थाओं की तरफ से एक करोड़ पचास लाख (१५ मिलियन) लोगों की संख्या छूत की बीमारियों से ग्रस्त होने को प्रमाणित किया गया है जिसमें से दो–तिहाई रोगी लड़के और लड़कियां हैं जिनकी उम्र पन्द्रह साल से अधिक नहीं है।

एड्स– यह रोग भी स्थाई रूप से अमरीकियों में बढ़ता जा रहा है जिसके आंकड़े यह है कि वर्ष १९८६ के अंत और १९८७ के प्रारम्भ में एड्स से ग्रस्त रोगियों की संख्या ३६३२ तक पहुंच गयी थी। अमरीका में अस्वाभाविक मौत का यह दूसरा विनाशकारी और डरावना रोग है मुख्यतः नौजवानों में जिनकी उम्रें पच्चीस–चवालीस वर्ष के बीच है।

पलायमान (भगोड़े) बच्चे– सड़कों गलियों में भटकने वाले बच्चे और बच्चियां जो बालिग होने के करीब होते हैं और अपने–अपने घरों से भाग खड़े होते हैं। बाज़ अमरीकी संस्थाओं के अनुसार उनकी संख्या ३,३७,००० से अधिक तक पहुंचती

है और यह केवल वर्ष १९८३ की रिपोर्ट में बयान की गयी संख्या है।

बिन विवाहित जोड़े – अमरीका के नौजवान लड़के और लड़कियों में विवाह की कोई कल्पना नहीं है। वर्ष १९९२ के अंत तक के आंकड़े बताते हैं वहां तीन बिलियन यानी तीन अरब नौजवान बिना शादी के पति–पत्नी की हैसियत से जीवन बिता रहे हैं। इसी प्रकार वहां तलाक और अलग हो जाने की रुचि भी प्रबल है। कुछ संचार माध्यमों से इसकी संख्या बीस लाख तक बताई गयी है और इस कारण घरों में औरत पर मर्दों का अत्याचार करार दिया गया है। अमरीका में तलाक (संबंध विच्छेद) की घटना का एक और प्रमुख कारण खराब चाल–चलन, काम वासना और सामूहिक बुराइयां भी हैं। इसी प्रकार दूसरी शादी का आम चलन भी तलाक का मुख्य कारण है। इस प्रकार की तलाकों की संख्या भी कुछ कम नहीं है।

मूल्यों का हनन– अमरीका जैसे उन्नति प्रिय देश में बड़े और छोटे की अपमान पसंदी का रुजहान (प्रवृत्ति) भी प्रबल है। अमरीका के विभिन्न प्रसार माध्यम भी इस बात की तरफ संकेत करते हैं कि वर्ष १९८२ में बुर्जुर्गों के आपमान के २.५ मिलियन (२५ लाख) घटनाएं प्रकाश में आई हैं जबकि असाधारण घटनाएं इसके अतिरिक्त हैं। इसी प्रकार बच्चों पर जिस्मानी, जज़बाती और यौन संबंधी हिंसा में भी अमरीका संसार के तमाम देशों में सबसे ऊपर है।

निर्धनता व निराशा– यह बात भी सामने आई है कि हर चार बच्चों में एक बच्चा निर्धनता, उपवास और बदकिस्मती की छाया में जन्म लेता है और यह भी ऐसे समय में जबकि अमरीका सुरक्षा मंत्रालय के लिए करोड़ों डालर वार्षिक इस गरीबी, फाका (भूख) और निराशा पर काबू पाने के लिए आवंटित कर रहा है। यह है अमरीका का असल रूप जो उसके खोखलेपन को प्रकट करता है।

वास्तविकता यह है कि दिखावे का पश्चिमी संसार एक ज़बर्दस्त विघटन काल से गुज़र रहा है और यह विघटन आर्थिक नहीं बल्कि इंसानियत का विघटन है। अमरीकी और अन्य विद्वानों और विशेषज्ञों के बयान से यह बात अच्छी तरह प्रकाश में आ जाती है कि इन क्षेत्रों में आचरण की गिरावट किसी क़ातिल ज़हर से कम नहीं है।

यहीं से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इन तमाम रोगों पर काबू पाने का एक मात्र इलाज यदि कहीं संभव है तो खुदा के निर्देशों और उसके बताए हुए नियमों में ही निहित है। इस्लाम इन तमाम रोगों का उपचार प्रारम्भ ही में कर देता है। इस्लाम ने आचरण और व्यवहार की एक सीमा निश्चित कर दी है। इंसानी स्वभाव को अल्लाह ही जानता है। उसने उसी के अनुसार इन बीमारियों को दूर करने का नियम भी मुकर्रर कर दिया है।

मदीने की गलियाँ

– आसी फैज़ाबादी

मदीने की गलियाँ हैं कितनी निराली।
मदीने के ज़र्रे हैं लअ़लो लुआली।।
बसा है निगाहों में मसजिद का नक़्शा।
वह जन्नत की क्यारी वह रौज़े की जाली।।
नहीं शक कि कअ़बा है क़िब्ला हमारा।
प किबला नुमा है मदीने का वाली।।
हाँ कअ़बे ने रौनक़ है मक्के को बख़्शी।
मदीने की लेकिन है क़िसमत निराली।।
हबीबे खुदा याँ हैं आराम फरमा।
है बादे खुदा जिन की ज़ाते मआ़ली।।
लगा जिस ज़मीं से है जिस्मे मुबारक।
हाँ रशके दो आ़लम है वह अर्ज़े आ़ली।।
यहाँ की फ़ज़ाओं में जिब्रील आए।
और कानों में गूँजी अज़ाने बिलाली।।
असागिर यहाँ के हैं आ़लम में अहसन।
अकाबिर में यां के है शाने जमाली।।
कशिश क्या है रखी मदीने में रब ने।
हर इक जाने मोमिन मदीने पे वारी।।
चले आ रहे हैं अ़रब और अ़जम से।
मुक़द्दर के ऊँचे और क़िसमत के आली।।
मेरे रब बता दे करम से तू अपने।
कि आ़सी की फिर से कब आएगी बारी।।

शैख़ सअ़दी के तीन शेअ़रों का अर्थ

बुरे मित्र से दूर रहो
बुरा मित्र काले सांप से भी बुरा है
काला सांप केवल जान लेता है
बुरा मित्र तो जान व ईमान दोनों लेता है
अच्छी संगत तुझ को अच्छा बनाएगी,
बुरी संगत तुझको बुरा बनाएगी।

जश्ने रहमतुल्लिल आलमीने के मुबारक मौके पर पुरखुलूस मुबारकबाद के साथ

DIGJAM OCM, RAYMOND, REID & TAILOR

नावल्टी क्लाथ सेन्टर

नज़ीराबाद, लखनऊ

हर प्रकार के

☆ *बनारसी सूट,* ☆ *बनारसी साड़ियाँ,*

☆ *चटापटी ग़रारा,*

☆ *लहंगा,* ☆ *चनरी*

और हर क़िस्म के रोज़मर्रा इस्तेमाल के कपड़े और

रैमन्ड, ओ सी एम, दिगजाम,

रीड एण्ड टेलर

के सूटिंग और शर्टिंग वगैरह के लिए

तशरीफ लाएं

टेलीफोन : (दुकान) **215298**

इस्लाम में अत्याचार की मनाही

इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों और बच्चों को क़त्ल करने से रोका।

(मुवत्ता इमाम मालिक)

एक धार्मिक लड़ाई में हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने फौजों को दस निर्देश दिये उनमें यह निर्देश भी थे :– स्त्रियों का वध (क़त्ल) कदापि न करना ना ही बच्चों का ना बूढ़ों का न फल वाले पेड़ काटना, ना घर उजाड़ना, ना कोई बकरी मारना, ना कोई ऊंट मारना सिवाए इसके कि खाने के लिए ज़बह करो और न ही खजूर के पेड़ जलाना।

– (मुवत्ता)

□□□

शिक्षा-जगत

शिक्षा संस्थाओं की ज़िम्मेदारियां

– मौलाना अली मियाँ (रह०)

शरीफ़ाना इंसानी जिन्दगी गुज़ारने का बुन्यादी हक, खुदा का खौफ, इंसान दोस्ती, आत्मसंयम की हिम्मत व क्षमता, व्यक्तिगत लाभ पर सामूहिक लाभ को प्राथमिकता देने की आदत, मानवता के प्रति सम्मान, इंसानी जान व माल, मान–मर्यादा की रक्षा की भावना, अधिकारों की मांग पर कर्तव्य निर्वाह को प्राथमिकता, उत्पीड़ित और कमज़ोरों की हिमायत व हिफाज़त और ज़ालिमों और ताकतवरों से पंजा आज़माई का हौसला, उन इंसानों से जो दौलत व प्रतिष्ठा के सिवा कोई जौहर नहीं रखते, निर्भीकता और निडरता, हर मौके पर और स्वयं अपनी कौम और जमाअत के मुकाबले में सच बात कहने की हिम्मत, अपने और पराये के मामले में इंसाफ और तराजू की तौल, किसी सर्वव्याप्त शक्ति (दाना व बीना ताकत) की निगरानी का यक़ीन और उसके सामने जवाबदेही (लेखा–जोखा) और हिसाब का खटका–यही सही, रुचिकर (खुशगवार) और बेख़तर व कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने की बुन्यादी शर्तें और एक अच्छे समाज तथा एक ताकतवर व सुरक्षित व ससम्मान देश की वास्तविक ज़रूरतें और उसकी सुरक्षा की ज़मानतें हैं, इसकी शिक्षा और इसके लिए उचित वातावरण उपलब्ध कराना शिक्षण संस्थाओं की पहली ज़िम्मेदारी है।"

अनुवाद– मो० हसन अंसारी

जो रहीम उत्तम प्रकृति,
का कर सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं,
लपटे रहत भुजंग।।

बच्चों का पृष्ठ

अरबी से अनुवाद

'समूद की ऊँटनी'

— स० अहमद अली नदवी

आद के बाद

जिस प्रकार हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम के वारिस आद थे ऐसे ही आद के वारिस समूद थे। समूद पूरी तरह आद के नक्शे क़दम पर चल रहे थे जैसे क़ौमे आद, क़ौमे नूह के नक़्शे क़दम पर चले थे।

समूद की ज़मीन भी ख़ूबसूरत थी, हरियाली थी, बाग़ व पार्क थे, ऐसे बाग़ात थे जिसके नीचे से नहरें बहती थीं।

खेती बाड़ी करते थे और उनको इमारतों का शौक था, सनअतो हिरफ़त और अक़्ल में आद की तरह थे वह पहाड़ों को काट कर बड़े आलीशान मकानों का निर्माण करते और पत्थरों पर ख़ूबसूरत नक्शो निगार बनाते थे। पत्थर का उन्होंने काम किया और अपनी बुद्धिमानी और कारीगरी के गुण से उन्होंने उससे वह सब कुछ बनाया जो इन्सान ढंग से बनाता है।

जब कोई व्यक्ति शहर में प्रवेश करता तो वह दंग रह जाता। उनके बड़े अजीब पहाड़ों के बराबर ऊँचे–ऊँचे महल देखकर ऐसा मालूम होता था कि इन महलों का निर्माण जिन्नातों ने किया है इन्सानों ने नहीं। दीवारों पर फूल–बूटे ऐसे बनाते गोया मौसमे बहार ने उसको उगाया हो।

अल्लाह ने समूद को हर चीज़ से नवाज़ा था उनके लिए धरती में अल्लाह ने बड़ी बरकत उतारी और अल्लाह ने हर चीज़ के दरवाज़े समूद पर खोल दिये। आकाश से वर्षा होती। धरती उनके फूल–पौधों और खेती से लह–लहाती। उनके बाग़ात फलों से पटे पड़े होते अल्लाह ने उनके रिज़क और निर्माण में बड़ी बरकत दी थी।

समूद की नाशुक्री

इन सारी नेअ़मतों पर समूद ने अल्लाह का न तो कभी शुक्र अदा किया और न अल्लाह की इबादत की। बल्कि और अल्लाह को भुला दिया और उनकी सरकशी, नाफ़रमानी और नाशुक्री और बढ़ गयी। अल्लाह ने उनको जो दिया था उस पर यह सोच कर खुश होते कि हम से अधिक कोई बलवान नहीं और न कोई हम से अधिक ताक़तवर है। वह सोचते थे कि हमें दुन्या में सदैव रहना है मरना नहीं है और वह अपने महलों और बाग़ों में हमेशा रहेंगे। वह सभी सोचते हैं कि मौत इन पहाड़ों में आ नहीं सकती और उनके महलों तक पहुंचने के लिए उसको रास्ता भी नहीं मिलेगा। शायद वह ऐसा इसलिए सोचते थे कि नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम वादी में थी इसीलिए वह डूब गयी। आद तबाह व बर्बाद इसलिए हुए कि वह नर्म ज़मीन में थे और हम ख़ौफ़ और मौत से सुरक्षित स्थान में है।

बुतों की पूजा

यह बात उनके लिए काफी नहीं थी उन्होंने पत्थरों को तराशा और बुतों की पूजा करने लगे।

पत्थरों की पूजा इसी अंदाज़ से करते थे जिस अंदाज़ से उनसे पहले आद और क़ौमे नूह करती थी।

अल्लाह ने उनको पत्थरों का बादशाह बनाया और वह अपनी मूर्खता के कारण पत्थरों के गुलाम हो गये। अल्लाह ने उनको इज़्ज़त दी और पाक रिज़क दिया लेकिन उन्होंने अपने को ज़लील किया और मनुष्य की बेइज़्ज़ती की।

अल्लाह तो किसी पर जुल्म नहीं करता लेकिन इन्सान अपने ऊपर खुद जुल्म करता है। हैरतअंगेज़ (आश्चर्यजनक) बात यह है कि पत्थर जिसको अपने हाथों से तराशा जो न किसी बात को स्वीकार करते हैं और न उनमें इन्कार करने की शक्ति है उनके सामने झुकते हैं और उनसे मांगते हैं।

क्या कोई बलवान एक कमज़ोर की पूजा कर सकता है। क्या कोई सरदार अपने गुलाम को सजदा कर सकता है। फिर क्यों इन्होंने अल्लाह को भुला दिया और अपने को भूल गये। इन्होंने अल्लाह की इबादत करने से इन्कार कर दिया अल्लाह ने उनको ज़लील किया।

सालेह अलैहिस्सलाम

अल्लाह ने चाहा कि उन्हीं में से एक रसूल भेजें जैसे कि अल्लाह ने क़ौमे नूह और क़ौमे आद में भेजा था। अल्लाह ज़मीन में गड़बड़ी फ़साद नहीं चाहता। वह यह भी नहीं चाहता कि उसके बंदे कुफ्रो शिर्क उसके साथ करें। क़ौमे समूद में एक नेक, अच्छे व्यवहार और अच्छे चरित्र का युवा था। उसका नाम सालेह था। सालेह का परिवार शरीफ़ था और वह खुद बुद्धिमान थे। यह अच्छे और भले युवक थे हर व्यक्ति उनकी तारीफ करता था और सब उनके बर्ताव, चरित्र और उनके स्वभाव से प्रभावित थे। लोग उनकी मिसाल देते थे कि भाई यह सालेह है। इनकी अपनी शान बान और आन है। देखना यह आगे बड़ा धनवान होगा, शरीफ होगा। इसके हसीन और खूबसूरत बाग़ात और महल होंगे इनके पिता यह सोचकर कितने खुश होंगे कि उनके सपूत ने अपनी सूझ–बूझ और बुद्धिमानी से यह धन कमाया। लोगों में जब निकलेगा तो

आन–बान और शान से घोड़े पर सवार होगा और नौकरों, चाकरों तथा गुलामों की एक फौज होगी। लोग उसको सलाम करेंगे उसका आदर करेंगे और उस पर सबको गर्व होगा और यह बात बड़े हर्ष की होगी और उसके पिता के लिए गर्व की बात होगी कि इसमें धन–दौलत के सब गुण और अच्छाइयाँ हैं लेकिन अल्लाह ने इसके बिल्कुल खिलाफ़ फ़ैसला किया अल्लाह ने उनको नुबूव्वत देना चाही उनकी क़ौम में उनको नबी बनाकर भेजा ताकि वह अपनी क़ौम को सीधा और सही रास्ता दिखलायें। क़ौम को अंधेरे से रौशनी में लायें। इससे बढ़कर इज़्ज़त और मान की और क्या बात हो सकती है।

हज़रत सालेह की दावत

हज़रत सालेह ने बुलंद आवाज़ में पुकार कर कहा कि 'ऐ क़ौम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त और कोई इबादत के लाइक नहीं है।'

हज़रत सालेह की क़ौम के धनवान खेल–कूद, खाने और पीने में मसरूफ थे। बुतों की पूजा करते और किसी तरफ नहीं देखते थे। इसी कारण हज़रत सालेह (अ०) की दावत उनको अजीब लगी।

उनको इस पर गुस्सा आ गया और कहने लगे कि यह कौन है। उनके सेवकों ने कहा कि यह सालेह है। फिर वह बोले कि यह कहते क्या हैं? सेवकों ने कहा कि यह कहते हैं कि अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं है। वह यह भी कहते हैं कि अल्लाह तुम्हें मरने के बाद फिर ज़िन्दा करेगा और तुम्हारें कर्मों का फल देगा और रसूल होने का दावा करते हैं और कहते हैं कि अल्लाह ने मुझे क़ौम का रसूल बनाकर भेजा है।

धनवान इस बात पर हंसे और कहने लगे कि यह बड़ा मिस्कीन है। भला यह बताओ कि यह कैसे रसूल हो सकता है। इसके पास न तो महल है और न ही कोई बाग़। इसके पास खेती–बाड़ी भी नहीं और न इसके पास खजूर के बाग़ात हैं। यह रसूल कैसे हो सकता है ?

धनवानों ने देखा कि कुछ लोग सालेह की दावत को क़ुबूल करने वाले हैं तो उनको अपनी सरदारी ख़तरे में पड़ती नज़र आयी वह उनसे कहने लगे कि यह तो तुम्हारी तरह इंसान है जो तुम खाते हो यह खाता है, जो तुम पीते हो यह पीता है। यदि तुमने अपने ही तरह के आदमी का अनुकरण किया तो तुमको बड़ा घाटा होगा। क्या यह मुमकिन है कि तुम मर जाओगे, मिट्टी हो जाओगे, तुम्हारी हड्डियां सुरमा हो जाएंगी, तो तुमको फिर ज़िन्दा किया जायेगा। कितनी अजीब बात है जिसका यह वादा करते हैं। हमारी यह जिन्दगी जिसमें जी रहे हैं और जिसमें हम मर रहे हैं हम दोबारा उठाये जायेंगे। यह सालेह ईश्वर पर झूठी बातें कहता है हम तो इसकी बात पर विश्वास नहीं कर सकते।

हमारा ख़याल ग़लत निकला

हज़रत सालेह की बात उनकी क़ौम ने नहीं मानी अल्लाह की नाफ़रमानी की और उस पर ईमान नहीं लाये सालेह (अ०) ने उनको जब नसीहत की और बुतों की पूजा से रोका तो कहने लगे कि ऐ सालेह: तुम तो बहुत अच्छे और नेक लड़के थे हमारा तो यह ख़याल था कि हम लोगों में तुम बड़े आदमी होगे और शरीफ होगे। हमारा ख़याल था कि तुम फुलां व्यक्ति की तरह होगे लेकिन तुम वैसे नहीं निकले। तुमने हमें बड़ा ना उम्मीद किया। तुम्हारी आयु के लड़के अपनी सूझबूझ से आज बड़े आदमी बने हुए हैं ऐ सालेह : तुमने गरीबी का रास्ता अपना कर हमारी आशाओं पर पानी फेर दिय और हमें बड़ा निराश किया। तुम्हारे पिता भी गरीब व मिस्कीन थे तुम्हारी माँ भी मिस्कीन थीं हमने तुमसे बेकार की अच्छी आशा रखी। हज़रत सालेह ने कौम की यह बातें सुनीं तो उनको बेहद अफसोस हुआ। हज़रत सालेह जब अपनी क़ौम के पास से गुज़रते तो उनकी कौम कहती कि अल्लाह सालेह के पिता पर रहम फरमाये। इसने कैसे अपने बेटे को बर्बाद किया है।

सालेह की नसीहत

हज़रत सालेह इसके बावजूद बराबर अपनी क़ौम को नसीहत करते रहे और अपनी कोशिश से अपनी क़ौम को अल्लाह की तरफ बुलाते रहे और कहते, "ऐ मेरे भाई–क्या तुम यह समझते हो कि यहां हमेशा रहोगे? क्या तुम यह समझते हो कि तुम इन महलों में सदैव रहोगे? क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे यह बाग़ात पार्क और नहरें हमेशा रहेंगी और तुम उनके फल इत्यादि सदैव खाते रहोगे?"

क्या तुम हमेशा पहाड़ों को काटकर मकान बनाते रहोगे। हरगिज़–हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता। बताओं तुम्हारे माता–पिता फिर क्यों मर गये। वह तो महलों में रहते थे उनके तो बाग़ वग़ैरा थे उनके पास तो खेती बाड़ी थी वह भी तो पहाड़ काटकर मकान बनाते और उनमें रहते थे लेकिन यह सब बेकार हुआ इससे कोई लाभ नहीं मिला। उनको जब मौत आयी मर गये पनाह का कोई रास्ता नहीं मिला। ऐसे ही तुम भी मरोगे।

अल्लाह तुम्हें फिर दोबारा ज़िन्दा करेगा और तुमसे इन नेअ़मतों के बारे में पूछा जायेगा जो तुम्हें दुन्या में उसने दी हैं।

मुझे तुम से कोई बदला नहीं चाहिए

हज़रत सालेह ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरे भाई ! तुम मुझसे क्यों भाग रहे हो तुम्हे मुझसे क्या डर है ? मैं न तो तुम्हारा माल हड़प करना चाहता हूं और न ही मुझे तुमसे कुछ चाहिए।

मैं तो केवल तुम्हे नसीहत करता हूं और अपने रब का पैग़ाम तुम तक पहुंचाता हूं मुझे इसका कोई बदला नहीं चाहिए। इसका बदला तो मुझे मेरा पैदा करने वाला देगा।

मेरे भाईयो मेरी बात क्यों नहीं मानते? मैं तो तुम्हें नसीहत करने वाला हूं। तुम उन लोगों की बात मानते हो जो जुल्म

(अत्याचार) करते हैं। दूसरों का माल हड़प कर जाते हैं। धरती पर गड़बड़ी फैलाते हैं और शांति भंग करते हैं। सालेह की क़ौम इस बात पर लाजवाब हो गयी और कोई उत्तर नहीं बन पड़ा तो कहने लगे, ऐ सालेह ! हमें तुम जादूगर मालूम पड़ते हो। तुम तो हमारी तरह मनुष्य नहीं हो कोई अल्लाह की निशानी हमें लाकर दिखाओं यदि तुम सच्चे हो।'

अल्लाह की ऊँटनी

हज़रत सालेह ने क़ौम से कहा तुम कैसी निशानी चाहते हो बताओ। वह बोले कि यदि तुम सच्चे हो तो इस पहाड़ से गर्भवती ऊँटनी निकाल कर दिखलाओ। क़ौम यह खूब जानती थी कि ऊँटनी तो ऊँटनी से पैदा हो सकती है। ऊँटनी ज़मीन से तो नहीं उग सकती है और न पत्थर से पैदा हो सकती है उनको यह पूरा यकीन था कि वह निशानी का सुवाल करके कामयाब और सालेह लाचार हैं। लेकिन हज़रत सालेह का अपने पैदा करने वाले पर यकीन मजबूत था वह जानते थे कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। उन्होंने अल्लाह से उसकी दुआ की जिसको क़ौम ने चाहा। पहाड से हामिला ऊँटनी निकली और उसने बच्चा दिया। लोगों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और डरने लगे और फिर भी एक आध को छोड़कर कोई ईमान नहीं लाया।

बारी

हज़रत सालेह ने क़ौम से कहा कि यह अल्लाह की निशानी है तुमने जो चीज़ मांगी अल्लाह ने उसको पैदा कर दिया। अब तुम इसका आदर करो और इसको कोई तकलीफ मत देना यदि ऐसा न करोगे तो तुम पर अज़ाब आयेगा। यह ऊँटनी अल्लाह की धरती पर रहेगी और खायेगी, पियेगी, घूमेगी फिरेगी तुम पर इसके पानी चारे की कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। अल्लाह की ज़मीन में चारा और पानी बहुत है यह ऊँटनी काफी बड़ी है और पैदाइश के एतबार से वह अजूबा है। उनके जानवर उसको देखकर भड़क जाते और भाग जाते थे। जब वह ऊँटनी आती तब पानी पी जाती। दूसरे जानवर इसको देखकर भड़क जाते थे। जब यह सूरत हज़रत सालेह ने देखी तो क़ौम से कहा कि बारी बना लो एक दिन तुम्हारे जानवर पानी पियेंगे और एक दिन यह ऊँटनी पानी पिया करेगी। जब ऊँटनी की बारी आती वह जाती और पानी पीती और जब क़ौम के जानवरों की बारी आती उनके जानवर जाते और पानी पीते थे।

समूद की सरक़शी

क़ौम बड़ी घमण्डी हो गयी और सरकशी पर आमादा हो गयी थी कहने लगी कि हमारे जानवर रोज़ पानी क्यों न पियें। लोग परेशान थे इस ऊँटनी से जिसको देखकर उनके जानवर बिदक जाते और भाग जाते थे। हज़रत सालेह ने ऊँटनी को बेइज़्ज़त और परेशान करने से उनको होशियार किया। क़ौम ने उनकी बात की कोई परवाह नहीं की और ढिटाई से बोले कि इसको कौन मारेगा एक आदमी खड़ा हुआ और कहा कि मैं मारूंगा एक दूसरा खड़ा हुआ वह बोला मैं इसे मारूंगा यह दोनों अभागे ऊँटनी के निकलने का इंतज़ार करने लगे जब ऊँटनी निकली तो पहले ने उसे नेज़ा मारा तथा दूसरे ने उसे ज़ब्ह कर दिया।

अज़ाब

हज़रत सालेह को जब पता चला कि ऊँटनी ज़ब्ह कर दी गयी है वह बहुत रंजीदा हुए और इस पर बेहद अफसोस किया और लोगों से कहा कि अब केवल तीन दिन और अपने घरों में ऐश कर लो और देखो यह बात झूठी नहीं है। शत प्रतिशत सत्य होगी।

शहर में नौ आदमी ऐसे थे जिन्होंने गुण्डागर्दी मचा रखी थी और किसी तरह वह काबू में नहीं आते थे उन्होंने कसम खाई कि सालेह और परिवार को रात में मार डालेंगे और जो कोई हमसे पूछेगा हम कह देंगे हमें पता नहीं हम नहीं जानते। मंगल आया और उन पर अज़ाब आया। अज़ाब अल्लाह की पनाह दहाड़े मारता भूचाल था उसमें इतनी सख़्त आवाज़ व चीख थी जिसने दिल फाड़ दिये ऐसा भूचाल था जिसने उनके घरों को मिसमार (ध्वस्त) कर दिया वह दिन समूद पर बड़ा कठिन था सारे लोग मर गये पूरा शहर बर्बाद हो गया।

हज़रत सालेह और मुसलमानों ने इस मनहूस शहर से हिजरत की। हज़रत सालेह ने वह शहर छोड़ा और अपनी क़ौम पर एक नज़र डाली जो मरे पड़े थे उनको देखकर दर्द भरी आवाज़ में कहा कि ऐ क़ौम अपने पैदा करने वाले का पैग़ाम तुम तक पहुँचाया और तुमको नसीहत भी की लेकिन तुम पर उस नसीहत का कुछ असर न हुआ। आज यदि उस शहर को देखो तो खाली महल हैं और कुएं सूखे और बेकार मिलेंगे। वीरान बस्ती है जिसमें न कोई पुकारने वाला है न कोई जवाब देने वाला है। शाम जाते हुए जब हुज़ूर (स०) का उस बस्ती से गुजर हुआ फरमाया उन मकानों में मत जाओ जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया लेकिन रोते–गिड़गिड़ाते और पनाह मांगते व डरते हुए जाओ कि कहीं तुम्हें भी वह न पहुंचे जो उन्हें मिला। ऐ लोगो ! देखो अनजाम समूद का उन्होंने नाफरमानी की अपने पैदा करने वाले की अल्लाह ने समूद को भलाई से महरूम कर दिया।

❑❑❑

ज़ेर के लिए हिन्दी में इ की मात्रा लिखते हैं जैसे : दिल और मजहूल जेर को ए की मात्रा से लिखते हैं जैसे : शहदे खालिस लेकिन मजहूल ज़ेर की आवाज़ ए की मात्रा की आवाज की आधी होती है अतः अंतर के लिए मजहूल ज़ेर को ए की मात्रा को टेढ़ी कर के लिखें : जैसे "शहदे खालिस" नज़रे करम, कुछ लोग मजहूल ज़ेर दो डैशों के बीच में ए से लिखते हैं इस प्रकार –ए– जैसे नूर–ए–हक फ़ज़्ल–ए–रब लेकिन इस तौर पर शुद्ध उच्चारण नहीं हो सकता साथ ही बन्द–ए–खुदा और बन्दे क़बा में अंतर भी नहीं हो सकता।

मुईद अशरफ़ नदवी

● पोलैण्ड उत्तरी यूरोप का एक देश है । यह देश कम्युनिस्ट शासन के अधीन रहा है। यहां की आबादी 40 मिलयन है और मुसलमानों की संख्या लगभग 50 हज़ार है। देश की राजधानी में भी मुसलमानों की आबादी पाई जाती है।

पोलैण्ड के मुसलमानों ने कम्युनिस्ट शासन की समाप्ति के बाद यहां के हालात से लाभ उठाते हुए अपने को संगठित किया और अब वह लोग अपने दीनी क्रियाकलापों को पूरी आज़ादी के साथ अदा कर रहे हैं तथा दूसरों को भी इस्लाम की दावत दे रहे हैं। यहां विभिन्न इस्लामी संगठन और आन्दोलन हैं जो इस्लामी काम को आगे बढ़ा रहे है। यहां का सबसे उत्कृष्ट इस्लामी संगठन "पोलैण्ड दीनी इत्तिहाद" है जो कि वास्तव में तातारी हैं जो देश की दो प्राचीन मस्जिदों की देखभाल कर रहे हैं। दूसरा संगठन "राबत–ए–आलमे–इस्लामी के अधीन है जो मस्जिदों में तबलीग़े–दीन (दीन के प्रचार–प्रसार) का काम करता है। उसका मुख्य कार्य नमाज़ की व्यवस्था और दीनी शिक्षा का प्रबन्ध करना है। एक तीसरा संगठन जिसको राबत–ए–इस्लामी का सहयोग प्राप्त है। यह ग़ैर मुस्लिमों मे तबलीग़ (दीने प्रचार) का काम करता है।

पोलैण्ड में अक्सरीयत (बहुसंख्यक समुदाय) कैथलिक ईसाइयों की है जो इस्लाम के विरुद्ध सक्रिय हैं। यहां के इस्लामी संगठनों के काम अलग–अलग हैं, परन्तु कुछ काम वह मिल कर करते हैं। जैसे इस्लामी मदरसों की स्थापना, मुसलमान बच्चों और बच्चियों की तालीम की निगरानी करना और ग्रेजुऐशन तक तालीम का प्रबन्ध करना।

पोलैण्ड की भाषा में एक पत्रिका भी निकलती है जिसमें दीनी समस्याओं के अतिरिक्त वर्तमान परिस्थितयों की समीक्षा भी होती है।

● ब्रिटेन से प्रकाशित होने वाली पत्रिका न्यू–साइंटिस्ट ने एक समाचार प्रकाशित किया है यह समाचार न्यूजर्सी यूनिर्वसिटी में अमरीकन तथा एशियन रिसर्च स्कालरों के अनुसंधान के अनुसार भारत–पाक के बीच ऐटमी युद्ध यदि हुई तो लगभग 30 लाख लोगों को जान से हाथ धोना पड़ेगा और लगभग 14 लाख गम्भीर रूप से घायल होंगे। इस ऐटमी युद्ध में बंगलोर, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और नई दिल्ली निशाने पर हैं जबकि पाकिस्तान में फ़ैसलाबाद, इस्लामाबाद, कराची, लाहौर और रावलपिण्डी शहर हैं।

भारत में लगभग 17 लाख लोगों की जानें जाएंगी और 9 लाख घायल होंगे जबकि पाकिस्तान में 12 लाख मारे जाएंगे और 6 लाख के घायल होने का अनुमान है।

यह नुक़्सान धमाके और आग के तुरन्त बाद होगा। इस ऐटमी युद्ध के बाद कैंसर जैसी बीमारी से मरने वालों की संख्या इसमें सम्मिलित नहीं है। उपरोक्त अनुमान ऐटम बम के हवा में फटने से लगाया गया है और यदि ज़मीन पर फटता है तो यह तबाही इससे कहीं अधिक होगी।

● ब्रिटिश समाचार पत्र टेलीग्राफ़ के अनुसार तालिबान हुकूमत के पतन के पश्चात् काबुल के शहरियों ने स्वीकार किया कि वह तालिबान शासन में सुरक्षित थे। अब अपराधों की अधिकता के कारण हर समय उनकी जान व माल का ख़तरा लगा रहता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार तालिबान की सरकार जाने के बाद मुख्यकर काबुल में अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं।

अफ़गान चीफ़ जस्टिस फ़ज़लहादी ने कहा कि नई अफ़गान हुकूमत मुल्क में अपराध की शरह (प्रतिशत) रोकने के लिए शरीअत के अनुसार सज़ा देने वाले क़ानून बाक़ी रखेगी और इसी के अनुसार सज़ा दी जाएगी।

अमरीका पर ह्यूमन राईट्स वॉच की आलोचना

● मानव अधिकार के अंतर्राष्ट्रीय संगठन 'ह्यूमन राईट्स वॉच' ने अपनी ताज़ा रिपोर्ट में कहा है कि "अमरीका के अवसरवाद की पालिसी संसार भर में नागरिक अधिकार का हनन कर रही है।" और आतंकवाद के ख़िलाफ़ जंग ने मानव अधिकार को नकारने का एक बहाना तराश लिया है। रिपोर्ट के अनुसार इस

(शेष पेज 9 पर)